

वैभव से भरपूर एक राजा

यीशु मसीहा का सुसमाचार।

Hans-Jörg Ronsdorf

वैभव से भरपूर एक राजा

यीशु मसीहा का सुसमाचार

Hans-Jörg Ronsdorf

दूसरा विस्तारित संस्करण, अगस्त 2022 (जर्मन संस्करण)

चित्रांकन: फ़्रीडेरिके त्सेश्की (Friederike Zeschky)

पाठ: Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित

Albis 6½, 87477 Sulzberg

संपर्क ई-मेल: hj-ronsdorf@t-online.de

www.hans-joerg-ronsdorf.de

जर्मन संस्करण का ISBN 978-3-9826027-7-6

संपादन: गाब्रिएले ज़िंगर (Gabriele Singer)

आवरण-सज्जा: फ़्रीडेरिके त्सेश्की (Friederike Zeschky), टोबियास श्ट्रिकर (Tobias Stricker)

उद्धृत बाइबल अनुवाद (जर्मन संस्करण के):

Elberfelder, CSV

Das Buch, Roland Werner

Die Zürcher Bibel

Die Gute Nachricht

Neue Genfer Übersetzung

हम स्वतंत्र कलीसिया के सुसमाचारवादी मसीही हैं, या जैसा लोग कहते हैं, इवैन्जेलिकल। यह नाम हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है। बहुत-सी दूसरी कलीसियाओं के साथ मिलकर हम बस मसीही हैं, जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसके पीछे चलने का प्रयत्न करते हैं।

लेखक पेंट और कोटिंग तकनीक के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। जन्म 1964 में। उनकी और उनकी पत्नी क्रिस्टीने (Christine) की 5 वयस्क संतानें हैं। वे बड़े उत्साह से बाइबल का अध्ययन करते हैं। और यह भी कि दूसरों ने उस पर क्या कुछ खोजकर लिखा है।

हम कोई विशेष रूप से अच्छे मसीही नहीं हैं, परन्तु हमारा राजा अच्छा है। हमारा सबसे उत्तम उसी का हो। बाइबल में हमारे पास उस बात का विश्वसनीय स्रोत है, जिस पर हम विश्वास करते हैं।

हम उन सब लोगों के साथ एक महान लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं, जो यीशु को परमेश्वर के पुत्र और संसार के प्रभु के रूप में, राजाओं के राजा के रूप में, दण्डवत करते हैं और उसकी सेवा करते हैं।

1 तीन शब्दों में शुभ संदेश

क्या तीन शब्द मसीही संदेश या मसीही विश्वास की सबसे महत्वपूर्ण बात को सटीक रूप से कहने या सारांश में बताने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं? हाँ, तीन शब्द शुभ संदेश का केंद्र हैं। परन्तु यह भी स्पष्ट है कि इसके बारे में और भी बहुत कुछ कहने को है। यहाँ तीन शब्द हैं, जिनमें से हर एक अपने आप में इस केंद्र का वर्णन करता है। पहले से ही मैं एक बार फिर ज़ोर देकर कहता हूँ: यह केवल हिमशैल की नोक है, परन्तु वास्तव में, शिखर भी। सुसमाचार यीशु का संदेश है। उस क्रूस पर चढ़ाए गए, जी उठे और सामर्थ्य और महिमा से मुकुट पहनाए गए मनुष्य का, जो परमेश्वर के सिंहासन पर है। सारांश में संसार के लिए संदेश यह है:

> यीशु प्रभु है!
>
> यीशु राजा है!
>
> यीशु मसीहा है!

यही सुसमाचार है, शुभ समाचार, आनंद का संदेश। जो कोई सुसमाचार की बात करता है, वह इसे सबसे महत्वपूर्ण बात के रूप में सबसे आगे रखेगा। ये तीन शब्द बात को सटीक रूप से कह देते हैं। सब कुछ इसी पर टिका है। वे संसार के इतिहास के मोड़ का और परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के केंद्र-बिंदु का वर्णन करते हैं। ये तीन शब्द मोर्चे और सत्ता के परिवर्तन की पुष्टि करते हैं: मृत्यु की शक्तियों पर विजय। आशा है। एक अच्छा भविष्य। अब उत्तर हैं। बहुत कुछ एक नए प्रकाश में दिखाई देता है। यीशु का प्रभु होना सब कुछ बदल देता है। आगे पढ़िए – और सच्चे राजा की इस कहानी में अपने आप को शामिल होने दीजिए। यीशु की कहानी और उसका महिमामय अंत, यही शुभ संदेश है। यह कि कोई एक सब पर और सब कुछ पर प्रभु बन गया है, अपने आप सबके लिए शुभ संदेश हो, यह ज़रूरी नहीं। परन्तु यह हर एक के लिए हो सकता है। क्योंकि इसी कारण यीशु की यह कहानी है। और इसी कारण यह शुभ समाचार है।

मैं यीशु मसीह को राजा क्यों कहता हूँ? नए नियम के लगभग सभी लेखक उसे यही कहते हैं, और पुराने नियम के लेखक भी पहले से। इसके साथ यह भी: मसीह का अर्थ है "अभिषिक्त"। प्राचीन काल में, यहूदी धर्म में भी, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं के अतिरिक्त विशेष रूप से राजाओं का तेल से राजा होने के लिए अभिषेक किया जाता था, जैसे हम किसी राजा के राज्याभिषेक की बात करते हैं। अभिषिक्त होने का अर्थ है किसी विशेष पद के लिए चुना जाना।

मसीहा का अर्थ वही है जो मसीह का। पहला शब्द इब्रानी भाषा से आता है, दूसरा यूनानी से। इसलिए यह उपाधि और मसीह नाम सदा यीशु के राजा होने पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उसे ऊँचा उठाते हैं। सब

पर और सब कुछ पर शासक और अधिपति के रूप में, विशेष रूप से अपनी प्रजा के लिए और उस पर, अर्थात मसीह को माननेवालों के लिए। उनके लिए यीशु प्रभु है। और राजा। क्योंकि जो परमेश्वर के राज्य का है, जो साथ ही मसीह का राज्य भी है, उसका राजा केवल वही हो सकता है।

वैसे, प्रभु यीशु मसीह के बारे में लिखे गए पाठों में भी अक्सर राजा का विषय पहचाना जा सकता है, तब भी जब उसे स्पष्ट रूप से राजा नहीं कहा गया। इसके बारे में और अधिक आगे के अध्यायों में।

सब युगों का सबसे बड़ा प्रश्न है और रहेगा: कौन हमारे बड़े प्रश्नों और समस्याओं को सँभाल सकता है – या उन्हें सुलझाने में हमारी सहायता कर सकता है? और हर एक के लिए व्यक्तिगत रूप से: किस पर भरोसा किया जा सकता है? मानवजाति के रूप में हम किस पर भरोसा कर सकते हैं? – ताकि मनुष्यों को और उनके घर, हमारे ग्रह, को बचाया जा सके?

हमारे संसार और इतिहास के बड़े लोगों में, जिन पर मनुष्यों ने भरोसा किया, अक्सर एक बात समान थी: वे सत्ता के भूखे लोग थे, षड्यंत्रकारी और भ्रष्ट, लाशों पर से गुज़र जानेवाले। उन्होंने मनुष्यों का शोषण किया, उन्हें व्यर्थ युद्धों में भेजा। वे ठाठ-बाट में रहे, जबकि प्रजा भूखी रही। कितना अच्छा होता, यदि आज के शक्तिशाली लोग इस रोग से चंगे हो गए होते।

एक लालसा है, किसी के होने की, अपने आप को किसी एक में, किसी में भी, खो देने की। बिना संकोच अपने आप को किसी दूसरे को सौंप देने की। कुछ लोग इसे गहराई से अनुभव करते हैं, दूसरे ऐसे किसी को पाने की आशा छोड़ चुके हैं। परमेश्वर हमारी लालसा का उत्तर कैसे देता है? इस प्रकार कि वह संसार को एक ऐसा व्यक्ति देता है, जिसमें अपने आप को खोया जा सकता है और खोने की अनुमति है, बिना उससे नष्ट हुए।

एक, जो अपने बारे में नहीं, बल्कि हमारे बारे में सोचता है। एक राजा, जो राजा होने के योग्य है। जो हमें और हमारी सबसे गहरी ज़रूरतों और लालसाओं को जानता है। और उनकी चिंता करता है। एक, जो सचमुच चाहता भी है और कर भी सकता है। जो मनुष्य होने को जानता है और उसका अनुभव कर चुका है। मेरा और बहुत से दूसरों का दृढ़ विश्वास है: यही एक यीशु है, जो मसीह है!

मैं आपको इस अनोखे राजा को जानने के लिए आमंत्रित करता हूँ। एक छोटी और गहन खोज-यात्रा पर साथ चलिए। कुछ क्षणों के लिए इसमें अपने आप को शामिल होने दीजिए।

क्या ही आनंद! पहाड़ों पर से विजय का दूत दौड़ा चला आता है! वह शुभ समाचार लाता है, वह शान्ति और उद्धार का प्रचार करता है, वह सिय्योन नगर से कहता है: 'तेरा परमेश्वर सारे संसार का राजा है!'

यशायाह 52:7

पढ़ने और गहराई में जाने के लिए: प्रेरितों के काम 2:33-36; 3:13-20; 4:10-12; 13:37-39; 17:30-31; दानिय्येल 2:44; जकर्याह 9:9; 14:9; मत्ती 27:11; यूहन्ना 18:37; इब्रानियों 7:1-3;

प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16; निर्गमन 40:15; 1 शमूएल 15:17; 16:3, 12-13; 2 शमूएल 2:4, 7; 5:3, 17; 12:7; भजन संहिता 89:20; 1 राजाओं 1:34, 39, 45; 5:1; 1 इतिहास 11:3; 14:8; 29:22; निर्गमन 28:41; 30:30; 40:15; लैव्यव्यवस्था 7:36; गिनती 3:3; इब्रानियों 2:14; 4:15; नीतिवचन 16:15।

2 क्या आज भी हमें एक राजा की ज़रूरत है?

विषय में प्रवेश करने से पहले, एक महत्वपूर्ण बात: मैं राजतंत्र का समर्थक या उसके लिए लड़नेवाला नहीं हूँ। अपने समय के लिए मैं लोकतंत्र को शासन का सबसे उपयुक्त रूप मानता हूँ। वह राजनीतिक शक्तियों में संतुलन बनाने में सबसे अधिक सक्षम है। मैं आभारी हूँ कि ऐसे लोकतंत्र में रहता हूँ। किसी संप्रभु एकछत्र शासक द्वारा, चाहे वह सम्राट हो, राजा हो या राष्ट्रपति, सत्ता के दुरुपयोग का खतरा राजनीतिक व्यवस्था के अनुसार बड़ा होता है। वर्तमान घटनाएँ इसे सबसे दर्दनाक रीति से स्पष्ट कर देती हैं। परन्तु जहाँ मनुष्यों के हाथ में सत्ता और प्रभाव है, वहाँ पूरी सुरक्षा कभी नहीं होगी। अनन्तकाल के इस पार शासन का कोई सिद्ध रूप नहीं है। जब तक मनुष्य सिद्ध नहीं हैं, तब तक ऐसा ही रहेगा। और शासन का हर रूप परमेश्वर की आशीष के अधीन एक आशीष हो सकता है।

फिर भी मैं एक ऐसे राजा के पक्ष में मत देता हूँ, जिसके पास सब अधिकार हों, सब प्रश्नों और विषयों में पूरा अधिकार। परन्तु केवल तब, जब उस पर भरोसा किया जा सके। जब यह निश्चित हो कि उसे न धन की ज़रूरत है, न सैनिकों की। एक राजा, जिसमें न झूठ हो, न छल। एक, जो “शुद्ध मन” का हो। बिना स्वार्थी उद्देश्यों के। एक राजा, जो योग्य हो, जो इसी पद के लिए जन्मा हो। एक राजा, जिस पर बिना किसी शर्त के भरोसा किया जा सके। ऐसे ही एक की हमें ज़रूरत है। इसी एक के बारे में बात होगी। यही शुभ समाचार है। परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार।

हाँ, हमें उसकी ज़रूरत है, इसी एक की। हमारे राजा के रूप में, हमारे प्रभु और परमेश्वर के रूप में। एक, जो हमें भाई और बहन कहता है। जो हमसे वैसा ही व्यवहार भी करता है।

प्रभु यीशु से हम सीधे बात कर सकते हैं, इसी क्षण जहाँ भी हम हैं। यह राजा हर एक की सुनता है, वह सदा और हर स्थान पर दरबार लगाए रहता है। बाइबल इस दरबार को प्रार्थना कहती है। उसके सिंहासन के निकट आना। विश्वास में, मानो यह दिखाई देनेवाली वास्तविकता हो। इस राजा का सिंहासन हमसे केवल एक कदम, केवल एक प्रार्थना की दूरी पर है – एक कदम और हम राजा से बात कर रहे होते हैं। ऊँचे स्वर में, धीमे स्वर में, मन ही मन। चुपचाप, झिझकते हुए, संदेह करते हुए। रोते हुए, चिल्लाते हुए, फुसफुसाते हुए। वह सब कुछ सुनता है। आइए, हम उसे पुकारें, सहायता के लिए, क्षमा के लिए, स्वतंत्रता के लिए! उसका हाथ बढ़ा हुआ है – आइए, हम उसे थाम लें!

यह तो बहुत कुछ पहले ही कह दिया गया। आइए, बिल्कुल आरंभ से शुरू करें।

मेरी सहायता की पुकार तुझ तक पहुँचे, हे मेरे राजा और मेरे परमेश्वर, क्योंकि मैं केवल तुझी से प्रार्थना करता हूँ!

भजन संहिता 5:2

“यह महिमा का राजा कौन है? सर्वशक्तिमान यहोवा, वही महिमा का राजा है।”

भजन संहिता 24:10

पढ़ने और गहराई में जाने के लिए: यूहन्ना 20:17; मत्ती 19:28; लूका 22:30; 2 तीमुथियुस 2:12; प्रकाशितवाक्य 5:10; 20:4; रोमियों 5:2; इफिसियों 2:18; 3:12; इब्रानियों 4:16; भजन संहिता 50:15।

3 आरंभ की ओर वापस: अदन में राजा

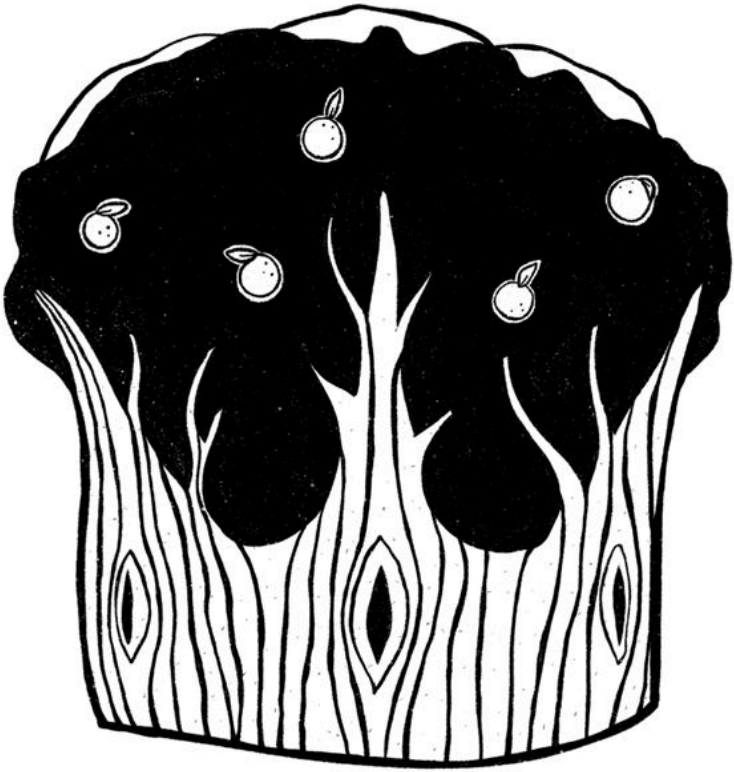
परमेश्वर हम मनुष्यों को अपने राजाओं के रूप में चाहता है। हाँ, आप ठीक पढ़ रहे हैं! हर मनुष्य, बिना किसी अपवाद के, चाहे स्त्री हो या पुरुष, एक रानी और एक राजा होना चाहिए। ठीक ऐसे ही आरंभ हुआ था। परमेश्वर ने, जो ब्रह्मांड का राजा है, मनुष्य को नर और नारी करके रचा। एक जोड़ा, जिसके पास मिलकर राजसी गरिमा थी। क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे। वे परमेश्वर के प्रतिनिधि थे। राजसी कार्यों के साथ। अदन की वाटिका और सारी पृथ्वी उनका शासन-क्षेत्र थी। इन दोनों के लिए शासन करने का अर्थ था देखभाल, सुरक्षा और खेती करना। न एक-दूसरे पर शासन करना या दूसरे मनुष्यों पर प्रभुता करना, न उनका या सृष्टि का शोषण करना।

प्राचीन पूर्व में, उस समय में, जब उत्पत्ति की पुस्तक सृष्टि के वृत्तांत के साथ लिखी गई, यह सनसनीखेज़ था। संस्कृति के विरुद्ध। युग की सोच के विरुद्ध। देवताओं के पुत्र होने का विशेषाधिकार केवल राजाओं के पास था। ऐसे लोगों के पास, जो लोकतांत्रिक रीति से नहीं, बल्कि अपने बल पर राजा बने थे। अर्थात, जो अधिक शक्तिशाली थे। और फिर यह दर्जा विरासत में दे देते थे। बाकी सब सेवक और दास थे, ऐसे मानवाधिकारों के बिना, जैसे हम उन्हें आज जानते हैं।

राजा और रानी, आदम और हव्वा, के पास – लाक्षणिक अर्थ में – एक महल था, या एक मंदिर। अदन की वाटिका उन दोनों के लिए परमेश्वर का उपहार है और उनके सब वंशजों के लिए सोची गई थी। क्योंकि स्वर्ग-सी वाटिका को सारी पृथ्वी पर फैलना था। सब मनुष्यों के लिए एक अच्छा घर बनना था।

निःसंदेह परमेश्वर सब पर राजा है। सृष्टिकर्ता और पालनहार और सब पर प्रभु के रूप में। उप-राजाओं के रूप में मनुष्य का जोड़ा अपने सृष्टिकर्ता का प्रतिबिंब था। उसके साथ और उसके स्थान पर शासन करना, यही परमेश्वर की योजना थी।

स्वर्ग की वाटिका में किसी चीज़ की कमी नहीं थी। ज़रूरत से कहीं अधिक था। परमेश्वर स्वयं नियमित रूप से मिलने आता था। जितना परमेश्वर स्वयं देखभाल करनेवाला है, उतना ही मनुष्यों को भी होना था, और वे हो भी सकते थे।



एक अचानक टूटन ने इस सुखद दृश्य का अंत कर दिया। उप-शासक अपने शासक पर अब भरोसा नहीं करते और उसकी आज्ञा नहीं मानते। वे संदेह करते हैं कि क्या उनका सृष्टिकर्ता सचमुच उनका भला चाहता है। कि क्या वह उनसे कोई अच्छी चीज़ रोक रहा है, जो उनके सुख के लिए कम है।

इसलिए वे वह चीज़ ले लेते हैं, जिसे लेने से उन्हें स्पष्ट रूप से मना किया गया था। एक आज्ञा, जो सृष्टिकर्ता और प्राणी के बीच के अंतर को चिह्नित करती है। वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का वर्जित फल खाते हैं। बुराई को मनुष्य तभी जानता है, जब वह उसे कर चुका हो। रेखा पार की जाती है, ज्ञान की प्राप्ति का महँगा मूल्य चुकाया जाता है। अब से सब कुछ बदल जाता है। अब स्वर्ग-सी वाटिका और परमेश्वर की दिखाई देनेवाली उपस्थिति सुरक्षा और शरण नहीं देती, बल्कि अस्तित्व का संघर्ष आरंभ होता है, अदन से

बाहर जीवित रहने का निरंतर संघर्ष। अब कुछ भी सुरक्षित नहीं है। प्रकृति कठोर है और मनुष्य भी कठोर हो जाते हैं।

मनुष्य की राजसी गरिमा बनी रहती है। परन्तु वह क्षतिग्रस्त है, परमेश्वर का स्वरूप बिगड़ गया है, और वह भी इतना कि मनुष्य दूसरे मनुष्यों पर शासन करने और हिंसा से सत्ता हथियाने लगते हैं। वे अपने आप को दूसरों पर राजा बना लेते हैं। सृष्टिकर्ता के स्थान पर वे मूरतें रख लेते हैं। जीवित रहने के संघर्ष में होड़ आरंभ होती है। बलवान आगे निकलता है। या जीवित रहता है। राजसी गरिमा हम मनुष्यों के द्वारा बिगाड़ दी जाती है। अक्सर वे परमेश्वर के भले आदर्श की अपेक्षा जंगली पशुओं से अधिक मिलते-जुलते हैं।

हम इसे अनुभव करते हैं और कभी-कभी किसी ऐसी चीज़ का सपना देखते हैं, जो किसी तरह वैसी हो, जैसी आरंभ में थी। स्वतंत्र, प्रेम से भरी। और न्यायपूर्ण। हम स्वीकार किए जाने और सुरक्षा की लालसा रखते हैं। हम वास्तव में उस संसार से भिन्न एक संसार के लिए रचे गए हैं, जिसमें हम अभी रहते हैं और जो हमारे कारण वैसा बन गया है, जैसा वह अब है।

परमेश्वर, जो सारे विश्व का राजा है, परमेश्वर न होता, यदि वह इसे यूँ ही स्वीकार कर लेता। वह इससे हम मनुष्यों से अधिक असंतुष्ट है। वह परमेश्वर न होता, यदि वह हमारी भलाई न खोजता। उसका हृदय हमारे लिए धड़कता है। वह हमसे प्रेम किए बिना रह ही नहीं सकता। परमेश्वर अपनी कहानी लिखता है। संसार का इतिहास परमेश्वर का उद्धार का इतिहास बन जाता है। आप और मैं, हम सब उसका भाग हैं या बन सकते हैं।

पढ़ने और गहराई में जाने के लिए: उत्पत्ति 1-4; भजन संहिता 8; याकूब 3:9; रोमियों 5:12-21; 1 तीमुथियुस 2:3-7

4 राजाओं की एक प्रजा

फिर भी: परमेश्वर सदा उपस्थित था और है। अदन के बाद और उससे बाहर भी। परन्तु अब वैसे नहीं, जैसे अदन में। छिपा हुआ और अदृश्य। वह आत्मा है। वह हर स्थान पर है। आज भी। वह हम मनुष्यों की भलाई के लिए उपस्थित है। तब भी जब हम इसे न देखें या अनुभव न करें। आखिर उसी ने सब कुछ शून्य से रचा है और उसे एक साथ थामे रखता है और जीवित रखता है। यद्यपि वह अनन्त है, सारी रची हुई वस्तुओं से बाहर, फिर भी वही है, जिसमें और जिसके द्वारा हमारा अस्तित्व है। हम उसकी सृष्टि हैं। वह सब कुछ और हर एक बारीकी को जानता है। वह हमें नहीं छोड़ता।

उस समय मनुष्य अदृश्य परमेश्वर को पुकारने लगे, प्रार्थना करने लगे। यह परमेश्वर, जो सनातन राजा है, अपने मनुष्यों की चिंता करता था। परन्तु वे, आज से बहुत भिन्न नहीं, अपने ही मार्गों पर चले। धर्म में, संस्कृति में, पारिवारिक जीवन में, राजनीति में। परमेश्वर का स्वरूप होने की राजसी गरिमा, उसके समान देखभाल करनेवाला होना, जीवन का आदर्श-वाक्य नहीं है। केवल थोड़े से लोगों के लिए है। यद्यपि एक भीतरी आवाज़ हर मनुष्य को याद दिलाती है कि कैसा होना चाहिए। यह भी कि कैसा नहीं होना चाहिए। मनुष्यों को विवेक दिया गया, अपनी और दूसरों की सुरक्षा के लिए।

आरंभ जैसे राजा हम केवल ब्रह्मांड के राजा के साथ मिलकर ही हो सकते हैं। जब वह हमारे जीवन का भाग हो। हम ऐसे ही बनाए गए हैं। परमेश्वर से दूर हमारे भीतर के खालीपन को वह भरना चाहता है। हमने उसे हर उस चीज़ से भर दिया है, जो परमेश्वर का स्थान ले लेती है। उसे मूरतों से बदल दिया है, जिनके बारे में हम सोचते हैं कि वे इस शून्य को भर सकती हैं। फिर भी: परमेश्वर एक परिवार चाहता है। एक राजसी परिवार!

जब परमेश्वर इतिहास लिखता है, तो हमें इतिहास में देखना होगा। अब्राहम एक मील का पत्थर था, एक नया आरंभ। उसके साथ परमेश्वर की कहानी अपने मनुष्यों के साथ एक नया आयाम पाती है। वह एक आशीष होगा और उसके बहुत से वंशज होंगे। उसका पुत्र इसहाक, फिर याकूब और उसके बारह पुत्र इस्राएल जाति के कुलपिता हैं। मिस्र में वे दास बन जाते हैं। एक छोटी-सी जाति बनती है। यहोवा, “मैं जो हूँ सो हूँ”, उन्हें अपनी प्रजा होने के लिए चुनता है। छुटकारे का एक निर्गमन उन्हें मिस्र की दासता से निकालकर जंगल में ले जाता है। यहाँ परमेश्वर उनके साथ एक वाचा बाँधता है: वे राजाओं और याजकों की एक प्रजा बन जाते हैं।

एक पूरी जाति के साथ एक नया आरंभ। मूसा उनका राजा, याजक और भविष्यद्वक्ता है, जो उनकी अगुवाई करता है, जो परमेश्वर के सामने उनके लिए विनती करता है और जो परमेश्वर के वचन उनसे कहता है। व्यवस्था, दस आज्ञाएँ, वाचा का भाग हैं। बाद में यह केवल पुरानी वाचा कहलाएगी। आरंभ की तरह अब

भी एक टूटन होती है। परमेश्वर की प्रजा अपने लिए एक दिखाई देनेवाला देवता बना लेती है, एक सोने का बछड़ा। सुखद दृश्य भंग हो जाता है। परमेश्वर की प्रजा में अपराध और पाप क्षतिपूर्ति और क्षमा की माँग करते हैं। बलिदान की एक सेवा स्थापित की जाती है।

राजाओं और याजकों के रूप में और एक चुनी हुई जाति के रूप में वे संसार की जातियों के लिए आदर्श थे और इस प्रकार मार्गदर्शक थे, या हो सकते थे। वही थे, जो जीवित सृष्टिकर्ता परमेश्वर की सेवा करते थे, उसे जानते थे और जिन्हें उसके स्वभाव और उसकी वास्तविकता को प्रकट करना था, जब वे याजकों के रूप में उसकी उपस्थिति में रहते थे, जैसे कभी आदम और हव्वा अदन में रहते थे।

उनकी कहानी आगे बढ़ती है, जैसे हमारी भी। वे कनान देश में बस जाते हैं। उन्हें विश्राम पाने में वर्षों लग जाते हैं।

फिर कुछ समय बाद कहा जाता है: हर एक वही करता था, जो उसकी अपनी दृष्टि में ठीक था। क्योंकि देश में कोई राजा नहीं था।

और यदि कोई राजा हो भी, या उसका कोई राजा हो, और सारी प्रजा राजाओं और याजकों से बनी हो, तब भी यह अपने आप वैसा नहीं होता, जैसा परमेश्वर ने सोचा था। जैसे आरंभ में परमेश्वर का स्वरूप पाप के कारण क्षतिग्रस्त होता है, वैसे ही तब भी, जब राजा और याजक पाप करते हैं। हम इसे जानते हैं, जब राजा और रानियाँ अपनी भूमिका और गरिमा के योग्य नहीं ठहरते। कुछ होना, कोई उपाधि रखना, एक बात है। हम मनुष्यों के साथ यह कठिन है। हमारे भीतर एक प्रकार का गुरुत्वाकर्षण काम करता है, जिसे पाप कहते हैं। हम केवल उसके वश में ही नहीं हैं, अक्सर हम उसके साथी भी हैं। हमें सहायता की ज़रूरत है। उद्धार और छुटकारे की।

भजन संहिता 139; इब्रानियों 1:3; प्रेरितों के काम 17:27-29; उत्पत्ति 4:26; भजन संहिता 10:16; 24:8; 29:10; यशायाह 6:1; उत्पत्ति 12:2; निर्गमन 12; 19:6; 20।

5 परमेश्वर के मन के अनुसार एक राजा

बाइबल के इतिहास-लेखन में अलग-अलग अगुवों के पास लगभग राजसी कार्य थे। जैसे अब्राहम, मूसा, उसका उत्तराधिकारी यहोशू या भविष्यद्वक्ता शमूएल। परन्तु दाऊद के उदय के साथ हम मानवीय राजा के मूल आदर्श तक पहुँचते हैं। और इस प्रकार वह आनेवाले राजा का, जो इस पुस्तक का विषय है, आदर्श और मूलपिता भी बन जाता है।

अपनी कमज़ोरियों और भूलों के बावजूद दाऊद को परमेश्वर के मन के अनुसार एक मनुष्य बताया गया है। वह प्रतिज्ञा किए गए मसीहा का आदर्श बन जाता है। जब यह भविष्यद्वाणी का दर्शन खुलता है, तो स्पष्ट हो जाता है कि आनेवाला राजा केवल दाऊद का एक और पुत्र नहीं होगा। वह एक महान दाऊद होगा, हाँ, दाऊद का प्रभु। यह एक न सुलझनेवाली पहेली-सा लगता है। राजा यीशु में यह पहेली सुलझ जाती है।

यह नया दाऊद मसीहा की आशा का सार बन जाता है। वह मसीहाई उद्धार-काल का प्रतीक है, जो छुटकारा लाता है। जो इस्राएल के बँटे हुए उत्तरी और दक्षिणी राज्य को फिर से एक राज्य में जोड़ता और पुराने दिनों को फिर से जीवित कर देता। ऐसी ही थीं अपेक्षाएँ। पूरा कुछ अलग ढंग से होना था। इसलिए नहीं कि भविष्यद्वाणियाँ गलत थीं, बल्कि इसलिए कि उनकी व्याख्या ठीक से नहीं की गई।

दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार एक मनुष्य है। परमेश्वर ने उसे अपने हृदय में बसा लिया। इसलिए नहीं कि वह त्रुटिहीन या पापरहित था। इसके विपरीत। उसके जीवन में बहुत कुछ बिगड़ता है। वह व्यभिचारी और हत्यारा बन जाता है, एक बहुत बुरा पिता है। परमेश्वर के सामने उसका विशेष स्थान क्यों था? रहस्य यह है: दाऊद सब कुछ के बावजूद परमेश्वर की लालसा रखता था। अपनी हारों और अपनी असफलताओं के बीच वह परमेश्वर को खोजता रहा! बार-बार। अपने जीवन के अंत में वह टूट चुका था। जो कुछ परमेश्वर चाहता था, उस सब में उसने अपने आप को अधीन कर दिया। उसने भारी पाप किया था और उसे उसके परिणामों का कड़वा स्वाद चखना पड़ा। उसका जीवन कितना ही टूटा-फूटा क्यों न था, उसने परमेश्वर के अनुग्रह और भलाई का अनुभव किया था। और वह एक वाचा पर भरोसा कर सकता था, दाऊद की वाचा पर, जो एक नए दाऊद के साथ एक अनन्त राज्य की गारंटी देती थी।

दाऊद की कहानी सब असफल लोगों को साहस देती है! और हम इस कहानी का भाग बन जाते हैं। आनेवाला मसीहा-राजा इस्राएल की सीमाओं को तोड़ देगा। मसीहा का आनेवाला राज्य सारी पृथ्वी को भर देगा।

वह कौन होगा, जो एक दिन दाऊद के सिंहासन पर अनन्त राज्य करेगा? वह कौन होगा, वह DAVIDUS REX, दाऊदवंशी राजा? और यह कब होगा?

1 शमूएल 16:13; दाऊद की कहानी 1 और 2 शमूएल में और इतिहास की पुस्तकों में मिलती है। मत्ती 22:42-45।

6 राजा की प्रतीक्षा: भविष्यद्वाणियाँ

कल्पना कीजिए, आप एक छोटी-सी जाति के सदस्य हैं, जिसका इतिहास उथल-पुथल से भरा रहा है और जो कठिनाइयों के बीच फँसी है। इस जाति के पवित्र शास्त्र बहुत-सी प्रतिज्ञाएँ सँजोए हुए हैं कि एक राजा आएगा। एक, जिसकी कोई बराबरी नहीं, जिसके पास वह सब है, जिसका लोग सपना देखते हैं, और उससे भी अधिक। ये शास्त्र, जो एक लंबे समय में लिखे और संकलित किए गए, बार-बार इसकी बात करते हैं। इस्राएल जाति की आशा मसीहा है। इस राजा की प्रतीक्षा एक छोटी-सी जाति की धड़कन है। वही उसे जीवित रखती है। एक सच्ची, जीवित आशा।

मसीहा की प्रतीक्षा में एक बात की कमी है: कोई ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि वह कब आएगा। और न कोई यह कि वह कैसे आएगा। अक्सर सामर्थ्य और महिमा की बात होती है। परन्तु दुःख, मृत्यु और भय की भी। यह कैसे पूरा होगा? और क्या दोनों एक साथ सच हो सकते हैं? इब्रानी बाइबल के पाठों ने अलग-अलग अपेक्षाएँ जगाईं। इस पर लोग एकमत नहीं थे, परन्तु इस पर एकमत थे कि वह आएगा।

यीशु के जन्म के दिनों में मसीहा की प्रतीक्षा मानो हाथ बढ़ाकर छू लेने जितनी निकट है। उन थोड़े लोगों के लिए, जिन्हें सीधे भेद बताया जाता है, जो बालक और माता को देखते हैं, उनके लिए एक बड़ा दिन आ गया है।

इस मसीहा-राजा से जुड़ी अपेक्षाएँ इससे बड़ी नहीं हो सकती थीं। इस्राएल, या उसका जो कुछ बचा है, रोमी साम्राज्य का भाग है। यरूशलेम नहीं, बल्कि रोम संसार की राजधानी है। मसीहा इसे बदल देगा और सब कुछ उलट देगा। सत्ता के प्रश्न का उत्तर वह इस्राएल के पक्ष में देगा।

परन्तु क्या अब भी किसी मसीहा की, किसी सच्चे उद्धार-राजा की आशा की जा सकती थी? इसके पक्ष में क्या था? भविष्यद्वाणियाँ, अर्थात पहले से कही गई बातें, इस जाति के इतिहास में कई बार पूरी हो चुकी थीं। और अब? आखिर बात सबसे बड़ी बात की थी। और फिर से यह प्रकट होना था कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। जो वह प्रतिज्ञा करता है, उसे वह पूरा करता है।

हम एक बड़ी छलाँग लगाकर सीधे उन दिनों में पहुँचते हैं, जब पहले से कही गई सब बातें पूरी होती हैं।

परन्तु हे बैतलहम एप्राता, जो यहूदा के नगरों में छोटा है, प्रभु तुझसे कहता है: तुझ में से मेरी प्रजा इस्राएल का भावी शासक निकलेगा। उसका मूल प्राचीन काल से, अनादि दिनों से है।

मीका 5:2

कुछ भविष्यद्वाणियाँ: उत्पत्ति 49:10; गिनती 24:17; यशायाह 7:14; 9:7; 11:1; 40:3-5, 11; 53; यिर्मयाह 23:5-6; मीका 5:2; होशे 11:1; मलाकी 3:1; भजन संहिता 118:22; जकर्याह 9:9;

12:10; 13:7; भजन संहिता 2; 16:10; 30:3; 110:1 और बहुत सी दूसरी।

7 सम्राट औगुस्तुस का सुसमाचार

सुसमाचार शब्द मसीही लगता है। परन्तु वह सदा ऐसा नहीं रहा। वह कलीसिया का आविष्कार नहीं है। वह किसी भी प्रकार या किसी भी विषय के शुभ समाचार के लिए एक प्रचलित शब्द था। विशेष रूप से रोमी सम्राट-पूजा इस शब्द का प्रयोग सम्राट के बारे में, उसके जन्म और उसके असाधारण गुणों के बारे में एक शुभ संदेश के रूप में करती है, जो साम्राज्य और उसके लोगों के लिए आशीष हैं। प्रियेने (Priene) का प्रसिद्ध शिलालेख यही कहता है। सम्राट औगुस्तुस (Augustus) का जन्म हुआ है। यह सुसमाचार इतिहास के पहले और सबसे महान रोमी सम्राट के बारे में आनंद के संदेश के रूप में रोमी साम्राज्य में फैलता है:

> “इस दिन ने सारे संसार को एक नया रूप दे दिया है; वह विनाश के हवाले हो जाता, यदि अभी जन्मे इस व्यक्ति में सब मनुष्यों के लिए एक साझा सौभाग्य न चमक उठा होता। वह ठीक निर्णय करता है, जो इस जन्मदिन में अपने लिए जीवन का और जीवन की सब शक्तियों का आरंभ पहचानता है; अब आखिरकार वह समय बीत गया, जब मनुष्य को जन्म लेने पर पछताना पड़ता था। किसी और दिन से न व्यक्ति को और न समाज को इतनी भलाई मिलती है, जितनी इस जन्मदिन से, जो सबके लिए एक समान सौभाग्यशाली है। विधाता, जो जीवन में सब कुछ पर शासन करता है, ने इस पुरुष को मनुष्यों के कल्याण के लिए ऐसे वरदानों से भर दिया है कि उसने उसे हमारे लिए और आनेवाली पीढ़ियों के लिए उद्धारकर्ता बनाकर भेजा है; वह हर झगड़े का अंत कर देगा और सब कुछ महिमामय बना देगा। उसके प्रकट होने में पूर्वजों की आशाएँ पूरी हो गई हैं; उसने न केवल मानवजाति के सब पिछले उपकारकों को पीछे छोड़ दिया है, बल्कि यह भी असंभव है कि कभी कोई उससे बड़ा आए। देवता के जन्मदिन ने संसार के लिए उससे जुड़े आनंद के समाचार [सुसमाचार] ला दिए हैं। उसके जन्म से एक नई कालगणना आरंभ होनी चाहिए।”

इस प्रकार के पाठों को ध्यान में रखना होगा, यदि कोई समझना चाहता है कि एक प्राचीन पाठक ने एक और साहित्यिक रचना के शीर्षक को कैसे समझा: मरकुस का सुसमाचार अपने आप को सुसमाचार कहता है। मरकुस यीशु और उसके जीवन को सम्राट के बराबर रखता है। वह अपने सुसमाचार के पाठकों और श्रोताओं को चुनाव के सामने खड़ा करता है।

जो औगुस्तुस पर लागू होना था, वह यीशु और उसके राज्य पर भी लागू हुआ। केवल सुसमाचार शब्द ही सम्राट-पूजा से प्रभावित नहीं था। यही बात सब मसीही उपाधियों में सबसे महत्वपूर्ण उपाधि “प्रभु” (यूनानी: kyrios) पर भी समान रूप से लागू होती है और अंत में “परमेश्वर का पुत्र” शब्द पर भी।

यहूदियों की मसीहा की आशा एक ऐसे शासक को आते देखती है, जो सबसे और सब कुछ से बढ़कर है। नासरत का यीशु सब भविष्यद्वाणियों और अपेक्षाओं की पूर्ति है।

जो कुछ औगुस्तुस के द्वारा और उसके बारे में कहा जाता है, वह कोई नश्वर मनुष्य कभी पूरा नहीं कर सकता। इसलिए उसे एक देवता कहा जाता है, या परमेश्वर का पुत्र भी। फिर भी वह बाकी सब की तरह मर गया। परन्तु अब एक आता है, जो वह भी मरेगा। परन्तु इसलिए नहीं कि उसे मरना ही है। वह स्वेच्छा से मरता है। दूसरों के लिए। और वह परमेश्वर है। बिना आरंभ के – औगुस्तुस से भिन्न। वह अपनी मृत्यु के द्वारा मृत्यु को पराजित करेगा, मनुष्यों के सबसे बड़े शत्रु को। और उसके कारण को संसार से मिटा देगा: पाप को।

मरकुस 1:1; यूहन्ना 10:18; इब्रानियों 2:9-14; यूहन्ना 1:29।

8 मसीहा-राजा का जन्म

हर जन्म एक आश्चर्यकर्म है। पाँच बार मुझे ऐसी घटना को अपनी आँखों से देखने का सौभाग्य मिला। जन्म देनेवाली का कष्ट और आनंद पल-पल में बदलते रहते हैं। प्राचीन काल में अक्सर जन्म माता और बच्चे के लिए अच्छे नहीं रहते थे।

इस राजा का जन्म भी एक आश्चर्यकर्म है। शायद सबसे बड़ा, जो हमारे ग्रह ने कभी देखा है। जो यहाँ होता है, कि परमेश्वर मनुष्य बनता है, वह हमारी समझ से कहीं बढ़कर है। जैसे परमेश्वर स्वयं, जो पूरी तरह भिन्न और समझ से परे है। परमेश्वर स्वयं अपने आप को छोटा बना लेता है। लगभग 3500 ग्राम तक सिमट जाता है। जबकि परमेश्वर का पुत्र स्वयं ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता और राजा है।

यह राजा हमारे संसार में कैसे आए? परमेश्वर कई बार प्रकट हुआ था। जलती हुई झाड़ी में, सीनै पर्वत पर भय उत्पन्न करते हुए, कई बार यहोवा के दूत के रूप में। परन्तु वे केवल “छोटी-छोटी मुलाकातें” थीं। अब परमेश्वर का समय आ गया है, जिसकी उसने सदा से ठान रखी थी: वह मनुष्यों के बीच निवास करना और रहना चाहता है।

परमेश्वर मनुष्य बनता है। फिर से केवल तीन शब्द, जो बात को सटीक रूप से कह देते हैं। परमेश्वर परमेश्वर ही रहता है, जब वह मनुष्य बनता है। परन्तु वह उसे पीछे छोड़ देता है, जिससे परमेश्वरत्व बनता है, जहाँ तक हम नश्वर लोग इसे समझ सकते हैं: स्वर्गीय सिंहासन, सर्वशक्ति, प्रभुता। वह उसे किसी ऐसी चीज़ की तरह पकड़े नहीं रहता, जिसे उसने छीना हो या जिससे लिपटे रहना हो।

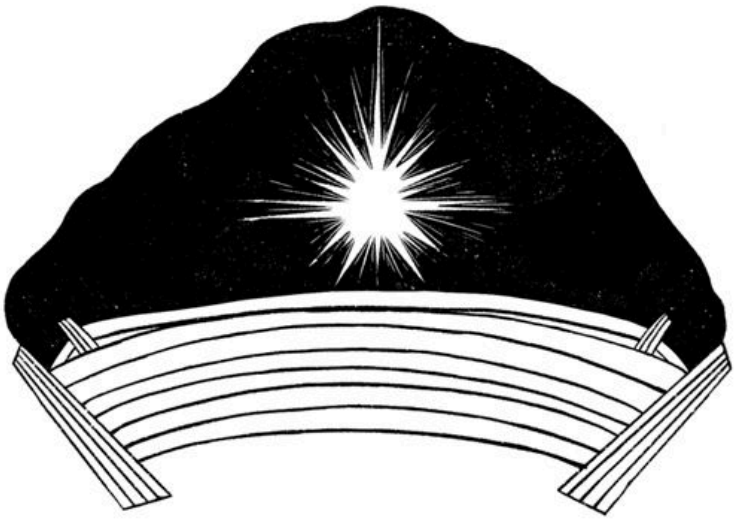
समय परमेश्वर के विधान में दृढ़ता से ठहराया गया है। यह समय की पूर्णता थी। परमेश्वर की दृष्टि में सबसे उत्तम समय। सांसारिक दृष्टि से महत्वहीन। उस समय का संसार इस पर ध्यान नहीं देता। सम्राट औगुस्तुस – उसके सुसमाचार के बारे में हमने सुना – अपने साम्राज्य के निवासियों की गिनती करवाता है और उनके नाम लिखवाता है। इसके लिए लोगों को अपने पैतृक नगर जाना पड़ता है। पूरे दिनों की गर्भवती मरियम की अपने पति यूसुफ के साथ नासरत से बैतलहम तक सौ किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्रा के बाद सब घर भरे हुए हैं। सितंबर का महीना है। युवा जोड़े, यूसुफ और मरियम, के लिए रिश्तेदारों के यहाँ ऊपरी कमरे में, जो एक इस्राएली घर का रहने का भाग होता था, अब कोई जगह नहीं है। फिर भी उन्हें रिश्तेदारों के यहाँ ठिकाना मिल जाता है। परन्तु निचली मंज़िल में, जहाँ रात के लिए पशुओं को भीतर लाया जाता है। घर पहले से ही भरा है। प्रसव के समय पुरुषों को बाहर भेज दिया जाता है। जन्म तुरन्त होता है और सकुशल होता है। फिर वे पहलौठे को एक चरनी में लिटा देते हैं। एक व्यावहारिक हल। बच्चा वहाँ अच्छी तरह सोता है। जन्म के लिए एक कामचलाऊ स्थान। परन्तु उस समय के लिए और साधारण से साधारण परिस्थितियों के इस सीधे-सादे जोड़े के लिए असामान्य नहीं। बल्कि सामान्य।

यीशु केवल धनी और प्रसिद्ध लोगों के लिए नहीं आया। केवल प्रतिष्ठित और कुलीन लोगों के लिए नहीं। वह उनके लिए आया, जो कोई नहीं हैं। वह उन मनुष्यों के लिए आया, जिनके बारे में दूसरे कभी दूसरी बार सोचते भी नहीं। साधारण लोग। जो दिखाई नहीं देते और जिन पर किसी का ध्यान नहीं जाता। भुलाए हुए और अनदेखे लोग। यह उसके जन्म के ढंग में ही झलकता है। ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता सबसे साधारण परिस्थितियों में जन्मा। परमेश्वर ने कुछ इतना असाधारण किया कि 2000 वर्ष बाद हम उसके महत्व के पूरे भार को मुश्किल से समझ पाते हैं: परमेश्वर अनन्तता को साधारण में लिख देता है।

और इसका अर्थ है कि शायद परमेश्वर यीशु के द्वारा आपके साधारण, उबाऊ, रोज़मर्रा के, अर्थहीन जीवन के बीच एक अनन्त काल तक असाधारण कहानी लिख सकता है।

एक राजा, जो इस प्रकार जीवन में आता है, एक असहाय शिशु के रूप में, जो अपने आप को एक युवा जोड़े को सौंप देता है, वह एक चिह्न देता है। वह आरंभ से ही दिखाता है कि वह कैसा है।

यह एक ब्रह्मांडीय घटना है: पार्थियों के साम्राज्य से, जो पहले बेबीलोन का क्षेत्र था, विद्वान आते हैं, खगोलशास्त्री, और एक तारे के पीछे चलते हैं। जो उन्हें ठीक जन्म-स्थान तक ले जाता है। शायद बेबीलोन के यहूदियों ने अपने शास्त्रों के द्वारा उन्हें यह समझने में सहायता की थी कि क्या हो रहा है। अत्यंत विचित्र साथ-साथ होनेवाली घटनाएँ। वे जन्म के एक दिन बाद बैतलहम नहीं पहुँचे। महीनों बाद ही। वे स्थान और बालक को पा लेते हैं। वे बहुमूल्य उपहारों से इस बालक का आदर करते हैं। वास्तव में उन्होंने उस छोटे बालक को दण्डवत किया, जैसे परमेश्वर को दण्डवत किया जाता है। सबसे पहले पार्थी लोग, न कि यहूदी, यहूदियों के राजा को दण्डवत करते हैं।



इसके साथ कुँवारी से जन्म का बहुचर्चित विषय भी है। यीशु का कोई पुरुष जन्मदाता नहीं था। यूसुफ नहीं था। इसने यूसुफ और मरियम को आपस में ऐसी कठिनाइयों में डाल दिया, जिनके लिए शायद ही कोई उनसे ईर्ष्या करेगा। स्वर्ग सब कुछ करता है, ताकि यूसुफ समझे कि यहाँ क्या हो रहा है। उसे यह विश्वास दिलाने में सफलता मिलती है कि सब कुछ ठीक है।

गैर-मसीही भी और मसीही भी कुँवारी से जन्म को एक रूपक या कथा मानते हैं। मैं नहीं। कुँवारी से जन्म में बात मरियम की जैविक-शारीरिक बनावट की नहीं है। आश्चर्यकर्म परमेश्वर का अलौकिक सृजन-कार्य है। पवित्र आत्मा ने मरियम का गर्भ ठहराया। यीशु का "गर्भ में आना", देहधारण, पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ, परमप्रधान की सामर्थ्य के द्वारा। जो उत्पन्न हुआ और गर्भ में आया, वह परमेश्वर का पुत्र था। वह यही है, मनुष्य के रूप में और साथ ही परमेश्वर के रूप में। एक भेद। ऐसा ही होना था, ताकि वह पवित्र हो। बिना पाप के। ताकि हमें हमारे पापों से बचाए।

महत्वपूर्ण यह है: राजा हमारे जीवन में जन्म लेना चाहता है। सबसे साधारण ठिकाना उसके लिए पर्याप्त है। उसे महल की ज़रूरत नहीं। हमारा जीवन, अपने सारे कबाड़ के साथ, इस योग्य नहीं कि राजा उसमें आए। और फिर भी वह आता है, क्योंकि वह हमें चाहता है। फिर भी वह आता है, जब हम उसे भीतर आने देते हैं।

मैंने यह पाठ क्रिसमस के समय में लिखा। मेरे सबसे प्रिय गीत की यह टेक है, इससे अच्छी मैं कोई नहीं जानता:

आओ, हम दण्डवत करें

राजा को।

महिमा का राजा

सेनाओं का शासक

Adeste fideles, फ़्रीड्रिख़ हाइनरिख़ रांके (Friedrich Heinrich Ranke)

और यदि मसीह हज़ार बार बैतलहम में जन्म लेता, और तुझ में नहीं: तो तू फिर भी सारी अनन्तता के लिए खोया हुआ ही रहता।

आंगेलुस सिलेसियुस (Angelus Silesius)

यूहन्ना 1:1-2, 14; निर्गमन 3:1-6; 19:16-25; प्रकाशितवाक्य 21:1-3; फिलिप्पियों 2:5-10; गलातियों 4:4; लूका 2:1-7; मत्ती 2:1-18; लूका 1:35; भजन संहिता 2; यूहन्ना 3।

9 राजा का मूल और उसका भेजा जाना

लंबे समय से इस्राएल ने, या उसका जो कुछ बचा था, कोई राजा नहीं देखा था। जो अब राजा था, वह एक एदोमी था, हेरोदेस। इस छोटे-से देश में, जो रोम के प्रशासन के अधीन था, कुछ भी वैसा नहीं था, जैसा होना चाहिए था। इस्राएल के सच्चे राजा को वंशावली के द्वारा दाऊद का वंशज सिद्ध होना था। इसमें कोई बाधा नहीं थी, यीशु यहूदा के गोत्र का वंशज था, दाऊद के घराने का वंशज।

यीशु अपने जन्म से पहले विद्यमान था। उसका जन्म बौद्ध धर्म के अर्थ में कोई पुनर्जन्म नहीं था। वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में विद्यमान था, बिना आरंभ के, बिना जन्म के। वह अनन्त है। उसी के द्वारा ब्रह्मांड रचा गया। पृथ्वी और मनुष्य।

पुत्र इस्राएल के पास भेजा गया था, परमेश्वर की अपनी प्रजा के पास। वह इस जाति की लालसा था, जो अपने मसीहा की प्रतीक्षा कर रही थी। भविष्यद्वक्ताओं ने ऐसा ही कहा था। और ऐसा ही हुआ। लंबे समय तक यह छिपा रहता है कि यीशु, दाऊद का पुत्र, साथ ही परमेश्वर का अनन्त पुत्र है। मसीहा इस्राएल के इतिहास और उसकी भविष्यद्वाणियों को पूरा करता है। हम, यूरोप के लोग और संसार की जातियाँ, यहाँ पहले तो केवल दर्शक हैं। यीशु उन बहुत से भविष्यद्वक्ताओं में से एक है, जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपनी प्रजा से बात की। वह भविष्यद्वक्ताओं की लंबी पंक्ति में अंतिम है, निर्णायक और सबसे महान। परमेश्वर स्वयं बोलता है, क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

यीशु एक बुलाहट के साथ आता है। वह एक कार्य-भार के साथ संसार में आता है। वह मसीहा होगा, इस्राएल का राजा। वह प्रजा को उसके पापों से छुड़ाने आता है। रोमियों से नहीं।

अपने पुत्र को भेजकर परमेश्वर यीशु को मसीहा ठहराता है, “अभिषिक्त राजा”। यीशु मसीह में परमेश्वर ने अपना राज्य, परमेश्वर का राजशासन, आरंभ किया और स्थापित किया; अपने राज्य में यीशु शासन करता है – राजा। हम इसे एक बार फिर दोहराते हैं: राजा और राजशासन का विचार मूल सृष्टि से जुड़ा है। परमेश्वर चाहता था कि उसके स्वरूप, आदम और हव्वा, इस संसार में शासन करें। वे इस भूमिका में वैसे ही असफल हुए, जैसे बाद में बहुत से राजा। इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, ताकि वह शासन करे। सदा के लिए। वैसे ही, जैसे परमेश्वर ने शासन करने की कल्पना सदा से की थी।

उनके राजा, मसीहा और प्रभु के रूप में पुत्र अब कलीसिया को कार्य सौंपता है, जिसका अर्थ है सब मसीही, चाहे वे किसी भी संप्रदाय के हों। वह संसार के सामने इस बात की गवाही देने के लिए बुलाई गई है: कि यीशु सच्चा और फिर आनेवाला राजा है और कि केवल उसी में उद्धार है। कलीसिया परमेश्वर की प्रजा के रूप में इस राज्य को – परमेश्वर के शासन को – साकार करने के लिए बुलाई गई है। उसके द्वारा परमेश्वर का शासन दिखाई देता है।

सम्राट नहीं, बल्कि यीशु परमेश्वर का सच्चा पुत्र है। वह एक ऐसे राजघराने से आता है, जो रोम से कहीं अधिक पुराना है। वह राजा दाऊद के घराने से आता है। उससे एक उत्तराधिकारी की प्रतिज्ञा की गई थी, जो सदा दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा। वह दाऊद का पुत्र सुलैमान नहीं था। वह दाऊद की वंशावली से आया यीशु है। इसलिए वह भी दाऊद का पुत्र है। यही शर्त है, यदि परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सच होना है। वह सच हुई: यीशु में प्रतिज्ञा पूरी हुई।

इस संदेश की घोषणा परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने पहले ही कर दी थी, और उन्होंने इसे पवित्र पुस्तकों में लिख दिया।

यह संदेश उसके बारे में है, परमेश्वर के पुत्र के बारे में। मानवीय स्तर पर वह राजा दाऊद का वंशज है।

और साथ ही वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में ठहराया गया है। यह परमेश्वर के आत्मा के सामर्थी कार्य के द्वारा हुआ, जो परमेश्वर की पवित्र वास्तविकता को प्रकट करता है, और यीशु मसीहा, हमारे प्रभु, के पुनरुत्थान के द्वारा दिखाई देता है।

रोमियों 1:2-4

मत्ती 1:1-17; 2:1-15; लूका 23:8-15; यूहन्ना 1:1-3; कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1; 10:5; यूहन्ना 12:27; 2 शमूएल 7:12-16; रोमियों 1:1-7।

10 राजा का जीवन

राजा की तरह जीना, “फ़्रांस में परमेश्वर” की तरह (जर्मन में wie Gott in Frankreich)! एक कहावत, जो उस राजा पर लागू नहीं होती, जो यहाँ हमारे ध्यान के केंद्र में है। जैसे वह जीवन में आया, गरीब परिस्थितियों में, बिना राजसी सम्मान के, वैसे ही उसने अपना जीवन जिया। एक छोटा-सा जीवन, कठोर परिश्रम और त्याग के 33 वर्ष।

क्या ऐसे जीवन को इस अध्याय में लगभग 700 शब्दों में समेटा जा सकता है? निश्चित रूप से नहीं। ये केवल कुछ विचारों के टुकड़े हैं, जो उसके राजसी जीवन को झलका देते हैं। इसके साथ वह प्रश्न, जिसे हम मन में रखे रहते हैं: क्या हो, यदि हमारे जीवन को 700 शब्दों में समेटा जाए? क्या बचेगा? क्या दो-तीन पीढ़ियों के बाद कोई हमें याद रखेगा? मुझे तो यह भी पता न होता कि मेरे परदादा का नाम क्या है, यदि मैं पूछताछ न करता।

यीशु की बात आते ही बहुत लोग अक्सर केवल चरनी और क्रूस के बारे में सोचते हैं। परन्तु बीच का समय भी उतना ही महत्वपूर्ण होना चाहिए। नहीं तो वह होता ही नहीं। राजा का जीवन उतना ही महत्वपूर्ण है, जितनी उसकी मृत्यु। यह जीवन इतना अनोखा और इतना बहुमूल्य है, इतना शुद्ध और भला है कि यीशु की मृत्यु अवर्णनीय रूप से दुःखद है। ऐसे निर्दोष जीवन का ऐसा अंत कैसे हो सका?

यीशु का मिशन है अपनी प्रजा इस्राएल को और सब मनुष्यों को उनके पापों से छुड़ाना। परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना। उसके आगमन के साथ इसका आरंभ हो चुका था। राजा आ गया था। और उसके साथ छुटकारे का सामर्थ्य। रोमियों से नहीं, जो इस्राएल पर कब्ज़ा किए हुए थे। नहीं। उन बुरी शक्तियों से छुटकारा, जो मनुष्यों को दास बनाती हैं। ये अदृश्य शक्तियाँ रोमी कब्ज़ा करनेवाली सत्ता से अधिक विनाशकारी थीं और हैं। उन असाध्य रोगों से भी छुटकारा, जो मनुष्यों को सताते हैं और उन्हें सामाजिक जीवन से बाहर कर देते हैं। कपटी पवित्रता से भी छुटकारा, व्यवस्थावादी, पाखंडी भक्ति से। बिना प्रेम और जीवन के शास्त्र-ज्ञान से। गलत अपेक्षाओं से छुटकारा। स्वार्थ से। अविश्वास से। और कम से कम नहीं, हम स्वयं से।

यह सब सच्चे राजा के जीवन की पहचान है। एक बार ऐसा हुआ कि यहूदी उसे राजा बनाना चाहते थे। परन्तु यीशु हट गया। वह मनुष्यों के हृदयों और उनके उद्देश्यों को जानता था। उसके राज्य के लिए नए किए गए हृदयों की ज़रूरत है। ऐसे हृदय, जिनमें यीशु की धड़कन हो। जो सेवा करने और सबसे नीचा मार्ग अपनाने के लिए तैयार हों।

मसीह का पार्थिव जीवन उसके तीसवें वर्ष तक अधिकतर छिपा रहता है। अपने भाइयों के साथ एक साधारण, परिश्रम भरा मज़दूर का जीवन। एक निर्माण-कारीगर के रूप में। यहाँ यीशु केवल कारीगरी ही

नहीं सीखता। वह आज्ञाकारिता सीखता है, जिसे वह उस देश में नहीं जानता था, जहाँ से वह आया था। स्वर्ग में पिता, पुत्र और आत्मा, त्रिएक परमेश्वर, प्रेम और आनंद की अनन्त एकता में जुड़े थे। पृथ्वी पर यीशु, पुत्र, ने अपने आप को एक कठोर जीवन में दे दिया। कौन जानता है, उसने कब निर्माण-कार्य में काम करना आरंभ किया? वह पहलौठा था। यूसुफ के बारे में, जो मरियम का पति था, हम आगे कुछ नहीं सुनते। शायद यीशु ने परिवार की ज़िम्मेदारी सँभाल ली।

30 वर्ष की आयु में यीशु ने यह जीवन पीछे छोड़ दिया। यरदन नदी पर वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से, उससे जिसने उसका मार्ग तैयार किया था, बपतिस्मा लेता है। फिर उसकी सार्वजनिक सेवा आरंभ होती है। उसका मसीहाई मिशन। यह सब चार जीवन-वृत्तांतों या जीवनियों में लिखा हुआ है। मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। इन सुसमाचारों को, जैसा इन चार वृत्तांतों को कहा जाता है, पढ़ना सार्थक है। बार-बार। मिलकर वे मसीहा-राजा का सुसमाचार हैं।

उसका जीवन एक संदेश है। उसका उपदेश, उसके वचन इतने सामर्थ्य से भरे, सच्चे, जीवन के निकट और बुद्धिमानी के हैं कि लोग आश्चर्य के मारे मुश्किल से कुछ कह पाते हैं। लंगड़ों को वह चंगा करता है। अंधों को वह दृष्टि देता है। मरे हुए जिलाए जाते हैं। दुष्टात्माएँ भागती हैं। राजा निकलता है और देश को जीत लेता है। किसी युद्ध-सरदार से भिन्न। उसकी बुद्धि और उसकी सच्चाई अप्रतिरोध्य हैं। उसके प्रेम की सामर्थ्य मनुष्यों के हृदयों को जीत लेती है। आज तक।

वह हम में से एक है और फिर भी पूरी तरह भिन्न। विलासिता के बिना जीवन। त्याग से भरा। बिना अपने घर के। धार्मिक अगुवों और फरीसियों के द्वारा लगातार संदेह और विरोध का सामना करता हुआ। बहुत से लोग उसके पीछे चलते हैं। अलग-अलग उद्देश्यों से। उसने बहुत से लोगों को उस रोटी से तृप्त किया, जिसे उसने आश्चर्यजनक रूप से बढ़ाया। परन्तु उसके लिए बात सदा हृदयों की थी, जीवन की सबसे भीतरी दिशा की, जिसकी परमेश्वर को लक्ष्य के रूप में इतनी ज़रूरत है। उसके लिए बात ऐसे हृदयों की थी, जो शुद्ध हैं या शुद्ध होने चाहिए।

करुणा से वह असाध्य रोगियों को छूता है, जो तुरन्त चंगे हो जाते हैं। इस राजा का एक स्पर्श सब कुछ बदल देता है। आइए, हम इस राजा को अपने आप को छूने दें। जो कोई उसके पास आया और आज उसके पास आता है, उसे उसने कभी नहीं ठुकराया और कभी नहीं ठुकराएगा।

Just one touch from the King changes everything!

राजा का एक स्पर्श सब कुछ बदल देता है!

यूहन्ना 21:25; 1 पतरस 2:22-24; मत्ती 1:21; मरकुस 1; यूहन्ना 6:15; इब्रानियों 5:8; मरकुस 6:3; मरकुस 9:15; 10:26; लूका 4:32; 8:25; 9:43; मत्ती 8:20; लूका 5:13; 22:51; मरकुस 6:56।

11 राजा का शुभ संदेश

राजा का पहला आधिकारिक कार्य है प्रचार, सुसमाचार का उपदेश। प्रचार और चंगाई उसकी दिनचर्या हैं। वह किसी सेना की अगुवाई नहीं करता, लोग बस उसके पीछे चलते हैं और उसकी सुनते हैं।

जैसा राजाओं के साथ अक्सर होता है, राजा के आगमन की तैयारी के लिए पहले एक प्रतिनिधि-मंडल आता है। यह यूहन्ना है, जो बपतिस्मा देनेवाला कहलाता है, जो प्रभु का, राजा और मसीहा का मार्ग तैयार करता है। उसका संदेश: सड़कों और घरों को नहीं, बल्कि हृदयों को शुद्ध किया जाए। लोग मन फिराएँ, लौटें और अपना जीवन बदलें। ऊँट के रोम का वस्त्र पहने जंगल का एक भविष्यद्वक्ता, अग्रदूत के रूप में, एक ऐसे राजा के आने की घोषणा करता है, जो ठाठ-बाट और शान-शौकत में नहीं आता।

मन फिराना यीशु का भी संदेश है। जब यूहन्ना बंदीगृह में डाल दिया जाता है, तब यीशु अपनी सेवा जारी रखता है। वह परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करता है: मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो! परमेश्वर का निकट आता शासन इस संसार की सब समस्याओं का उत्तर है। केवल परमेश्वर का शासन ही शान्ति, चंगाई, क्षमा, स्वतंत्रता, सुरक्षा, समृद्धि और स्थिरता लाता है। परमेश्वर का शासन, जो यीशु मसीहा में साकार है, सांसारिक साम्राज्यों की तानाशाही और उनकी असफलता का उसका उत्तर है, और उन अदृश्य शासकों की तानाशाही का भी, जो उसी प्रकार अपना बल चलाते हैं। अर्थात परलोक की प्रधानताएँ और अधिकार, जो हमारे दृश्य संसार पर प्रभाव डालते हैं, ताकि मनुष्यों को नष्ट करें।

यीशु इस राज्य का परमेश्वर द्वारा भेजा गया और ठहराया गया राजा है। वह स्वयं अपने व्यक्तित्व में राज्य के संदेश, सुसमाचार, को साकार करता है। नए नियम के चार जीवन-वृत्तांत यूँ ही सुसमाचार नहीं कहलाते। उसका जीवन, उसके काम और वचन शुभ संदेश हैं। और वे वही कहते हैं, जो प्रेरितों ने बाद में अपनी पत्रियों में लिखा।

जब यीशु को उस लंगड़े को चंगा करना है, जिसे छत में से उतारकर उसके पैरों के सामने रखा जाता है, तब वह कुछ अप्रत्याशित कहता है। कुछ लोगों को शायद भरोसा था कि वह लंगड़े को चंगा कर सकता है, नहीं तो वे आते ही नहीं। परन्तु यीशु पहले उससे कहता है: तेरे पाप क्षमा हुए! पाप लंगड़ा होने से बड़ी समस्या हैं। यीशु सबसे बढ़कर पाप की समस्या का हल लाता है। यही सुसमाचार है। स्वर्गदूत ने मरियम के पति यूसुफ से कहा:

> वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा!

यीशु के साथ बिना किसी संदेह के शुभ संदेश सचमुच आ पहुँचा था। यीशु वही था, जो वह कहता था। वचन और जीवन एक थे।

> “इस प्रकार यीशु नासरत में भी आया, जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ था। सब्त के दिन वह अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया। वह पवित्रशास्त्र में से पढ़ने के लिए खड़ा हुआ।”

और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक दी गई। उसने उसे खोला और वह स्थान पढ़ा, जहाँ लिखा है:

> “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि प्रभु ने मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे इस कार्य के लिए भेजा है कि मैं कंगालों को शुभ संदेश सुनाऊँ, बंदियों को प्रचार करूँ कि वे स्वतंत्र होंगे, और अंधों को कि वे देखेंगे, कुचले हुओं को स्वतंत्रता दूँ, और प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करूँ।”

यीशु ने पुस्तक लपेटी, उसे आराधनालय के सेवक को लौटा दिया और बैठ गया। आराधनालय में सब लोग उसे उत्सुकता से देख रहे थे।

> वह बोलने लगा। “आज यह लेख पूरा हुआ है”, उसने उनसे कहा। “तुम इसके गवाह हो।”

सुसमाचार, जो यीशु स्वयं था और जिसका वह प्रचार करता था, प्रकाश में, अनन्त जीवन में ले जाता है। ताकि हम पुरानी बातों को, पापों को और मृत्यु को पीछे छोड़ दें।

> “मैं तुम से सच कहता हूँ: जो मेरा वचन सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती; वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।”

शुभ संदेश और यीशु एक हैं – एक को दूसरे के बिना नहीं पाया जा सकता। जहाँ सुसमाचार का प्रचार होता है, वहाँ यीशु का प्रचार होता है।

> यीशु के सुसमाचार को हम इस प्रकार सारांश में कहते हैं: वह ...
>
> न्याय स्थापित करता है, दासता को मिटाता है, गरीबी से लड़ता है, रोगों को चंगा करता है, कर्ज़ माफ़ करता है, पाप से शुद्ध करता है, अनन्त जीवन देता है, बहिष्कृत को अपनाता है, सबसे निचले सामाजिक दर्जे से ऊपर उठाता है और परमेश्वर की सच्चाई को पूरी तरह प्रभावी बनाता है।

मत्ती 3:1; मरकुस 1:4; 8:28; लूका 3:1-18; इफिसियों 2:1-3; कुलुस्सियों 1:13; 2:15; मरकुस 2:1-12; मत्ती 1:21; लूका 4:16-22; यूहन्ना 5:24।

12 राजा की हत्या: क्रूस

सुसमाचार-लेखक यूहन्ना यीशु का वर्णन राजा के रूप में करता है। दूसरे सुसमाचार-लेखकों से अधिक। विशेषकर वहाँ, जहाँ इसकी अपेक्षा नहीं होती। जहाँ यह बिल्कुल मेल नहीं खाता। अर्थात यीशु के दुःखभोग में, उसके दुःख की कहानी में, उसके पकड़वाए जाने में, उस पर चले मुकदमे में और अंत में क्रूस पर उसकी मृत्यु में।

यह दुःखभोग भयानक है। अन्यायपूर्ण। निर्लज्ज। क्रूर। अमानवीय और पाशविक। फिर भी इस अंधकार के बीच से विश्वास सच्चे राजा के राज्याभिषेक को पहचानता है। दोहरे अर्थ में दुःखभोग की कहानी मसीहा-राजा की महिमा की, उसके ऊँचे किए जाने की गवाही देती है।

यीशु, दाऊद का पुत्र, गतसमनी की बारी में जाता है। जब यीशु सैनिकों से पूछता है कि वे किसे ढूँढ़ रहे हैं, तो उसके उत्तर से वे मानो आँधी के झोंके से गिर पड़ते हैं, जब वह कहता है: "मैं हूँ।" ऐसा लगता है, मानो वे उसके, राजा के, चरणों में पड़े हों।

राजसी गरिमा और दृढ़ता के साथ यीशु अपने चेले पतरस की तरह तलवार से अपना बचाव नहीं करता। पिता का कटोरा पीना, यही यीशु के लिए, पुत्र के लिए, मायने रखता है: तेरी करुणा, हे परमेश्वर, जीवन से भी उत्तम है, जैसा दाऊद ने कभी कहा था। एक कटोरा, जो उसके लिए दुःखों से भरा है, हमारे लिए प्रभु-भोज में धन्यवाद का कटोरा।

यीशु को हन्ना के पास ले जाया जाता है, जो महायाजक का ससुर था। उसके दामाद काइफ़ा ने एक बार कहा था – राजनीतिक सूझ-बूझ के साथ, परन्तु अपने शब्दों के गहरे अर्थ को जाने बिना: अच्छा है कि एक व्यक्ति प्रजा के लिए मरे। कितनी सच्ची बात। एक सच्चा राजा अपनी प्रजा के लिए मरता है!

यहूदियों के छोटे-से, दबे-कुचले संसार से यीशु को अब रोमी विश्व-साम्राज्य के ब्रह्मांड में ले जाया जाता है। पीलातुस, रोमी राज्यपाल, के पास सत्ता है और वह उससे सीधे पूछता है, जब वे दोनों शायद अकेले हैं: क्या तू यहूदियों का राजा है?

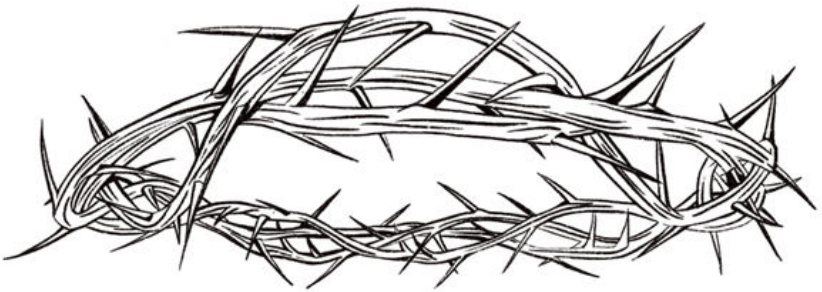
यीशु पुष्टि करता है कि वह राजा है। परन्तु एक ऐसे राज्य का, जो इस संसार का नहीं है। एक ऐसा राज्य, जो हर राजनीतिक दावे से ऊपर है, एक ऐसा राज्य, जो रोमियों की तरह हथियारों के बल से संसार को नहीं जीतता। स्वर्गीय संसार का एक राज्य। दूसरे नियमों के साथ। एक ऐसा राज्य, जो अपने स्वर्गीय राजा के व्यक्तित्व में अपने आप को एक पार्थिव साम्राज्य की क्रूर हिंसा के द्वारा कुचले जाने देता है। कम से कम ऐसा ही दिखाई दिया।

पीलातुस के लिए स्पष्ट है, यह यहूदियों का राजा है। आश्चर्य की बात है कि पीलातुस कैसी सूझ-बूझ दिखाता है। वह, रोमी और मूर्तिपूजक, उसे मानो यहूदियों का राजा बना देता है। वह भीड़ से खुलकर कहता है: "देखो, तुम्हारा राजा!" वह क्रूस के ऊपर राजा होने की एक पट्टी भी ठुकवा देता है। सब ठीक यही जानें। इस्राएल के अगुवे और यीशु पर दोष लगानेवाले पीलातुस के द्वारा चरम सीमा तक भड़काए जाते हैं। क्योंकि वे उसकी मृत्यु चाहते हैं, हाँ, क्रूस पर उसकी मृत्यु।

पीलातुस अनजाने में यीशु के विषय में सच्चाई के पक्ष में खड़ा होता है: यीशु में कोई दोष नहीं है और वह उनका राजा है। यहूदी रोम के सम्राट को चुनते हैं। यीशु को, अपने सच्चे राजा को, वे ठुकरा देते हैं।

अगली बात, जो हम देखते हैं, वह है काँटों के मुकुट और लाल बैंजनी वस्त्र में यीशु, जो उस पर डाल दिया जाता है। उस राजा का लहूलुहान विकृत चित्र, जो सच्चाई की गवाही देने आया था। काँटों का मुकुट पहने हुए महाराज।

गुलगुता तक वह अपना क्रूस स्वयं उठाकर ले जाता है। वहाँ उसके वस्त्र उसके शरीर से फाड़ दिए जाते हैं। उसे क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया जाता है। क्रूस खड़ा किया जाता है। वह ऊँचा किया जाता है, जैसा उसने स्वयं पहले से कहा था। राजा को उसके सिंहासन पर बैठाया जाता है: यातना का एक खंभा, लकड़ी का एक क्रूस।



एक नंगा, लहूलुहान, विकृत मनुष्य, पीड़ा से भरा। प्राण छोड़ने से पहले उसकी पुकार राजसी है, उसके लिए, सबके लिए, हमारे लिए छुटकारा देनेवाली और उद्धार देनेवाली: पूरा हुआ!

हमारे लिए दे दिया गया। यही क्रूस पर चढ़ाया गया है, जो हमें अपनी ओर खींचता है। पीलातुस नहीं, कोई सम्राट नहीं, बल्कि यीशु, मसीहा-राजा! इस वध-स्थल पर यह मनुष्य हमारा शरण-स्थान बन जाता है, हमारे प्रायश्चित का स्थान। यहाँ उसका लहू हमारे पापों को ढाँप देता है और परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित करता है, उसके क्रूस के लहू के द्वारा मेल-मिलाप। परमेश्वर के साथ शान्ति और हम मनुष्यों के बीच भी शान्ति अब संभव हो जाती है। परमेश्वर का लहूलुहान और छेदा हुआ हाथ बढ़ा हुआ है!

यही संसार का सच्चा राजा है, स्वर्ग का राजा, सारे संसार का शासक और प्रभुओं का प्रभु! जो अपनी सत्ता त्यागने को तैयार है, हमारे कारण सिंहासन को क्रूस से बदलने को, वही हमारी आराधना के योग्य है। जो फिर अपने हत्यारों के लिए परमेश्वर से, अपने पिता से, क्षमा की विनती भी करता है, वह हम मनुष्यों को अवाक कर देता है। क्या हम ऐसे परमेश्वर के योग्य थे?

एक क्रूस रोमियों की सत्ता का प्रदर्शन करता है और क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों के विनाश का, उनके सर्वनाश का, हाँ, उनके और उनकी हर स्मृति के मिटा दिए जाने का। बलवान निर्बलों को पराजित करते हैं। निर्बलता में यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया। परमेश्वर के लिए, जो ब्रह्मांड का शासक है, यही विजय है। यह कितना ही विरोधाभासी क्यों न लगे: प्रेम की विजय।

क्रूस ठोकर का कारण है और रहेगा। मसीही विश्वास के चिह्न के रूप में वह ऐसा ही रहता है। एक क्रूस को और क्रूस पर चढ़ाए गए को किसी धर्म का संस्थापक बनाना पागलपन और मूर्खता है। इसमें से किसी बात को न सुंदर बनाया जा सकता है, न रोमानी। यह इतना विचित्र है, इतना विरोधाभासी, इतना उलटा-पुलटा। परन्तु उन सबके लिए, जो विश्वास करते हैं कि लज्जा के इस खंभे पर परमेश्वर की बुद्धि और प्रेम अपने शिखर पर पहुँचते हैं, क्रूस, और वहाँ जो कुछ हुआ, उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है। बचाव के लिए! एक दुःख उठानेवाला, एक क्रूस पर चढ़ाया गया परमेश्वर मूर्खता है, परन्तु साथ ही वह संदेश है, जो प्रतिदिन मनुष्यों को छूता है, बदलता है और उन्हें नए मनुष्य बनाता है।

यूसुफ की कहानी मसीहा का एक पूर्व-चित्र है – उसके भाई उसे एक गड्ढे में डाल देते हैं, उसे मिस्र में बेच देते हैं, जहाँ वह दुःख भरे घुमावदार मार्गों से होकर उप-शासक बन जाता है, ठीक मसीह की तरह।

जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तब उन्होंने उसका ऊपरी वस्त्र, वह सुंदर वस्त्र जो वह पहने था, उतार लिया। फिर उन्होंने उसे पकड़कर गड्ढे में डाल दिया। वह गड्ढा सूखा था; उसमें कुछ भी पानी न था।

उत्पत्ति 37:23-24

यूहन्ना 18 और 19; मत्ती 26:36-27:56; मरकुस 14 और 15; लूका 22 और 23; रोमियों 3:21-26; 2 कुरिन्थियों 13:4; 1 कुरिन्थियों 1:22-24; कुलुस्सियों 1:20; इफिसियों 2:16; फिलिप्पियों 2:8।

13 कैसा राजा

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Was für ein König, der sein Land verlässt für mich. Und alles hingibt, was ihm lieb und wichtig ist. Der sich aufmacht und weit in die Fremde zieht, um zu suchen die, die er von Herzen liebt. Der nicht ruht bis auch der letzte seiner Freunde bei ihm ist, der voll Sehnsucht und voll Freude mich in die Arme schließt.

Wer so ist, der ist wahrhaft königlich. Diesen König liebe ich.

Was für ein König, der ein großes Festmahl hält für all die Schwachen und die Armen dieser Welt. Der uns seine Brüder, seine Schwestern nennt, weil er wie wir das Leben hier auf Erden kennt. Was für ein König, der aus Liebe seine Krone niederlegt und sie eintauscht gegen eine, die aus Dornen ist.

Was für ein König, der sein Leben für mich gibt, wo ich doch nicht von edler Herkunft bin. Was für ein König, der dem Tod ins Auge sieht und ihn als Erster ein für alle Mal besiegt. Was für ein König, der den Weg geht, der noch nicht gegangen ist, weil dieser Weg für uns der Weg in die Freiheit ist.

लोथार कोसे (Lothar Kosse), 2011, कृपापूर्ण अनुमति से।

14 कब्र में राजा

एक राजा को विशेष रीति से दफ़नाया जाता है। बड़े जुलूस और एक योग्य समाधि के साथ। क्रूस पर चढ़ाए गए अपराधियों को डराने के लिए कई दिनों तक क्रूस पर लटका छोड़ दिया जाता है। फिर वे क्रूस से कुछ ही दूर एक सामूहिक कब्र में पहुँचते हैं। उनके शरीरों के साथ पशुओं की लाशों जैसा व्यवहार किया जाता है। क्रूस पर इन मनुष्यों को तोड़ दिया जाता है। और उनकी हर स्मृति मिटा दी जाती है।

परन्तु यहाँ जीवन का कर्ता लटका है। दो अपराधियों के साथ मार डाला गया। अब उसके साथ क्या होगा? क्रूस पर चढ़ाए जाने के इस नाटक में प्रकाश की एक छोटी-सी किरण है। अरिमतियाह का यूसुफ, जो महासभा का एक सदस्य है, यीशु का एक गुप्त चेला है। अब उसका समय आ गया है। अब वह प्रमाणित करता है कि वह यीशु का चेला है। एक धनी व्यक्ति होने के कारण उसने पहले से प्रबंध करके अपने लिए एक कब्र खरीद ली थी। चट्टान में खुदी एक कब्र, जिसके सामने कई टन भारी एक बड़ा पत्थर है। उसे भूमि पर बनी एक नाली में लुढ़काकर कब्र के द्वार के सामने कर दिया जाता है।

यूसुफ बड़ा साहस करके पीलातुस के पास भीतर जाता है और शव माँगता है। वह यीशु की इतनी जल्दी मृत्यु पर आश्चर्य करते हुए सहमति दे देता है। यूसुफ शव को क्रूस से उतारता है। अकेले या सहायकों के साथ, यह पता नहीं। वह यीशु को मलमल की चादर में लपेटता है। यह जल्दी होना है, सब्त साँझ के साथ आरंभ होता है। वह यीशु को अपनी ही कब्र में रखता है और मानकर चलता है कि उसे अपने लिए एक नई कब्र की ज़रूरत पड़ेगी।

यीशु के जीवन और मृत्यु में बहुत सी पहले से कही गई बातें (भविष्यद्वाणियाँ) पूरी हुईं। एक विशेषता, जो किसी और मनुष्य पर लागू नहीं होती। उसके गाड़े जाने के बारे में भी सैकड़ों वर्ष पहले लिखा गया: उसकी कब्र दुष्टों के संग ठहराई गई, परन्तु अपनी मृत्यु में वह एक धनी के संग था।

अक्सर, जब प्रेरित सुसमाचार सुनाते हैं, तो वे सदा बताते हैं कि यीशु केवल मरा ही नहीं, बल्कि गाड़ा भी गया। किसी को इसे गौण बात मानकर टालना नहीं चाहिए। क्योंकि जो गाड़ा गया है, वह मरा हुआ है। बेहोश नहीं। मरा-सा नहीं। शरीर के सब कार्य सदा के लिए समाप्त हो चुके हैं। कब्र के साथ यीशु का अध्याय फिलहाल बंद हो जाता है।

यदि क्रूस पर उसकी मृत्यु के साथ सब कुछ समाप्त लगता था, तो उसके गाड़े जाने के साथ तो और भी अधिक। फिर रोमियों ने कब्र पर मुहर लगा दी और एक विशेष दस्ता उसकी रखवाली करने लगा। यहूदी शास्त्रियों को निश्चित होना था कि यीशु के चेले शव चुराने न आ जाएँ। परन्तु उनसे बहुत कम खतरा था, वे भाग चुके थे। चेलों के विपरीत, उन्हें याद था कि यीशु ने कई बार अपनी हिंसक मृत्यु के बारे में, परन्तु अपने पुनरुत्थान के बारे में भी कहा था। कुछ होने को था। क्या अभी कुछ और होनेवाला था?

प्राचीन मसीही विश्वास-वचन में लिखा है: “गाड़ा गया, और मृतकों के लोक में उतरा”। जीवन का कर्ता मृत्यु के अजेय गढ़ में घुस जाता है, स्वयं मरकर और मरा हुआ होकर। अपने बारे में यीशु बाद में कहता है: मैं मर गया था।

मृत्यु के उस पार फिर जो हुआ, जब वह मृतकों के लोक में उतरा, उसका महत्व उससे कम नहीं है, जो क्रूस पर हुआ। परन्तु यह निश्चित है, वह भी हमारे लिए हुआ। नश्वर मनुष्यों के लिए, ताकि हम जीवित रहें, उसके साथ।

उस पर अत्याचार हुआ, परन्तु उसने बिना शिकायत के उसे सह लिया। जैसे मेम्ना वध होने के लिए ले जाया जाता है, जैसे भेड़ ऊन कतरनेवालों के सामने, वैसे ही उसने सब कुछ चुपचाप, बिना शिकायत के सह लिया।

उसकी हिरासत और उसके मुकदमे के समय के बीच ही मृत्यु ने उसे आ घेरा। क्योंकि उसकी प्रजा ने इतना बड़ा दोष अपने ऊपर लाद लिया था, उसका जीवन मिटा दिया गया। इस पीढ़ी के मनुष्यों में से कौन इस पर विचार करता है?

और उसकी कब्र दुष्टों के संग ठहराई गई, परन्तु अपनी मृत्यु में वह एक धनी के संग था, क्योंकि उसने कोई अन्याय नहीं किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

यशायाह 53:7-9

प्रेरितों के काम 2:22-46; 3:15; इब्रानियों 2:10; मत्ती 27:57; मरकुस 15:43; यूहन्ना 19:38; यशायाह 53:9; 1 कुरिन्थियों 15:4; 1 पतरस 3:18-22

15 मृतकों के लोक में राजा

राजाओं को भी मरना पड़ता है। इस राजा ने, जिसकी हम यहाँ बात कर रहे हैं, यातना भरी मृत्यु सही। उसे क्रूस पर हिंसा से मार डाला गया। फिर उसे चट्टान में खुदी एक कब्र में रखा गया, जिसे एक बड़े पत्थर से बंद कर दिया गया।

मनुष्य अपने शरीर से बढ़कर है। मृत्यु के बाद वह जीवित रहता है। उसकी चेतना, उसकी आत्मा-प्राण, मारी नहीं जा सकती। आत्मा-प्राण पूरे मनुष्य के समान है, वह बना रहता है और परलोक में एक पूर्ण व्यक्ति है। बिना भौतिक, नश्वर शरीर के। मसीही विश्वास के बाहर भी अनगिनत संकेत हैं, प्रमाणों की तो बात ही क्या, कि मनुष्य अपने शरीर के बाहर अस्तित्व में रह सकता है और अपनी सब इंद्रियों से अदृश्य और परलोक के संसार के परिवेश को अनुभव कर सकता है।

यही परलोक मृतकों का लोक है। इब्रानी बाइबल में इसे शिओल (Scheol) कहा गया है। नए नियम में अधोलोक को हेडीज़ (Hades) कहा जाता है, जहाँ मृतक रहते हैं। वहाँ धर्मियों के लिए एक भाग है और अधर्मियों के लिए एक भाग। पहले को "अब्राहम की गोद" कहा जाता है। फिर एक सबसे निचला भाग है, जिसमें वे विद्रोही और पतित स्वर्गदूत बंद रखे गए हैं, जो नूह से पहले और नूह के समय में मनुष्यों के बीच घुल-मिल गए थे। उनका इसमें बड़ा हाथ था कि मनुष्य इतने पाप में गिर गए कि परमेश्वर ने जल-प्रलय के द्वारा अंत की रेखा खींच दी। उत्पत्ति की पुस्तक यही बताती है। प्राचीन कलीसिया अपने विश्वास-वचन में, जिसे आज तक हर रविवार अनगिनत बार मसीही मिलकर ऊँचे स्वर में बोलते हैं, घोषणा करती है: मृतकों के लोक में उतरा। ठीक वहीं, अधोलोक में, जो हमसे छिपा है और जिसमें केवल मृत्यु के द्वारा ही प्रवेश किया जा सकता है, वहीं नीचे और भीतर वह गया, मसीह, राजा।

शायद पाठक को यह विचित्र और प्राचीन लगे। परन्तु बाइबल का संसार-दर्शन काफ़ी सरल है: एक रचा हुआ दृश्य संसार है और एक रचा हुआ अदृश्य संसार। अदृश्य संसार में स्वर्ग है, जहाँ परमेश्वर निवास करता है और शासन करता है। इसे उन शब्दों और धारणाओं से समझाया जाता है, जिन्हें हम दृश्य संसार से जानते हैं, ताकि हम किसी तरह इस संसार की कल्पना कर सकें, जो हमसे कमोबेश छिपा है। परमेश्वर का स्वर्ग ऊपर है। अधोलोक, मृतकों का लोक, सदा नीचे है, पृथ्वी के नीचे। पृथ्वी के नीचे का अर्थ केवल कब्र नहीं, बल्कि परलोक का अदृश्य अधोलोक है, जहाँ मृतक हैं।

यद्यपि अब्राहम की गोद विश्राम का स्थान है, फिर भी इब्रानी बाइबल शिओल का वर्णन ऐसे स्थान के रूप में नहीं करती, जहाँ कोई जाना चाहे, क्योंकि वहाँ बहुत सुंदर हो। शिओल मृत्यु का और मृत्यु की उस सत्ता का प्रतीक है, जिसे परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा।

नया नियम अधोलोक को हेडीज़ कहता है। यूनानी पौराणिक कथाओं में भी इस स्थान का यही नाम था। बाद में हेडीज़ अधोलोक का शासक बन गया। इस स्थान को नरक से अलग समझना चाहिए। हेडीज़ और नरक एक ही नहीं हैं।

आइए, हम क्रूस पर चढ़ाए जाने के उस दिन और यीशु के गाड़े जाने पर लौटें। बाहर से देखने पर सब शांत हो गया, यीशु का यातना पाया हुआ शव कब्र में पड़ा था। सब्त आरंभ हुआ। परन्तु राजा विश्राम नहीं कर रहा था। अधोलोक में कुछ विशाल घटित हुआ। राजा नीचे उतरा। केवल मरकर ही वह मृतकों के इस लोक में उतर सकता था। और मृत्यु के प्रधान से भेंट कर सकता था। वह पुराने सर्प की गुफा में उतरा और उसका सिर कुचल दिया। उसने बलवान को वश में किया, ताकि उसका माल लूट ले। ताकि बंदियों को छुड़ाए।

वह और दुःख उठाने के लिए शिओल में नहीं उतरा, बल्कि जय पाने, छुड़ाने और घोषणा करने के लिए।

वह सबसे निचले बंदीगृह में, पतित स्वर्गदूत-प्रधानों के पास उतरा। उन्हें उसने उद्धार का संदेश नहीं, बल्कि विजय का संदेश सुनाया। वे जान लें कि उनकी योजना और अंधकार के उनके प्रधान की योजना सफल नहीं हुई। उसकी मृत्यु का अर्थ था उनकी मृत्यु। उसकी मृत्यु, जिसे अंधकार की सब शक्तियों ने रचा था, उनकी विजय नहीं थी। वह उनकी हार थी। उनकी अपेक्षा के विपरीत अब वे विजेता से उस स्थान पर मिलते हैं, जहाँ उन्होंने उसकी कभी अपेक्षा न की होती, और उसके मुँह से सुनते हैं कि मनुष्यों के लिए उद्धार आ गया है। अंधकार की शक्तियों के साथ नश्वर मनुष्यों का विनाश नहीं, बल्कि विजय, उद्धार और अनन्त जीवन अब पूरा हो चुका है और पापियों के लिए तैयार है। उन पापियों के लिए, जो इसके योग्य नहीं हैं, परन्तु जिन पर राजा दया करता है।

शिओल या हेडीज़ में वे सब भी थे, जो परमेश्वर का भय मानते थे और क्रूस पर चढ़ाए जाने के इस दिन तक मर चुके थे। वे मृतकों के लोक में थे, परन्तु स्वर्गीय स्वर्गलोक में नहीं। अब प्रतिज्ञा किया हुआ राजा उनके पास आता है, अब्राहम, दाऊद, अय्यूब के पास और उन सबके पास, चाहे उनके नाम जो भी हों। महिमा का राजा भीतर आता है और एक अनगिनत भीड़ उसका स्वागत और अभिवादन करती है। ये आशा के बंदी हैं! उनकी आशा वहाँ रहने की नहीं है। राजा भी वहाँ रहने नहीं आया था। वह उन्हें बाहर निकालने और स्वर्गीय स्वर्गलोक में ले जाने आया था।

इस प्रकार उसी दिन, जिस दिन मसीह मरा, हेडीज़ से स्वर्गलोक की ओर एक बड़ा निर्गमन होता है। क्योंकि क्रूस पर उस एक डाकू से उसने बड़े भरोसे के साथ कहा: आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। यह डाकू उस महान राजा के पीछे चलता है, जो अपनी प्रजा के लिए लड़ता है और सबको स्वर्गीय पवित्रस्थान में, परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति में ले जाता है।

पीछे रह जाते हैं शिओल के खंडहर और उसमें वे लोग, जिन्होंने विश्वास नहीं किया। शायद, और यह असंभव नहीं, उसने अधोलोक में से उन्हें भी छुड़ाया, जिन्हें उसने वहाँ उद्धार का संदेश सुनाया। जो उससे

मिलता है, जो उसे पुकारता है, चाहे कहीं भी हो, उसका उद्धार होगा। वह सबके लिए धनी है, यह दयालु महिमा का राजा।

राजा ने अपने आप को हमारे जीवन के साथ एक कर दिया और मनुष्य बन गया। उसने वह जीवन जिया, जो हमें जीना चाहिए था। उसने हमारी मृत्यु अपने ऊपर ले ली और हमारे पापों को हमसे उठा लिया और स्वयं उन्हें कब्र में ले गया। परमेश्वर उसकी मृत्यु को हमारे नाम गिनता है, हम जीवित रह सकते हैं। एक नया, अनन्त, अविनाशी जीवन। वह नीचे उतरा और मृत्यु के गढ़ को तोड़ डाला, ताकि हम जीवित रह सकें। वह फिर जीवन में लौट आया। उसकी मृत्यु हमारी मृत्यु है और उसका जीवन अब हमारा जीवन है।

हर कदम, राजा का पूरा जीवन, उद्धार के लिए आवश्यक था। नहीं तो उसे केवल क्रूस के लिए प्रकट होना पड़ता। राजा ने अपनी प्रजा के लिए क्रूस और पुनरुत्थान के बीच एक युद्ध लड़ा, यद्यपि चट्टान की कब्र से इसका कोई संकेत नहीं मिलता था। दृश्य संसार में युद्ध लड़ा जा चुका था, मृत्यु तक। अब अदृश्य संसार में युद्ध आया। उसने शिओल को लूट लिया और बंदियों को सिय्योन पर्वत पर, परमेश्वर के पर्वत पर, ऊपर ले गया।

और इस प्रकार, नए जीवन के लिए जिलाया जाकर, वह अदृश्य संसार की उन आत्माओं के पास गया, जिन्होंने नूह के समय में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था और जो अब अपने अंतिम दंड तक बंदी रखी गई हैं, और उन्हें अपनी विजय का संदेश सुनाया।

1 पतरस 3:19-20

इसलिए वह कहता है: “वह ऊँचे पर चढ़ा, और बंधुवाई को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।” उसके चढ़ने से, और क्या अर्थ है सिवाय इसके कि वह पृथ्वी के निचले स्थानों में उतरा भी था? जो उतर गया, यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे।

इफिसियों 4:8-10

मत डर! मैं प्रथम और अंतिम और जीवता हूँ, मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ, और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:17-18

2 शमूएल 22:6; अय्यूब 17:16; भजन संहिता 16:10; 30:3; 68:16-24; 116:3, 8-9, 15; 118:17-27; यशायाह 14:9-15; 38:18; 45:2; यहेजकेल 31:16; होशे 13:14; जकर्याह 9:9-12; मत्ती 12:28-29, 40; प्रेरितों के काम 2:22-36 (भजन संहिता 16:10-11); रोमियों 10:6-10 (व्यवस्थाविवरण 30:12-14); कुलुस्सियों 1:16; 2 पतरस 2:4।

16 राजा का पुनरुत्थान

मरे हुए फिर से जीवित नहीं होते। एक नियम, जिसका कोई अपवाद नहीं। कोई विशेष ज्ञान नहीं, हर कोई यह जानता है। मृत्यु, हमारी सीमितता और नश्वरता, कोई ऐसा क्षितिज नहीं, जिससे हम संतुष्ट होना चाहें। बहुत लोग अनुभव करते हैं कि हम मिट्टी में लौट जाने से अधिक के लिए रचे गए हैं। यही सब कुछ नहीं हो सकता।

राजा युद्ध के लिए निकला है। अकेले, अपने पिता के आदेश पर। हमारे लिए। उसने मृत्यु की सत्ता का सामना किया। उसने अपने आप को पराजित होने दिया। युद्ध हार गया और इसी के द्वारा उसे फिर जीत लिया। उसने मृत्यु की सत्ता पर जय पाई। उसने मृत्यु को जीवन में बदल दिया। अपने जीवनकाल में उसने कुछ लोगों को जीवन में लौटाया था। अब उसका पिता उसे मृतकों में से जिलाता है। जिस नियम का कोई अपवाद नहीं, वह टूट जाता है। परमेश्वर, पिता, धर्मी की मृत्यु पर चुप नहीं रहता। वह गतसमनी में चुप रहा, जब यीशु ने प्रार्थना की कि उसे इस दुःख से बचा लिया जाए। वह चुप रहा, जब वह अपने पुत्र के साथ दुःख के कठिन मार्ग पर चला। वह चुप रहा, जब यीशु क्रूस पर लटका था। परन्तु फिर पिता बोला और उसने अपना पूरा ईश्वरीय सामर्थ्य प्रकट किया और यीशु को जीवन में लौटा लाया।

क्रूस मनुष्यों का निर्दयी, कठोर “नहीं” है। जिलाया जाना परमेश्वर का स्पष्ट “हाँ” है। मसीह के लिए, जीवन के लिए और हमारे लिए उसका “हाँ”, यद्यपि हम उसके शत्रुओं जैसा व्यवहार करते हैं। या अपने सृष्टिकर्ता में बिल्कुल भी रुचि नहीं रखते।

अपनी मृत्यु में यीशु का सामना मनुष्यों की शत्रुता से होता है। और अंधकार और मृत्यु की शक्तियों की शत्रुता से। और वह हमारे पापों के लिए प्रतिनिधि बलिदान बन जाता है। जिलाए जाने में इस पर मुहर लग जाती है कि दोष का प्रश्न, हमारे पापों की समस्या, सदा के लिए सुलझ गई है। हमारे पक्ष में। जिलाए जाने में परमेश्वर और मनुष्यों की शत्रु सब अदृश्य शक्तियाँ पराजित हो गई हैं। परमेश्वर के राज्य के लिए मार्ग खुला है! कैसा राजा इस कब्र से बाहर आता है! राजा जीवित है! वह मृतकों में से विजयी होकर लौटा है। एक नए जीवन का भविष्य आरंभ हो चुका है।

जी उठा! यीशु स्वयं वह है, जो मृत्यु को तोड़कर निकलता है और बंद चट्टानी कब्र को पीछे छोड़ देता है। अपने कफ़न के कपड़ों को व्यवस्थित और तह किया हुआ छोड़कर वह पुनरुत्थान के संसार में प्रवेश करता है। वह वही यीशु है, जिसे चेले जानते थे। हाथों और पैरों में और पसली में घावों के निशान उसके दुःखों और हमारे लिए उसकी मृत्यु की अनन्त स्मृति और चिह्न के रूप में बने रहते हैं। परन्तु अब वह एक नया अस्तित्व जीता है। वह बंद द्वारों से होकर निकल जाता है, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए उसे समय नहीं

लगता। अपने चेलों के साथ मछली खाता है, अपने आप को छूने देता है, सदा के लिए एक सच्चा मनुष्य है और रहता है।

कब्र पर पड़ा कई टन भारी पत्थर हटा दिया जाता है। इसलिए नहीं कि यीशु बाहर आ सके, बल्कि इसलिए कि चेले और स्त्रियाँ खाली कब्र में भीतर जा सकें।

यह पुनरुत्थान हर उस बात के विरुद्ध है, जिसे हम जानते हैं। ऐसा तो हो ही नहीं सकता! एक परी-कथा? एक मिथक? इस ऐतिहासिक तथ्य को झुठलाने के लिए बहुत कुछ जुटाया गया है। परन्तु संसार के इतिहास की शायद ही कोई घटना इतनी अच्छी तरह प्रमाणित है, जितनी यह। और इससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। क्योंकि इसी घटना पर सब कुछ टिका है या गिरता है। कब्र खाली थी। बहुत से प्रत्यक्षदर्शी जी उठे से मिले। मृत्यु तक डरे हुए चेले मसीह को साहस से माननेवाले बन गए। वे अब मृत्यु से नहीं डरते थे। आज बहुत से लोग मसीह का अनुभव देखने और सुनने के ऐसे अलौकिक अनुभवों में करते हैं, जिन्हें विज्ञान समझा नहीं सकता।

मसीहा-राजा का पुनरुत्थान मानवजाति को एक नए आयाम में ले आया है। इसमें सब मनुष्यों के लिए स्थान है। यह मृत्यु और नश्वरता को सदा के लिए कब्र में पीछे छोड़ देता है। हमारे सामने एक नया अस्तित्व है। बहुतायत का जीवन। अनन्त जीवन और एक नई सृष्टि उस बात के प्रतीक हैं, जो हमारे राजा ने हमारे लिए लड़कर प्राप्त की। अपने जीवन को दाँव पर लगाकर।

उसका पुनरुत्थान हमें खींचकर जीवन में ले आता है। वह जीवन, जो जीने योग्य है, उसने जय पाई है – उसके द्वारा।

हे प्रभु, तू मुझे अधोलोक के हवाले नहीं करेगा! तू यह नहीं होने देगा कि मैं सदा के लिए कब्र में समाप्त हो जाऊँ; क्योंकि मैं विश्वासयोग्यता से तुझ से लिपटा रहता हूँ!

तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाता है। तेरे निकट मुझे निर्मल आनंद मिलता है; तेरे हाथ से मुझे अनन्त सुख मिलता है।

भजन संहिता 16:10-11

यूहन्ना 2:22; प्रेरितों के काम 2:24, 32; 3:15; रोमियों 4:24-25; 6:4, 9; 8:11, 34; 10:9; 1 कुरिन्थियों 15; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10; इफिसियों 2:1-6; कुलुस्सियों 3:1; 2 तीमुथियुस 2:8।

17 राजा का स्वर्गारोहण

राजा यीशु का स्वर्गारोहण कोई पलायन नहीं है। केवल स्थान का परिवर्तन भी नहीं: यह विशाल परिणामोंवाली एक घटना है। वास्तव में क्रूस, कब्र या पुनरुत्थान से कम महत्वपूर्ण नहीं। इस घटना के बारे में शायद ही कुछ सुनने को मिलता है। वह हमें वसंत में एक छुट्टी का दिन देती है, जिसे पिता दिवस (जर्मन में Vatertag) के नाम से भी जाना जाता है। जबकि यह घटना यीशु के जीवन और मृत्यु का मुकुट है।

"स्वर्ग-यात्रा" (जर्मन में Himmelfahrt) अजीब लगता है। यह कोई "यात्रा" नहीं थी, क्योंकि तब यीशु कभी अपने लक्ष्य तक न पहुँचता। यह परमेश्वर के स्वर्गीय संसार में, अलौकिक में, पार उतर जाना था, जो हमारे दृश्य, लौकिक संसार से पूरी तरह भिन्न है, परन्तु उससे दूर नहीं।

यीशु एक विजय-जुलूस में आकाशों में से होकर गया। उस परलोक के संसार के सब प्राणी झुक जाते हैं। उनके पास कोई और चारा नहीं है। यह मार्ग परमेश्वर के सिंहासन तक जाता है। यरूशलेम में उसके प्रवेश के समान, फिर भी पूरी तरह भिन्न। क्योंकि क्रूस उसके पीछे छूट चुका है।

एक मनुष्य ने हम मनुष्यों के लिए परमेश्वर के पिता-हृदय तक का मार्ग बनाया और खोल दिया है। वह मार्ग है। अब हम घर आ सकते हैं। पिता हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। वह हमारा स्वागत करना चाहता है।

पहले उसका वहाँ स्वागत किया गया, एक राजकुमार की तरह। पिता दिवस की बात चली है तो: परमेश्वर, सनातन पिता, अपने पुत्र का स्वागत करता है। वह आनंद से उसका अभिवादन करता है। स्वर्ग आनंदित है, सब स्वर्गदूत और स्वर्गीय प्राणी। पुत्र लौट आया है। पृथ्वी पर 33 वर्षों के बाद वह स्वर्गीय महल में लौटता है।

उसने कठिन कार्य पूरा किया है। उसने अनन्त छुटकारा, अनन्त उद्धार प्राप्त कराया है। एक नई सृष्टि का जन्म हुआ है। उसके मनुष्य बनने के द्वारा, उसके मरने और जी उठने के द्वारा। कोई आश्चर्य नहीं कि ब्रह्मांड के शासन-महल में उसकी इतनी लालसा से प्रतीक्षा की जा रही थी और अब उसका स्वागत किया जा रहा है।

यह सब कोई परी-कथा नहीं है। यह बड़े प्रभाववाली वास्तविकता है। इसके परिणामों का अभी अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। हम मनुष्य सीधे इससे प्रभावित हैं।

हमारे लिए स्वर्गारोहण की इस घटना का अर्थ केवल यही हो सकता है कि हम स्वर्गीय पिता के समान करें। आइए, हम राजा यीशु को वैसे ही ग्रहण करें, जैसे पिता ने उसे ग्रहण किया। आइए, उसकी प्रतीक्षा करें, उसका स्वागत करें। वह हमारे जीवन में भी प्रवेश करना चाहता है। वह इसके लिए तैयार है।

वैसे, जब वह इस प्रकार अपने चेलों के सामने एक बादल में स्वर्ग की ओर गया, तब वहाँ दो पुरुष थे, दो स्वर्गदूत, जिन्होंने कहा: जैसे वह अभी गया है, वैसे ही निश्चित रूप से वह फिर आएगा। दिखाई देता हुआ, बादलों में।

तू विजय-जुलूस में ऊँचे पर चढ़ा है, बंदियों को अपने साथ ले गया है। तूने मनुष्यों से भेंटें ग्रहण की हैं, विद्रोहियों से भी। निश्चय, यहोवा परमेश्वर यहाँ निवास करता रहेगा!

धन्य है प्रभु! वह प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है; हाँ, वही, परमेश्वर, हमारा उद्धार है।

भजन संहिता 68:18-19

मरकुस 16:19-20; लूका 24:50-53; प्रेरितों के काम 1:4-11; इब्रानियों 5:10; 4:14।

18 राजा का राज्याभिषेक

राज्याभिषेक के उत्सव भव्य समारोह होते हैं। किसी बात में कंजूसी नहीं की जाती। हर रानी और हर राजा के लिए एक अनूठी घटना। उच्च पदवाले अतिथि आमंत्रित होते हैं। महल सजाया जाता है। परन्तु अब हम स्वर्ग की बात कर रहे हैं। स्थान और समय के बाहर हमारी कल्पना का संसार सीमित है। फ़ैंटेसी और विज्ञान-कथाएँ हमारी कल्पना-शक्ति को प्रेरित करती हैं। फिर भी स्वर्गीय, परलोक के आयाम में मसीहा-राजा यीशु के प्रवेश, उसके स्वागत और उसके राज्याभिषेक के उत्सव की कल्पना केवल थोड़ी-सी ही की जा सकती है, यदि की भी जा सके। परन्तु वह बहुत वास्तविक है और उसके दूरगामी प्रभाव हैं।

यीशु महिमा और आदर का मुकुट पहने है – विजय का मुकुट! यह शायद जैतून की टहनियों का मुकुट नहीं है। बल्कि एक रूपक, जिससे हम जुड़ सकते हैं। राज्याभिषेक का उत्सव दस दिन चलता है।

परमेश्वर, पिता, ब्रह्मांड का राजा, अपने पुत्र को सबसे ऊँचा सम्मान का स्थान देता है, जो वह दे सकता है। वह उसे उप-शासक बना देता है। जो वह कहता और करता है, वह ऐसा है, मानो परमेश्वर उसे करता है। जैसे उस समय मिस्र में यूसुफ फ़िरौन का प्रतिनिधि था।

स्वर्गीय पिता का यह सम्मान कोई पारिवारिक कृपा या कर्तव्य नहीं है। यीशु ने यह स्थान अर्जित किया है। जितना नीचे उसने अपने आप को दीन किया, उतना ही ऊँचा वह किया जाता है। बैतलहम की एक पशुशाला, कठोर परिश्रम, संपत्ति-रहित, तुच्छ जाना गया और अंत में क्रूस। यद्यपि वह सृष्टिकर्ता है, स्वर्ग का राजा! केवल सारे अस्तित्व के केंद्र में यह सम्मान का स्थान और सबसे ऊँची सम्मान की उपाधि ही उसके योग्य हैं।

राजा दाऊद ने भी ये रहस्यमय शब्द लिखे थे:

> यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा: “तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ!”

यह पूरा हो गया है। जब आप यह पढ़ते हैं, तो यह कोई बीते कल की बात नहीं है। इस सबके परिणाम हैं। यदि यीशु को प्रभु और मसीह ठहराया गया, तो इसके परिणाम होंगे। देर-सबेर। हमारे ग्रह के लिए, हर मनुष्य के लिए। कोई भी इस प्रभु को, इस Lord of Lords को, अनदेखा करके आगे नहीं निकल पाएगा।



उस समय, यीशु के स्वर्ग जाने के कुछ ही समय बाद, मसीही अपनी भूमिगत कब्रगाहों और छिपने के स्थानों में ऐसे गीत गाते थे:

> इसी कारण परमेश्वर ने उसको अतुलनीय रूप से अति महान भी किया, और उसको सम्मान की उपाधि के रूप में वह नाम दिया, जो हर नाम से श्रेष्ठ है।
>
> और क्योंकि यीशु यह नाम धारण करता है, एक दिन सब उसके सामने घुटने टेकेंगे, सब जो स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं।
>
> सब मान लेंगे कि यीशु मसीह ही प्रभु है, और इस प्रकार परमेश्वर पिता की महिमा करेंगे।

या: और वह, जो नीचे उतरा, फिर सबसे ऊँचे स्वर्ग से भी ऊपर चढ़ गया, ताकि इस प्रकार सारे ब्रह्मांड को अपनी उपस्थिति से भर दे।

यह भी: ... यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा, जो अब – स्वर्ग में जाने के बाद – परमेश्वर की दाहिनी ओर सम्मान के स्थान पर बैठा है और जिसके अधीन स्वर्गदूत और सब प्रधानताएँ और अधिकार किए गए हैं।

वैसे, जैसे पुनरुत्थान के, वैसे ही ऊँचे किए गए मसीहा-राजा के भी प्रत्यक्षदर्शी हैं। पहले के कट्टर उत्साही पौलुस को यह समझना पड़ा कि जो मसीहियों को मिटा देना चाहता है, वह स्वयं मसीह पर, उनके प्रभु पर, आक्रमण करता है। यह असीम अनुग्रह था कि मसीह उसी पर प्रकट हुआ। न्याय के लिए नहीं। दमिश्क के मार्ग पर पौलुस अचानक उसकी स्वर्गीय महिमा के तेज में खड़ा है। मानो मंच पर, प्रकाश-स्तंभ की रोशनी में। परिणाम: अंधापन। तीन दिन बाद वह चंगा हो जाता है। इस भेंट का परिणाम: पौलुस पूरी तरह पलट गया है। तुरन्त, जितनी जल्दी उसके लिए संभव है, वह यीशु का प्रचार मसीहा और प्रभु के रूप में करता है।

उसे अचानक समझ में आ गया था कि यही व्यक्ति मसीहा था, जैसा भविष्यद्वाणियों में वर्णन और घोषणा की गई थी। उसके लिए एक ही क्षण में सब कुछ मेल खा गया।

एक और प्रत्यक्षदर्शी, पौलुस से भी पहले, चेला स्तिफनुस था। यहूदियों ने उस पर पथराव किया। जब पत्थर उस पर बरस रहे होते हैं, उसे खुले स्वर्ग की एक झलक मिलती है। यीशु की। वह स्वर्गीय महिमा में खड़ा है और मरते हुए शहीद की ओर झुकता है, ताकि उसे अपने पास ग्रहण करे।

स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया है। वह शासन करता है। उसी की बात चलती है। परन्तु, और यह महत्वपूर्ण है, उसके शासन करने का ढंग भिन्न है। वैसा नहीं, जैसा सम्राट, राजा और तानाशाह करते हैं। उसका शासन निःस्वार्थ, न्यायपूर्ण, सच्चा और प्रेमपूर्ण है। उसका शासन कोई बलपूर्वक दबानेवाली सत्ता नहीं है। इस संसार की बुराई को हिंसा से नहीं रोका जाता। यीशु, सब राजाओं के ऊपर राजा, यह अपने ढंग से करता है। वैसे, जैसे हम उसे सुसमाचारों से जानते हैं। हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। वह अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। एक शब्द पर्याप्त है, और इस संसार की सब शक्तियाँ रुक जाती हैं।

यदि पिता ने उसे सिंहासन दिया, तो इसके सिवा और कुछ नहीं हो सकता कि उसे हमारे जीवन का सिंहासन भी मिले! यीशु, सच्चा राजा, सिंहासन छीननेवाला नहीं है। हम निर्णय करते हैं कि हमारे जीवन का सिंहासन किसे मिले। मनुष्य, मूरतें, धर्म, लतें, भय – और बहुत सी दूसरी चीज़ें हमारे जीवन पर प्रभुता करना चाहती हैं। उसका शासन ही एकमात्र है, जो हमें दास नहीं बनाता। एकमात्र, जिसका भविष्य है।

हम किस ओर खड़े होना चाहते हैं? शायद मैं कभी-कभी अपने मसीहा-राजा यीशु की सामर्थी महानता और महिमा को कम आँकता हूँ। इसलिए हम बार-बार नए सिरे से अपने जीवन का सिंहासन उसे सौंप सकते हैं। उसके पास क्षमा और सहनशीलता है। सदा एक नया आरंभ। वह ताने नहीं देता। वह हमें बार-बार अपने अनुग्रह के शासन में ग्रहण करता है।

मैंने रात के दर्शनों में देखा: और देखो, मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था। और वह उस अति प्राचीन के पास आया, और उसको उसके समीप लाए।

14 तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि सब देश और जाति और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब लोग उसकी सेवा करें। उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और कभी न टलनेवाली है, और उसका राज्य ऐसा है जो कभी नष्ट न होगा।

दानिय्येल 7:13-14

नए नियम में इसकी समानांतर बात:

यीशु ने (महायाजक को) उत्तर दिया: "हाँ! परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, अब से यह होगा: तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे!"

मत्ती 26:64

देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ, आमीन।

प्रकाशितवाक्य 1:7

यीशु आकाशों में से होकर परमेश्वर के सिंहासन तक गया। यरूशलेम के इस्राएली पतरस के पिन्तेकुस्त के उपदेश के समय शोक करते हैं, वही लोग, जिन्होंने उसे मार डाला था।

हे विशाल फाटको, खुल जाओ, हे सनातन द्वारो, मार्ग दो, ताकि महिमा का राजा प्रवेश करे। यह महिमा का राजा कौन है? यहोवा, जो सामर्थी और पराक्रमी है, यहोवा, जो युद्ध में पराक्रमी है। यह महिमा का राजा कौन है? सर्वशक्तिमान यहोवा, वही महिमा का राजा है।

भजन संहिता 24:7-10

इब्रानियों 2:7, 9; भजन संहिता 10:16; यिर्मयाह 10:7, 10; प्रेरितों के काम 2:34; इब्रानियों 1:13; उत्पत्ति 41:41-46; इफिसियों 4:8-10; भजन संहिता 110:1; फिलिप्पियों 2:5-11; 1 पतरस 3:22; प्रेरितों के काम 9:1-22; 7:54-60; मत्ती 28:18; लूका 11:23।

19 मेरा महिमा का राजा

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Der Wind, der in mir weht

Das Wort, das nie vergeht

Alpha und Omega

Der sein wird, ist und war

Berge verbeugen sich vor seinem Angesicht

Ein Wort und es geschieht

Er kommt und Ängste fliehn

Das ist mein König, König der Herrlichkeit

Sein ist das Reich, die Macht in Ewigkeit

Nichts muss ich fürchten, solange ich weiß

Dass der König der Könige nah bei mir bleibt

Der Weg auf dem ich geh

Das Licht auf meinem Weg

Meine Heimat, mein Zuhaus’

Deine Nähe füllt mich aus

Das ist mein König, König der Herrlichkeit

Sein ist das Reich, die Macht in Ewigkeit

Nichts muss ich fürchten, solange ich weiß

Dass der König der Könige nah bei mir bleibt

टोबियास / ज़ामुएल / हुंट / हाफ़र्स्ट (Tobias / Samuel / Hundt / Harfst)

20 राजा – दाऊद का और परमेश्वर का पुत्र

दूसरे भजन का कोई शीर्षक नहीं है। यह एक राजकीय भजन है, और हम आशा करते कि यह दाऊद का हो। ऐसा हो सकता है, परन्तु जिस राजा का यहाँ वर्णन है, वह दाऊद नहीं हो सकता, न उसका पुत्र सुलैमान। बल्कि यह भजन एक ऐसे अनोखे राजा की ओर संकेत करता है, जो उस समय था ही नहीं। भजन संहिता 2 का अभिषिक्त, मसीहा, परमेश्वर का चुना हुआ राजा है। राजा होने के लिए उसका अभिषेक किया जाता है और वह ठहराया जाता है और साथ ही अपने पद को निभाने के लिए आत्मा से अभिषिक्त किया जाता है।

इस कुछ लंबे अध्याय में मुख्य बात यह है कि यह राजा परमेश्वर का पुत्र है। प्राचीन पूर्व में, मिस्रियों में, मेसोपोटामिया में भी, राजा देहधारी देवता होता था। यदि कोई भजन संहिता 2 को यह जाने बिना पढ़ता है कि वास्तव में बात किसकी है, तो इस भजन में अभिषिक्त को यरूशलेम में सिय्योन पर्वत पर राजा ठहराया जाता है और इसके द्वारा परमप्रधान के पुत्र के रूप में गोद लिया जाता है। अर्थात वह पहले पुत्र नहीं था। भजन संहिता 2 में उत्पन्न करना राजगद्दी पर बैठाना है। सिंहासन ग्रहण करने के साथ राजा परमेश्वर के पुत्र के रूप में गोद लिया जाता है।

> “मैंने तो अपने राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर ठहराया है!”
>
> मैं यहोवा का निर्णय प्रकट करता हूँ। उसने मुझसे कहा: तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे उत्पन्न किया है।
>
> मुझसे माँग, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी विरासत, और पृथ्वी के दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बना दूँगा।

ऐतिहासिक परिस्थिति से भिन्न, यहाँ शासन केवल यहूदा या इस्राएल पर नहीं, बल्कि सब जातियों पर फैला है। क्या लोग विश्व-शासन का सपना देखते थे?

परमेश्वर का सपना है सब जातियों को एक अनोखे राजा के अधीन एक करना और उसके द्वारा सारे संसार को आशीष देना। इसका आरंभ दाऊद से हुआ, जो आदर्श राजा का मूल-रूप और आनेवाले राजा का प्रतिरूप था। किसी भी राजा का नहीं, बल्कि उसके वंशजों में से एक का, दूसरे शब्दों में, दाऊद के एक पुत्र का। यहूदा के राजसी गोत्र से। भजन संहिता 2 भविष्य की ओर देखता है और शब्दशः पूर्ति की आशा करता है। यह भजन कोई अतिरंजित इच्छा-स्वप्न नहीं, यह शुद्धतम मसीहाई भविष्यद्वाणी है, जो पूरी हुई है और आगे पूरी तरह पूरी होगी। हम आज इस भजन की पूर्ति में जीते हैं, जैसा प्रेरितों के काम 13:32-34 दिखाता है:

> और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा का शुभ संदेश सुनाते हैं, जो बापदादों से की गई थी, कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर वही प्रतिज्ञा हमारी, अर्थात उनकी संतान के लिए पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है:
>
> “तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे उत्पन्न किया है।”
>
> और उसने जो उसे मरे हुओं में से जिलाया, ताकि वह फिर कभी न सड़े, इसके विषय में उसने यों कहा है: “मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल कृपा तुम पर करूँगा।”

दाऊद पर की अटल कृपा दाऊद से, और इस प्रकार उस प्रजा से, जिसका वह राजा था, की गई यह प्रतिज्ञा है कि दाऊद के सिंहासन पर एक पुत्र होगा, जो अनन्त विश्व-शासन आरंभ करेगा (यशायाह 55:3)। मसीह में यह पूरा हुआ है। इस्राएल का वास्तव में सारे संसार के लिए महत्व है। क्योंकि यीशु, एक यहूदी, यहूदा के गोत्र से, अब स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है। वह पूर्ति है, या उससे भी अच्छा, पूर्ति से भी बढ़कर। क्योंकि वह पुत्र बनता नहीं, वह परमेश्वर का अनन्त पुत्र है, जो मनुष्य बना। परमेश्वर से उत्पन्न होकर वह मनुष्य के रूप में भी परमेश्वर का पुत्र है और इसके साथ पुनरुत्थान में इसी रूप में प्रमाणित भी हुआ:

> ... परमेश्वर का सुसमाचार (जिसकी उसने पहले से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में प्रतिज्ञा की थी) अपने पुत्र के विषय में (जो शरीर के भाव से दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा), यीशु मसीह, हमारे प्रभु के विषय में।
>
> रोमियों 1:1-4

दूसरा भजन सिंहासन पर बैठने की विधि का वर्णन करता है। सुसमाचार-लेखक मरकुस इसे ग्रहण करता है और अपने सुसमाचार में इसे पिरोता है। भजन संहिता 2:7-8 में राजा का सिंहासन पर बैठाया जाना विशेष

रूप से मरकुस 1:11 और 9:7 में झलकता है, परन्तु उस दिशा से भिन्न दिशा में जाता है, जिसकी यहूदी पाठक शायद अपेक्षा करते, और फिर 15:39 में पूरा होता है।

भजन संहिता 2	मरकुस रचित सुसमाचार
राजा का अभिषेक और आत्मा का वरदान 2:2, 6	राजा होने के लिए यीशु का “अभिषेक” 1:11
सिय्योन पर्वत पर ठहराया जाना (राजा का सिंहासन पर बैठना) 2:6	यीशु (और यूहन्ना) से परमेश्वर का वचन (आकाश का फट जाना) 1:11 और 9:7
जातियों के लिए परमेश्वर का संदेश 2:6	यीशु का परमेश्वर के पुत्र के रूप में ठहराया जाना 1:11 और 9:7
शासन की वैधता और राजा को अधिकार देना, परमेश्वर का राजा को अपना पुत्र ठहराना 2:7	हेर्मोन पर्वत पर रूपान्तर के समय यीशु की महिमा 9:2-3, 7
शासन का सौंपा जाना – यरूशलेम के राजा का विश्व-शासन 2:8	दुष्टात्माओं को निकालने और आश्चर्यकर्मों में यीशु का अधिकार
शासन के राजचिह्नों का ग्रहण (लोहे का राजदंड – मिट्टी के बरतनों को चकनाचूर करना) 2:9	यीशु का दंड उसके सुसमाचार का प्रचार है 1:14 (यशायाह 11:4 पर आधारित – “अपने मुँह का दंड”) यीशु का सिंहासन पर बैठना – गुलगुता तक क्रूस का मार्ग – सिंहासन के रूप में क्रूस 15:16-19, 39

यह अध्ययन मैं नेनाद बोझोविच (Nenad Božović) का ऋणी हूँ, संकलन “Christ of the Sacred Stories”, 2017, ट्यूबिंगन (Tübingen) से।

बिल्कुल पहले पद में मरकुस आरंभ करता है: “परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरंभ।” मसीह, अभिषिक्त, वह परमेश्वर का पुत्र है! आखिरकार कहा जा सकता है कि भजन संहिता 2 के मसीहा का ऐतिहासिक व्यक्ति कौन है। परन्तु मरकुस कैसे मसीहा का वर्णन करता है? रेखा सीधे क्रूस तक जाती है, जहाँ कोई यहूदी नहीं, बल्कि एक रोमी मरकुस के आरंभिक अंगीकार में स्वर मिलाता है: जो सूबेदार उसके सामने खड़ा था, जब उसने देखा कि वह इस रीति से चिल्लाकर प्राण छोड़ गया, तो उसने कहा: सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था! (15:39)

आरंभ में, भजन संहिता 2 की तरह, परमेश्वर पिता ही अपने पुत्र से बात करता है और उसके बारे में वह कहता है, जो मूलभूत और साथ ही अकल्पनीय महत्व का है: और आकाश से यह वाणी हुई: तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ (1:11)। इसी प्रकार सुसमाचार के बीच में भी: तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और बादल में से यह वाणी निकली: यह मेरा प्रिय पुत्र है, उसकी सुनो (9:7)।

भजन संहिता 2 के राजगद्दी पर बैठाए जाने के प्रकाश में यीशु पर आत्मा के उतरने को “राजा होने के लिए यीशु का अभिषेक” माना जा सकता है: और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर के रूप में अपने ऊपर उतरते देखा (1:10)। नूह के समय कबूतर जैतून का एक पत्ता लेकर लौटा था, जिससे हम कबूतर को परमेश्वर के आत्मा के रूप में पहचान सकते हैं

(जैतून का तेल = पवित्र आत्मा से अभिषेक)। आत्मा के उतरने के द्वारा यीशु लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा के रूप में वैध ठहराया जाता है और अधिकार पाता है। परमेश्वर स्वयं, पिता, यह करता है: मैंने अपने दास दाऊद को पाया है – अपने पवित्र तेल से मैंने उसका अभिषेक किया है (भजन संहिता 89:20)। यशायाह का एक और वचन पूरा होता है: देखो, मेरा दास जिसे मैं सँभाले हूँ, मेरा चुना हुआ जिससे मेरा जी प्रसन्न है: मैंने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह जाति-जाति के लिए न्याय प्रकट करेगा (42:1)। यीशु के साथ परमेश्वर का संबंध अनोखा है और प्रेम से, परस्पर स्नेह से भरा है। वह हमारे जाने हुए सब संबंधों से बढ़कर है और परमेश्वर के एकलौते पुत्र के रूप में यीशु के राजा होने को एक ऐसे आयाम और परिपूर्णता से भर देता है, जो पहले कभी नहीं थी।

2:8 में उल्लिखित राजा को शासन का सौंपा जाना मरकुस 1:11 में आत्मा के साथ एक होने के द्वारा होता है और यीशु के अधिकार में दिखाई देता है। यीशु ऐसे व्यक्ति की तरह शिक्षा देता है, जिसके पास "अधिकार" है (1:22, 27); उसका अधिकार दुष्टात्माओं को निकालने में भी पहचाना जा सकता है (1:24), जो भजन संहिता 2:9 में राजा के अधिकार से मिलता-जुलता है। उसका अधिकार इससे भी पहचाना जा सकता है कि यीशु का प्रकट होना आश्चर्य और प्रशंसा उत्पन्न करता है (1:27), कि उसके कार्यों का समाचार फैलता जाता है (1:28) और आश्चर्यकर्म बढ़ते जाते हैं (1:29-34)।

भजन संहिता 2:9 का लोहे का दंड, जिससे शत्रुओं को मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर किया जाता है, यशायाह 11:4 से जोड़ा जा सकता है, एक ऐसा स्थान, जो आत्मा से भरे मसीहा के "अपने मुँह के दंड" की बात करता है। यदि इसे मरकुस 1:1-15 में यीशु के सिंहासन पर बैठाए जाने पर लागू किया जाए, तो यीशु के दंड को, राजसी राजदंड को, "उसके मुँह का दंड" समझा जा सकता है, अर्थात, यीशु का राजदंड उसका सुसमाचार-प्रचार है (1:14)।

2:8 में राजा को जातियाँ निज भाग के रूप में देने की प्रतिज्ञा की जाती है और उसे विश्व-शासन सौंपा जाता है। जब हम इस प्रतिज्ञा को मरकुस 1:11 के संदर्भ में देखते हैं, तो प्रश्न उठता है कि यीशु को कौन-सी जातियाँ निज भाग के रूप में देने की प्रतिज्ञा की गई और इस संदर्भ में "पृथ्वी की छोर" का क्या अर्थ है। एक उत्तर यह हो सकता है: सब जातियाँ, जिन्हें सुसमाचार सुनाया जाता है और जो उसे ग्रहण करती हैं, वही जातियाँ हैं, जो यीशु का "निज भाग" बनती हैं। सुसमाचार "पृथ्वी की छोर" तक सुनाया जाता है। इन जातियों में से, जो सिंहासन पर बैठाए गए मसीहा यीशु का निज भाग बनती हैं, पहला सदस्य 15:39 में क्रूस के नीचे खड़ा रोमी सूबेदार है।

राजनीतिक सत्ता के बढ़ने के स्थान पर, जैसी अपेक्षा थी, मरकुस में सिंहासन पर बैठाया जाना उलटी दिशा में जाता है: मसीहा राजनीतिक सत्ता नहीं चाहता। चेलों के सामने एक ऐसा मसीहा खड़ा है, जो दुःख उठाएगा। हेर्मोन पर्वत पर महिमा प्रकट होने से पहले यीशु एक बार 8:31-33 में अपने दुःख की घोषणा करता है, महिमा प्रकट होने के बाद दो बार और, 9:30-32 और 10:32-34 में। यदि हम इसे ध्यान में

रखें, तो समझ सकते हैं कि मरकुस में यीशु कभी अपना परिचय स्वयं मसीहा या परमेश्वर के पुत्र के रूप में क्यों नहीं देता, बल्कि सदा दूसरे शब्दों का प्रयोग करता है, जो गलत अपेक्षाएँ नहीं जगाते।

15:39 में यीशु के सिंहासन पर बैठाए जाने का अंतिम कदम पहले कई स्थानों पर तैयार किया गया था: पहले यरूशलेम में यीशु के प्रवेश के द्वारा, एक स्त्री द्वारा उसके गाड़े जाने के लिए यीशु के अभिषेक के द्वारा, फिर पीलातुस के सामने मुकदमे में और अंत में सैनिकों द्वारा यीशु के ठट्ठे में। 11:1-10 में यीशु के यरूशलेम में प्रवेश और गदहे पर उसके बैठने में सुलैमान के राज्याभिषेक की समानता पहचानी जा सकती है, जो दाऊद के खच्चर पर बैठकर यरूशलेम में आया था (1 राजाओं 1:38)। इससे 11:10 में भीड़ की यह पुकार समझ में आती है: "हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है, धन्य है", जो दिखाती है कि वे दाऊद के घराने की पुनःस्थापना की आशा कर रहे थे।

अपने दुःखभोग में यीशु को एक यूनानी अधीन राजा की वेशभूषा और सामग्री पहनाई जाती है, बैंजनी वस्त्र और काँटों का मुकुट। अभिवादन: "हे यहूदियों के राजा, नमस्कार" शासक के सामने किए जानेवाले सामान्य सम्मान-अभिवादन को दर्शाता है और "Ave Caesar" से मिलता-जुलता है। पूरा दृश्य राजसी विधि का उपहास-चित्र बनाने के लिए है। यीशु के सिर पर सरकंडे से मारा जाता है और उस पर थूका जाता है। मत्ती 27:29 के अनुसार सरकंडा उसके दाहिने हाथ में रखा जाता है और इस प्रकार "राजसी राजदंड" बना दिया जाता है। राजसी विधि के इस उपहास के द्वारा सैनिक यीशु पर हँसते हैं और उसे वैध शासक मानने से इनकार करते हैं।

गुलगुता की पहाड़ी पर चढ़ना (15:22) यीशु के सिंहासन पर बैठने के रूप में समझा जा सकता है। इस प्रकार यह स्थान सिय्योन का प्रतिरूप बन जाता है: जहाँ भजन संहिता 2 में सिय्योन पर राजसी राज्याभिषेक का अर्थ राजनीतिक सत्ता है, वहाँ गुलगुता की पहाड़ी पर दुःख उठानेवाला मसीहा-राजा सिंहासन पर बैठाया जाता है। क्रूस स्वयं उस राजसी सिंहासन को दर्शाता है, जिस पर यीशु यहूदियों के राजा के रूप में मरता है।

मंदिर के परदे का फट जाना सब जातियों के लिए परमेश्वर तक पहुँच के खुल जाने का प्रतीक है, जिसे भजन संहिता 2:8 के इस कथन से जोड़ा जा सकता है: "जातियों को निज भाग के रूप में देना"। यह खुलना यीशु की मृत्यु में होता है: अपने पुत्र के क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा परमेश्वर सब जातियों के सामने प्रकट होता है।

अंत में 15:39 में सूबेदार का अंगीकार आता है। यहूदी महायाजकों के विपरीत, सूबेदार को विश्वास करने के लिए किसी चिह्न की ज़रूरत नहीं, बल्कि वह क्रूस के नीचे विश्वास में आता है। केवल क्रूस के नीचे ही पाठक समझ सकता है कि यीशु कौन है और वह कैसा मसीहा था। इसी के साथ मरकुस में यीशु का सिंहासन पर बैठाया जाना पूरा होता है।

दूसरे भजन और मरकुस के सुसमाचार में से होकर इस यात्रा के अंत में हमें क्या कहना है? पुराने और नए नियम के पवित्र शास्त्र एक गुँथी हुई और अटूट एकता बनाते हैं। एक को दूसरे के बिना नहीं पाया जा सकता। भविष्यद्वाणी एक ईश्वरीय वास्तविकता है!

राजा आ चुका है और वह दूसरी बार आएगा। वह हमारा राजा है। आइए, हम बिना शर्त और सारे संसार के सामने यहीं और अभी इस बुलाहट का पालन करें, जिसका पालन शीघ्र ही सारा संसार करेगा:

11 भय मानते हुए यहोवा की सेवा करो, उसके सामने काँपो और उसकी जयजयकार करो!

12 उसके पुत्र का आदर करो, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे और तुम अपने गलत मार्ग पर नष्ट हो जाओ – क्योंकि उसका क्रोध शीघ्र ही आग बनकर तुम्हें भस्म कर देगा! धन्य हैं वे सब, जो उसमें शरण लेते हैं।

दाऊद पर की अटल कृपा, एक अनन्त वाचा के रूप में:

जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करूँगा, जो तेरे शरीर से उत्पन्न होगा, और उसके राज्य को स्थिर करूँगा। मेरे नाम का घर वही बनाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा। ... और तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा, तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी।

2 शमूएल 7:12-16

1 जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं? देश-देश के लोग ऐसी योजनाएँ क्यों बनाते हैं, जिनका विफल होना निश्चित है?

2 संसार के राजा आक्रमण के लिए तैयार खड़े हैं, और अधिकारी आपस में मिलकर यहोवा के और उस राजा के विरुद्ध, जिसका उसने अभिषेक किया है, युद्ध के लिए एका करते हैं।

6 वह कहता है: “मैंने स्वयं अपने राजा को यहाँ सिय्योन पर, अपने पवित्र पर्वत पर ठहराया है!”

7 तब राजा कहता है: “मैं यहोवा का निर्णय प्रकट करता हूँ; उसने मुझसे कहा है: ‘तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे उत्पन्न किया है।

8 मुझसे अपनी माँग कह, मैं उसे पूरी करूँगा! मैं सब जातियों को तेरी विरासत कर दूँगा, पृथ्वी उसकी अंतिम छोर तक तेरी निज भूमि होगी!

10 इसलिए अब, हे संसार के राजाओ, समझ जाओ, हे पृथ्वी के न्यायियो, चेतावनी मान लो!

भजन संहिता 2

दाऊद का भजन।

यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा:

तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ!

तेरे पराक्रम का राजदंड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा; तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर!

भजन संहिता 110:1-2

राजकीय भजनों में अभिषिक्त: 2:2; 20:6; 84:9; 89:38; 132:10

21 राजा का उपहार

यीशु ने प्रतिज्ञा की थी। जब वह जाएगा, जब वह यहाँ नहीं रहेगा और चेलों को उसके बिना काम चलाना होगा, तब वह आत्मा को भेजेगा। अपने प्रतिनिधि के रूप में। वही पवित्र आत्मा है। वह यीशु के साथ इतना एक है, उससे इतना जुड़ा है कि यीशु कह सकता है कि वह स्वयं उनके पास आएगा। यह आत्मा यीशु के समान परमेश्वर है, एक व्यक्ति, जो हर स्थान पर है। सर्वव्यापी। यीशु अब मुकुट पहने हुए प्रभु और राजा के रूप में इसी आत्मा के द्वारा उन सबके साथ सीधे उपस्थित है, जो उससे प्रेम करते हैं। अर्थात उनके साथ, जो उस पर विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं।

आत्मा के दिए जाने के इस दिन के लिए भी आज तक एक छुट्टी का दिन है। पूरा एक सप्ताहांत। इस ऐतिहासिक घटना का नाम पिन्तेकुस्त है। यह एक यहूदी पर्व है। ईस्टर, अर्थात यीशु के पुनरुत्थान, और पिन्तेकुस्त के पर्व के बीच पचास दिन होते हैं। चालीस दिन के बाद यीशु स्वर्ग में गया। दस दिन बाद वह यरूशलेम में प्रार्थना करते हुए चेलों पर आत्मा देता और भेजता है।

इसका अर्थ है स्वर्गीय संसार में राजा के राज्याभिषेक और सिंहासन पर बैठाए जाने का दस दिन का उत्सव। स्वर्ग और उसके निवासी जयजयकार करते हैं। पुत्र लौट आया है और जो करना था, संसार को बचाने के लिए, वह पूरा कर चुका है। इसका उत्सव मनाना ही चाहिए। और इसका प्रतिफल भी मिलना चाहिए। पिता अपने पुत्र को – सबसे ऊँचे सम्मान के स्थान के साथ – पवित्र आत्मा का उपहार देता है।

यह आत्मा अब राजा का हाथ और आँख है। सारी पृथ्वी पर भेजा गया। जहाँ आत्मा है, वहाँ मसीह है। वह हर स्थान पर सक्रिय है। ढूँढ़ता है, सहायता करता है, छुड़ाता है, प्रकाश देता है, विपत्ति को रोकता है और वहाँ न्याय भी लाता है, जहाँ अन्याय की कोई सीमा नहीं रही।

इसी आत्मा के द्वारा वह शासन करता है, मसीहा-राजा। उसका शासन वास्तविक है। उसके अपने लोगों के बीच, जो उसके प्रति निष्ठावान हैं। उसके राज्य में, जो – जब तक राजा लौट नहीं आता – अदृश्य है। क्योंकि राजनीतिक रूप से इस संसार के बड़े लोग शासन करते हैं। यीशु के प्रति निष्ठावान लोग अक्सर दबाए जाते हैं। यहाँ तक कि सताए भी जाते हैं। वे, जैसे कभी स्वयं यीशु, एक दुःख उठानेवाले राज्य के हैं।

परमेश्वर का आत्मा, जिसे राजा ने भेजा और दिया है, इस बात का प्रमाण है कि वही राजा है, परमप्रधान, मरे हुओं में से पहलौठा। वह, जिसने अब जी उठे मनुष्य के रूप में वह सारा प्रताप और ईश्वरीय धन फिर से पा लिया है, जो उसके आने से पहले और संसार के होने से पहले उसके पास था। यह सब तो उसने मनुष्य बनते समय पीछे छोड़ दिया था। उसने स्वेच्छा से त्याग किया था। ठीक इसी महिमा की गवाही और पुष्टि मसीह का आत्मा पृथ्वी पर करता है। विशेषकर वहाँ, जहाँ मनुष्य इसकी लालसा करते हैं।

परमेश्वर का यह जीवित आत्मा – या मसीहा का आत्मा – वह बंधन है, जो उसे पृथ्वी पर उसके चेलों से दृढ़ता से जोड़ता है। इस एकता और संगति के लिए दूरियाँ कोई बाधा नहीं हैं। जहाँ कहीं मनुष्य सुसमाचार सुनते हैं और उससे छुए जाते हैं, आत्मा मसीहा-राजा की गवाही देता है।

आत्मा चेलों के लिए राजा के प्रति विश्वासयोग्य रहने का सामर्थ्य है। वह उनका अगुवा है, उनका प्रशिक्षक, उनका रक्षक और सहायक वकील।

इस आत्मा के बारे में कई चुटकुले सुनने को मिलते हैं। जहाँ अकथनीय, परन्तु बिल्कुल महत्वहीन घटनाएँ होती हैं, कहा जाता है कि उनके पीछे वही है। मानो एक भूत। महत्वपूर्ण यह रहता है कि यह आत्मा बिना रुके सक्रिय है। ईश्वरीय, असीमित संभावनाओं के साथ। ताकि मनुष्य व्यक्तिगत रूप से राजा से मिलें। और उसके राज्य में घर लौट आएँ। वह सबके लिए खुला है। विशेष रूप से निर्बल आमंत्रित हैं। संदेह करनेवाले। ऐसे लोग, जिन्होंने सब कुछ पूरी तरह बिगाड़ दिया है। पापी, जो जानते हैं कि वे पापी हैं। भले लोग भी, जो अभी नहीं जानते कि उन्हें भी उसकी उतनी ही ज़रूरत है।

परमेश्वर का यह आत्मा, मसीह का यह आत्मा, यीशु के हृदय के साथ और पिता के हृदय के साथ सबसे आगे की पंक्ति में सक्रिय है, जब बात संसार के उद्धार की हो। हम असीम रूप से चकित होते, यदि हम अदृश्य को एक विशेष चश्मे से और रंगों में देख पाते। दूसरी ओर, यह सोचा भी नहीं जा सकता कि हमारा संसार कैसा दिखता, यदि यह आत्मा राजा की ओर से उपहार में न दिया गया होता।

इसलिए परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है: “जब वह ऊँचे पर चढ़ा, तो उसने बंधुवाई को ही बंदी बना लिया और इसके बदले मनुष्यों को उपहार दिए।

इस कथन का क्या अर्थ है: ‘वह ऊपर चढ़ा?’ यही न कि वह पृथ्वी के सबसे निचले भागों में भी उतरा था!

जो नीचे उतरा, वही है जो ऊपर भी चढ़ा, सब आकाशीय लोकों से बहुत ऊपर, ताकि वह सारे विश्व को पूरी तरह भर दे।

इफिसियों 4:8-10

यूहन्ना 14:18, 28; 16:4, 7; प्रेरितों के काम 1:5-8; 2; 5:32; प्रकाशितवाक्य 1:4; 5:6; 2 कुरिन्थियों 3:17।

22 राजा – उदार दाता और उपहार

प्राचीन काल में अच्छा और आदर्श राजा अपनी उदारता से पहचाना जाता था, जिसके द्वारा वह स्वाभाविक रूप से अपने लिए सम्मान और बदले में निष्ठा जैसी चीज़ें भी माँगता था। उस समय ऐसा ही चलता था। प्राचीन काल का आदर्श राजा एक उदार उपकारी है, जो अपनी प्रजा के कल्याण के लिए काम करता है। अन्य बातों के साथ वह खुली उदारता के प्रदर्शन के द्वारा शासन करता था। शायद यह वास्तविकता से अधिक एक घिसी-पिटी छवि थी।

यीशु मसीह है, राजसी मसीहा, दाऊद के वंश से अभिषिक्त राजा। इसलिए जब मसीह की बात होती है, तो राजा का विषय कमोबेश उपस्थित रहता है। इस्राएल और सारे संसार के राजा के रूप में।

रोमियों की पत्री कई स्थानों पर राजा के विषय का प्रयोग करती है। इसकी नींव वह ठीक आरंभ में 1:3-4 में रखती है:

> ... परमेश्वर के उस सुसमाचार का प्रचार करने के लिए, जिसकी प्रतिज्ञा उसने बहुत पहले से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में की थी – अपने पुत्र का सुसमाचार, जो शरीर के भाव से दाऊद के वंश से है, परन्तु पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के समय से सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहराया गया है: हमारे प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार।

इसी पर वह बार-बार लौटता है और फिर इसी पर आगे बनाता है। इसी के साथ पत्री समाप्त भी होती है, उसके साथ, जो राजसी रीति से शासन करेगा, जिस पर जातियाँ आशा रखेंगी (रोमियों 15:7-13)। उसके दुःख और बलिदान के लिए उसकी तत्परता परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को चुप नहीं रहने दे सकते: परमेश्वर उसे सिंहासन देकर ब्रह्मांड पर प्रभुता देता है। सबसे आरंभ में आदम का शासन आज्ञा न मानने, पाप और मृत्यु से चिह्नित है। मसीह का शासन इसके विपरीत आज्ञाकारिता, धार्मिकता और जीवन से। मृत्यु उसे रोक न सकी, वह परमेश्वर की महिमा के द्वारा जिलाया गया और अब परमेश्वर की दाहिनी ओर सिंहासन पर बैठाया गया है। पौलुस की राजसी आदर्श-कल्पना मानो एक कार्यक्रम है, यह रोमियों 5-8 में और पूरी पत्री में एक मसीहाई संवाद है।

रोमियों 5:1-11 उस सबका सारांश है, जो वहाँ तक कहा गया, और साथ ही उसकी नींव, जो उसके बाद आता है। यह पाठ पद 1 और 11 में इन्हीं शब्दों से घिरा है: “हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा” (जैसे पूरी पत्री 1:1-7 और 15:7-13 के बीच राजसी रीति से घिरी है)। पौलुस के इस पाठ को राजसी उपकार या उदारता की दृष्टि से देखा जा सकता है। इससे उस पर एक विशेष प्रकाश पड़ता है और मूल पाठकों ने शायद इसे ऐसे ही समझा भी था।

सर्वश्रेष्ठ राजसी उपहार उसके अनुयायियों को छुड़ाता है, सक्षम बनाता है और सुरक्षित रखता है। मसीह और उसके अपने लोगों के साथ भी ऐसा ही है।

आदर्श राजा अपनी प्रजा या किसी नगर के लिए शान्ति और मेल-मिलाप लाता था। इसलिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल है। उसके द्वारा, राजसी उपकारी के द्वारा, हमें परमेश्वर तक पहुँच मिली है। राजा के निजी कक्षों तक पहुँच। वहाँ हमें नागरिकता मिली है, हम वहाँ रह सकते हैं, 24/7। जो योग्य नहीं था, अनजाना और महत्वहीन था, या शत्रु था, उसके लिए यह प्रवेश हर संभावना से परे था।

पौलुस मसीहा का वर्णन करता है कि वह एक बलिदान चढ़ाता है, जैसा प्राचीन काल में राजा भी करते थे। परन्तु यह बलिदान वह स्वयं है, अपना जीवन देकर। ऐसा हो सकता था कि कोई राजा युद्ध में अपनी प्रजा के लिए अपने आप को बलिदान कर दे या इसके लिए तैयार हो। कम से कम वह अपनी प्रजा से, विशेषकर अपने सैनिकों से, इसकी अपेक्षा करता था।

परन्तु जो प्राचीन काल के उदार राजा के हर सामान्य ढाँचे को पीछे छोड़ देता है, वह यह है कि यहाँ उपकार किसे मिलता है। ये वे धर्मी और योग्य या सम्मानित लोग नहीं हैं, जिन पर राजाओं का अनुग्रह होता था। यहाँ ये पापी हैं, शत्रु हैं, ऐसे लोग, जो मृत्यु के योग्य दोषी हैं। यही बड़ा आश्चर्य है: एक राजा अपने शत्रुओं के लिए मरता है और यह अपेक्षा भी नहीं कर सकता कि वे उसकी सेवा करें, जैसा प्राचीन काल में होता था। क्योंकि वहाँ उपहार इस अपेक्षा से दिया जाता था कि बदले में कुछ मिले, चाहे किसी भी रूप में। कम से कम उदारता ऐसे ही चलती थी।

दुःखों का विषय भी इसी राजसी संवाद के भीतर उठाया गया है। राजसी उपहार का सामान्य रूप से अर्थ होता, दुःखों का अंत करना। परन्तु यहाँ दुःख बने रहते हैं, क्योंकि उनका पूरी तरह अंत परमेश्वर के मसीहाई राज्य के महिमामय भविष्य में ही होगा। दुःखों में धीरज रखना, और दुःखों पर घमंड करना, यह राजा के प्रति, हमारे मसीह के प्रति, निष्ठा प्रकट करने का एक ढंग है।

1 इसलिए अब हम भरोसे के आधार पर धर्मी ठहरे हैं। इसके द्वारा हमारे प्रभु, मसीहा यीशु, के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल है।

2 उसके द्वारा, अपने भरोसे के आधार पर, अब हमें परमेश्वर के अनुग्रह के इस अनुभव तक खुली पहुँच भी मिली है। उसमें हम दृढ़ खड़े हैं और गर्व के साथ परमेश्वर की अद्भुत महिमा की आशा पर भरोसा रखते हैं।

7 ऐसा बहुत कम होता है कि कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य के लिए, किसी धर्मी के लिए, मृत्यु में जाए। हाँ, शायद कोई मनुष्य किसी सचमुच भले मनुष्य के लिए मरने का साहस करे।

8 परन्तु परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाया, इसके द्वारा कि मसीहा हमारे लिए मृत्यु में गया, जब हम अभी व्यवस्था का उल्लंघन करनेवाले थे।

10 क्योंकि बात यह है: जब हम अभी परमेश्वर के शत्रु थे, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र की बलिदानी मृत्यु के द्वारा हमें फिर से अपने साथ मेल-मिलाप में ले लिया। और इसका अर्थ यह भी है कि अब, जब हमारा उसके साथ मेल हो गया है, तो हम उसके जीवन के द्वारा और भी अधिक उद्धार का अनुभव करेंगे।

11 और केवल इतना ही नहीं! बल्कि हम अपने प्रभु, मसीहा यीशु, के द्वारा परमेश्वर के बारे में भी गर्व से बोलते हैं। क्योंकि उसी के द्वारा तो हमारा मेल-मिलाप हुआ है!

रोमियों 5:1-11

और परमेश्वर की पुस्तक में एक और स्थान पर लिखा है: “हे जाति-जाति के लोगो, उसकी प्रजा के साथ आनंद करो!”

और एक और स्थान पर: “हे सब जातियो, प्रभु परमेश्वर की स्तुति करो, और सब देशों के लोग उसकी प्रशंसा करें!”

भविष्यद्वक्ता यशायाह भी कहता है: “वह, जो वास्तव में यिशै का मूल है, जाति-जाति पर शासन करने के लिए उठेगा। हाँ, जातियाँ उस पर आशा रखेंगी!”

रोमियों 15:10-12

23 राजा का धन

एक राजा धनी होता है। सामान्यतः। उसके पास बड़ी संपत्ति होती है। परन्तु एक नश्वर संसार में धन क्या है? और धन का क्या मूल्य है, यदि वह अपनी ही प्रजा से लूटा गया हो? यदि केवल थोड़े लोग धनी हों, परन्तु बहुत से गरीब?

मसीहा-राजा यीशु परमेश्वर का पुत्र है। वह वारिस है, जिसे सब कुछ मिलता है। पूरा ब्रह्मांड। जो कुछ भी अस्तित्व में है। वह उसी का है।

धन केवल भौतिक संपत्ति नहीं है। नैतिक और चारित्रिक गुण भी हैं, जिनमें कोई गरीब या धनी हो सकता है। भलाई, अनुग्रह, प्रेम और न्याय, सच्चाई और मित्रता, उदारता और बुद्धि वे गुण हैं, जिनकी कोई राजा में कामना करता है। यीशु ने उन्हें मनुष्य के रूप में जिया। ये स्वभाव-गुण उसमें बने रहे, परमप्रधान के रूप में भी वह वैसा ही बना रहा, जैसा सुसमाचार उसका वर्णन करते हैं।

सत्ता और धन अक्सर मनुष्यों को बदल देते हैं। सदा भलाई की ओर नहीं। यीशु युगानुयुग एक-सा था, है और रहेगा। हम मनुष्यों के लिए यह शुभ संदेश है। एक स्थिर बिंदु। हमारे लिए वह, जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं।

उसकी महिमा का धन सोने, चाँदी और क्रिप्टो-मुद्रा से बढ़कर है। उसका धन नई सृष्टि है, मृत्यु और नश्वरता के उस पार।

यह पढ़ना प्रभावशाली है कि वह उन मनुष्यों को, जिनके लिए वह मरा और जो विश्वासयोग्य अनुयायियों के रूप में उसके प्रति समर्पित हैं, अपना धन मानता है। अपनी बहुमूल्य निज संपत्ति। यदि हम ईमानदारी से कहें, तो मनुष्य ही सबसे बड़ा धन हैं। वे हमारे जीवन को धनी बनाते हैं, उनके बिना हम गरीब होते।

यीशु धनी बनाता है। वह अपना सारा धन, अपना सम्मान का स्थान, उन सबके साथ बाँटता है, जो उसके होना चाहते हैं। आप तो जानते हैं, बाइबल का एक वचन कहता है, कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह किस बात में प्रकट हुआ: वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बना, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।

जब भली बातों की बात आती है, तो हमारे पास, या हम में से अधिकतर के पास, देने को बहुत कुछ नहीं है। ईमानदारी से मान लें: हम भिखारी हैं। और वह वह राजा है, जो गरीब बन गया। मार्क ट्वेन (Mark Twain) की “राजकुमार और भिखारी” (“The Prince and the Pauper”) राजकुमार एडवर्ड की शानदार कहानी है, जो अपने कपड़े भिखारी लड़के टॉम के कपड़ों से बदल लेता है। एक भूल से उसे टॉम समझ लिया जाता है और फिर वह एक भिखारी का जीवन जीता है। एक कमज़ोर तुलना, फिर भी

सटीक। यीशु स्वर्गीय महिमा, अनन्त तेज को पीछे छोड़ देता है। वह उससे लिपटा नहीं रहता। स्वेच्छा से वह यह सब त्याग देता है, ताकि हम तक पहुँचे। ताकि हम बिल्कुल निकट से देखें और सुनें कि वह कितनी गंभीरता से यह चाहता है। हमारा धन उसका लक्ष्य था।

अब वह फिर वहीं है, जहाँ से वह आया था। जो कुछ उसके पास था, वह उसे वापस मिल गया। अब मनुष्य के रूप में। ताकि वह उसे मनुष्यों के साथ बाँट सके। उसका धन उसकी व्यक्तिगत महिमा है, प्रभु की महिमा (जर्मन में HERRlichkeit)। उसकी पवित्रता भी। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने एक दर्शन देखा, जिससे वह काँप उठता है। वह प्रभु को ऊँचे और महान सिंहासन पर बैठे देखता है। स्वर्गदूत उसे घेरे हुए हैं और उसकी सेवा करते हैं। स्वर्गदूत सिंहासन पर बैठनेवाले के विषय में पुकारते हैं: पवित्र! पवित्र! पवित्र! यशायाह इतना घबरा जाता है कि कहता है: हाय मुझ पर, मैं पापी मनुष्य हूँ। क्योंकि मेरी आँखों ने वह देखा है, जो वास्तव में देखा नहीं जा सकता: क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है।

मसीहा-राजा एक मेम्ने के समान है। परन्तु साथ ही एक सिंह के समान भी। उसकी महिमा जंगली, अदम्य और भयभीत करनेवाली है, परन्तु साथ ही प्रेमपूर्ण, कोमल और मित्रवत भी। परमेश्वर और उसका मसीह हमारे लिए एक भेद भी बने रहते हैं। वह उससे बड़ा है, जितना हम सोच सकते हैं। हमें डरने की ज़रूरत नहीं। श्रद्धा-भय अवश्य। यशायाह के पाप क्षमा किए गए। जब यीशु अपने लहू से हमें शुद्ध करता है, तो हम उसके प्रकाश में जी सकते हैं। सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।

उसका धन हमारा धन है। वह केवल उदार ही नहीं, जब उसके लोगों की बात हो, तो वह दिल खोलकर लुटानेवाला है। आइए, हम निकल पड़ें और इस धन को जानें। कैसा राजा, जो कर वसूल नहीं करता, बल्कि अपने राज्य के सब निवासियों को उपहार देता है!

हे प्रभु, तेरे समान कोई नहीं! तू महान है और अपने सामर्थ्य के लिए प्रसिद्ध है। हे सब जातियों के राजा, कौन तेरा भय न माने और तेरा आदर न करे? यह तेरा अधिकार है, क्योंकि संसार के सब बुद्धिमानों और राजाओं में कोई भी तेरी बराबरी नहीं कर सकता।

यिर्मयाह 10:6-7

भजन संहिता 50:10; इब्रानियों 1:2; 13:8; 2 कुरिन्थियों 8:9; यशायाह 6:1-7; यूहन्ना 17:22; इफिसियों 2:6-7।

24 हमारा राजा: मध्यस्थ और विनती करनेवाला

एक राजा को देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ माना जाता था। प्राचीन काल में संसार-दर्शन और विश्वास ऐसा ही था। उसकी मध्यस्थ की भूमिका सबसे ऊँचे पद के याजक के कार्य में प्रकट होती थी। औगुस्तुस (Augustus) और उसके सुसमाचार के बारे में हम पहले ही सुन चुके हैं। वह पहला सम्राट है, जो पोंटिफ़ेक्स मैक्सिमस (Pontifex maximus) की उपाधि ग्रहण करता है और इस प्रकार सम्राट के रूप में अपने आप को धार्मिक प्रमुख भी बना लेता है।

पोंटिफ़ेक्स मैक्सिमस की उपाधि मूल रूप से प्राचीन रोमी देव-पूजा के सर्वोच्च संरक्षक के लिए थी और फिर रोमी सम्राटों को मिल गई। उस समय राजनीति और धर्म आपस में गहराई से गुँथे हुए थे। इस प्रकार, बाबेल में निम्रोद से लेकर मिस्र के फ़िरौनों तक, धर्म और राजनीति एक ही हाथ में थे।

पोंटिफ़ेक्स का अर्थ है पुल बनानेवाला। वह देवताओं के संसार के साथ संबंध बनाए रखता था।

ये सब कार्य और सम्मान के पद यीशु, मसीह, में सिद्ध रीति से एक हो जाते हैं। वह केवल पुरानी वाचा की हारूनी याजक-सेवा का अंत नहीं है। वह हर देव-पूजा का अंत है, उसकी याजक- और बलिदान-सेवाओं के साथ, जैसी रोमियों में और बाकी जातियों में प्रचलित थी और सर्वव्यापी और रोज़मर्रा का विश्वास थी।

मसीह ही है, जो अपनी प्रजा को परमेश्वर के पास ले आया है। वही है, जो महायाजक के रूप में, कहें तो पोंटिफ़ेक्स मैक्सिमस के रूप में, अपनी प्रजा के लिए परमेश्वर के सामने विनती करता है। वह हमारे लिए बीच में खड़ा होता है और हमारे लिए परमेश्वर की आशीष और सहायता माँगता है। वह राजसी याजक के रूप में स्वर्गीय पवित्रस्थान से निकलकर अपनी प्रजा के पास आता है और हमें आशीष देता है।

वह हमारे लिए ऐसी विनती करता है, जैसी कोई और नहीं कर सकता। वह हमें समझता है, हमारे हृदय और मन को जानता है, जानता है कि हमें किस बात की कमी है, और इस सबके साथ हमें परमप्रधान के सिंहासन तक ले आता है। इसलिए उसके पास हम सबसे सुरक्षित हाथों में हैं। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है। वही है, जिसने परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित किया है और अपने लहू के द्वारा, जो क्रूस पर बहाया गया, शान्ति स्थापित की है।

क्योंकि यीशु लेवी के गोत्र से नहीं आता और हारून के परिवार का नहीं है, बल्कि यहूदा के राजसी गोत्र में जन्मा है, इसलिए परमेश्वर ने एक नई याजकीय रीति ठहराई है। इसे उसने हारूनी याजकपद से बहुत पहले ही तैयार कर रखा था, या संभव बना दिया था। अब मसीह मलिकिसिदक की रीति पर याजक है। वह अब्राहम के समय में रहता था और उससे, विश्वासियों के पिता से, मिला था। वह शालेम का राजा और परमप्रधान का याजक था। अर्थात एक ही व्यक्ति में राजा और याजक। इस “दोहरी भूमिका” में वह प्रभु यीशु मसीह का एक पूर्व-चित्र है। उसे परमेश्वर ने सदा के लिए याजक और राजा ठहराया है।

परन्तु वह, क्योंकि वह युगानुयुग बना रहता है, अविनाशी याजकपद रखता है। इसी कारण वह उन्हें, जो उसके द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, बिना किसी सीमा के उद्धार देने में भी समर्थ है। क्योंकि वह सदा जीवित है और इसलिए उनके लिए निरंतर विनती करता है।

इब्रानियों 7:24-25

1 पतरस 3:18; इब्रानियों 2:17; 4:14-16; 5:5-10; 7:25; 8:6; 9:15; 12:24; रोमियों 8:34; 1 तीमुथियुस 2:5; उत्पत्ति 14; भजन संहिता 110:4।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Heilig, Heilig, das Lamm Gottes

Das geopfert ist

Lob und Ehre, sei Dir dem König

Auf dem Gnadenthron

Die ganze Schöpfung singt und

Preist dich, den König

Du bist mir alles Herr

Und ich will dich ehren

पाठ: आन्या लेहमान (Anja Lehmann)

25 राजा की बुद्धि

एक प्रजा के लिए उसका राजा सब मनुष्यों में सबसे बुद्धिमान था। चाहे यह केवल एक अफ़वाह ही क्यों न हो। राजा अपनी प्रजा का सर्वोच्च न्यायी भी था। अंतिम निर्णय उसी का होता था। उसके निर्णय के परिणाम मनुष्यों पर पड़ते थे, इसलिए उसे सच्चा और न्यायपूर्ण होना था।

बहुत समय पहले दो स्त्रियाँ राजा सुलैमान के सामने खड़ी थीं। वे एक नवजात शिशु के लिए झगड़ रही थीं। दोनों ने एक-एक बच्चे को जन्म दिया था। एक मर गया। मरे हुए बच्चे की माँ ने चुपके से मरे हुए को जीवित से बदल दिया। ठगी गई माँ यह तुरन्त समझ जाती है। परन्तु बिना डीएनए-परीक्षण के वह ठगी को कैसे सिद्ध करती? सुलैमान कैसे निर्णय करता, जब वह वहाँ उपस्थित नहीं था, जब कोई गवाह नहीं था? सुलैमान बच्चे को दो भागों में काटने के लिए एक तलवार लेता है। हर स्त्री के लिए आधा। स्त्रियों की प्रतिक्रिया से वह समझ जाता है कि सच्ची माँ कौन है। सच्ची माँ बच्चे को बचाना चाहती है, चाहे ठगनेवाली को बच्चा मिल जाए। परन्तु दूसरी को कोई परवाह नहीं कि बच्चे को मार दिया जाए। चकित कर देनेवाली बुद्धि। सुलैमान ने परमेश्वर से धन और सत्ता नहीं, बल्कि बुद्धि माँगी थी। वह उसे दी गई। निकट और दूर से लोग उससे सलाह माँगने आते थे।

यीशु ने एक बार कुछ कहा, जिसे पढ़ते हुए लगभग अनदेखा कर दिया जाता है: “क्योंकि वह – शीबा की रानी – सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए पृथ्वी की छोर से आई – और देखो, यहाँ वह है, जो सुलैमान से भी बड़ा है!” यीशु अपनी बुद्धि से लोगों को प्रभावित करता था। जब वह बोलता और उपदेश देता था, तो एक दूसरा संसार खुल जाता था। शास्त्रियों के संसार से भिन्न। बुद्धि का आत्मा उसके द्वारा बोलता था। उसकी बुद्धि स्वर्ग से थी, शुद्ध, सीधे-सादे लोगों के लिए। लोगों के सिरों के ऊपर से गुज़र जानेवाली ऊँची बातें नहीं। उसके वचन सबसे निर्मल झरने के पानी के समान थे। ताज़गी देनेवाले, जीवन देनेवाले, शुद्ध करनेवाले।

मसीह में, मसीहा-राजा में, हमारा सामना परमेश्वर की बुद्धि से होता है। वह हम मनुष्यों की चिंता में लगी है, क्योंकि हम बिना किसी मार्ग के संकट में हैं। उसकी बुद्धि हमारी सुधि लेती है। और हमें स्वतंत्रता में ले जाती है। एक सच्चा निर्गमन। राजा हमें बाहर ले जाता है। वह मार्ग जानता है। उसमें, जैसा प्रेरित पौलुस कहता है, बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे हैं। उसके पास रहना, उसकी सुनना, सबसे उत्तम निर्णय है, जो कोई ले सकता है।

बुद्धि वह गुण है, जो ज्ञान और अनुभव को दैनिक जीवन में उतारता है और अच्छे निर्णय लेता है। ऐसे निर्णय, जो सबके लिए अच्छे हों। भविष्य के लिए टिकाऊ। चाहे आज उनका अर्थ दर्दनाक कटौती और त्याग ही क्यों न हो।

राजनेताओं के लिए हम बुद्धि की कामना करते हैं। अपने राजा के नाम से हम उन्हें बुद्धि की आशीष देते हैं। उनका कार्य विशेषाधिकार से अधिक चुनौती है। किसके पास सबसे अच्छे हल हैं, किसके पास वे उत्तर, जिनकी शासकों को किसी राष्ट्र को कठिन समयों में से ले जाने के लिए ज़रूरत है? हमारे राजनेताओं के लिए भी स्वर्ग खुला है कि वे सुलैमान की विनती को दोहराएँ।

जो अनुभव करता है कि उसमें बुद्धि की कमी है, वह इस राजा से, सब युगों के सबसे बुद्धिमान राजा से, इसे माँगे! वह कहता है कि वह इसे हर उस व्यक्ति को खुशी से देता है, जो माँगता है। बिना ताने दिए। असफलता और पाप, जिन्हें हम मान लेते हैं, उसके लिए बुद्धि रोक रखने का कोई कारण नहीं हैं।

कैसा राजा, जो अपनी बुद्धि में से बाँटता है और उसे अपने ही पास नहीं रखता! आइए, हम उससे सीखें। बुद्धि ज्ञान से बढ़कर है। वह राजा के साथ-साथ जिया जानेवाला जीवन है। उसकी संगति में, जो बुद्धि कहलाता है, जो पृथ्वी के होने से पहले परमेश्वर के पास थी। इस प्रभु का भय मानना बुद्धि का आरंभ है।

परन्तु जो बुद्धि ऊपर से आती है, वह पहले तो शुद्ध और निर्मल होती है; फिर शान्ति-प्रिय, मित्रवत, नम्र होती है। वह दया से भरी होती है और बहुत से अच्छे काम उत्पन्न करती है। उसमें न पक्षपात होता है, न कपट।

याकूब 3:17

1 राजाओं 3:5-10; 16-28; 5; लूका 11:31; कुलुस्सियों 2:3; मरकुस 1:22; नीतिवचन 1:7; 8:22-30; 1 कुरिन्थियों 1:30; याकूब 1:5; 3:13-17; प्रकाशितवाक्य 5:12।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

EIN KÖNIG VOLLER PRACHT,

Voll Weisheit und voll Macht.

Die Schöpfung betet an, die Schöpfung betet an.

Er kleidet sich in Licht. Das Dunkel hält ihn nicht

Und flieht, sobald er spricht, und flieht, sobald er spricht.

So groß ist der Herr, sing mit mir.

So groß ist der Herr.

Ihn preisen wir.

So groß, so groß ist der Herr.

Von Anbeginn der Zeit bis in die Ewigkeit

Bleibt er derselbe Gott, bleibt er derselbe Gott.

Als Vater, Sohn und Geist, den alle Schöpfung preist,

Als Löwe und als Lamm, als Löwe und als Lamm

पाठ: आर्ने कोपफ़रमान (Arne Kopfermann)

26 यीशु की राजसी व्यवस्था

प्राचीन यूनानियों के लिए, और यहूदियों के लिए भी, अच्छा राजा वह था, जो अच्छे नियम बनाता था। और स्वयं भी उनका पालन करता था। यदि यीशु एक राजा है, तो उसने कौन-से नियम बनाए? क्या वह एक व्यवस्था देनेवाला था? यीशु ने अपने यहूदी समकालीनों को चौंका दिया, जब उसने तथाकथित पहाड़ी उपदेश में यह कहा:

> "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था: अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने शत्रु से बैर। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ: अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने पिता की संतान ठहरोगे, जो स्वर्ग में है; क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।"

रोमियों से प्रेम करें? यह तो चौंका देनेवाली बात है। यह सब कुछ उलट देता है। शत्रुओं से प्रेम करने की आज्ञा देना एक बात है, परन्तु उसे जीना दूसरी। यीशु के दुःखभोग की कहानी सिद्ध करती है कि वह अपनी आज्ञा का स्वयं भी पालन करता है। यद्यपि उसके माँगने पर स्वर्गदूतों की बारह पलटनें यीशु को बचाने के लिए तैयार खड़ी हो जातीं, वह छुड़ाए जाने से इनकार कर देता है। वह अपना बचाव नहीं करता। क्रूस पर अपनी मृत्यु की घड़ी में वह अपने यातना देनेवालों के लिए प्रार्थना करता है:

> हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।

मसीहा-राजा देहधारी व्यवस्था था। वह लोगोस (Logos) था, अर्थात परमेश्वर का वचन। अपने पहाड़ी उपदेश में, जो मानो उसके राज्य का घोषणा-पत्र है, वह दिखाता है कि शत्रुओं से प्रेम स्वर्गीय पिता का स्वभाव है। और सदा से था। उसने केवल प्रेम की आज्ञा ही नहीं, बल्कि शत्रुओं से प्रेम की आज्ञा भी जी। उसके समान व्यवहार करना इस पिता का पुत्र और पुत्री बनने की शर्त है। एकलौता पुत्र, परमेश्वर का उप-शासक, अपने पिता के इसी स्वभाव को साकार करता है। प्रेम पिता के राज्य की धड़कन है, जो अपने पुत्र से प्रेम करता है। और इस प्रेम को अपने राज्य का मापदंड बनाता है।

राजा के रूप में यीशु ने अपनी प्रजा को एक नई आज्ञा दी, जिसे उसने स्वयं जीकर दिखाया:

> "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।"

याकूब, यीशु का सगा भाई, यह समझ गया था और लिखता है:

> यदि तुम पवित्रशास्त्र के अनुसार सचमुच उस राज-व्यवस्था को पूरी करते हो: “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख”, तो अच्छा करते हो।

यह राजा पूरी तरह वही था, जो वह कहता और माँगता था। कोई मनमानी आज्ञा नहीं, केवल व्यवस्था देनेवाला होने का अधिकार दिखाने के लिए। उसकी आज्ञा बिना शर्त का प्रेम है, जो शत्रुता पर जय पा सकता है और मनुष्यों को ऐसे बदल सकता है, जैसे और कुछ नहीं।

उसके राज्य में उसकी व्यवस्था लागू होती है। सदा। जहाँ उसका पालन नहीं किया जाता, वहाँ उसका राज्य नहीं है। और जो इस आज्ञा का पालन नहीं करता, वह इस राज्य का नहीं है।

मसीह की, मसीहा-राजा की, व्यवस्था का अर्थ है दूसरे का बोझ उठाना। यह स्वतंत्रता की व्यवस्था है। अर्थात एक ऐसी व्यवस्था, जो स्वतंत्र करती है। हम स्वयं से। और शायद पड़ोसी को उसके बोझ से। जैसे राजा ने हमारे बोझ के साथ किया, जिसे उसने हमसे उठा लिया।

कौन ऐसा राजा नहीं चाहेगा?

> तो, यदि तुम सचमुच उस राजसी व्यवस्था के अनुसार चलते हो, जैसी पवित्रशास्त्र में लिखी है: “अपने संगी मनुष्यों से अपने समान प्रेम कर!”, तो तुम अच्छा और ठीक करते हो।

याकूब 2:8

मत्ती 5:43-48; 26:53; लूका 23:34; यूहन्ना 1:1-3; कुलुस्सियों 1:13; यूहन्ना 13:34; याकूब 1:25; 2:8, 12; गलातियों 6:2।

27 राजा का आदेश

एक राजा इच्छाएँ प्रकट करता है, जिन्हें आदेश समझा जाता है। वह अपनी प्रजा को कार्य सौंपता है। वे जितना अच्छा हो सके, वह पूरा करते हैं, जो वह माँगता है। जब यीशु स्वर्ग गया, तो उसने अपने चेलों को एक आदेश दिया:

> “उसे देखकर उन्होंने (चेलों ने) उसे दण्डवत किया; परन्तु कुछ को अभी भी संदेह था। यीशु ने उनके पास आकर कहा:
>
> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।
>
> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को मेरा चेला बनाओ; उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें मानना सिखाओ, जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है।
>
> और निश्चित जानो: मैं हर दिन तुम्हारे साथ हूँ, जगत के अंत तक।”

वास्तव में यहाँ स्वर्ग और पृथ्वी का राजा खड़ा है – और किसके पास सारा अधिकार है, केवल पृथ्वी पर ही नहीं, स्वर्ग में भी? परन्तु इस सत्ता का प्रयोग वह पृथ्वी के राजाओं और जातियों को अधीन करने के लिए नहीं करता। नहीं, जो शत्रुओं से प्रेम की आज्ञा देता है, वह मनुष्यों को जीतना चाहता है। विवश करना नहीं। वह अपनी सत्ता का प्रयोग इसलिए करता है कि सब जातियाँ पहचानें कि वह कौन है और कैसा है।

अंततः उसकी सत्ता और उसका अधिकार सर्वव्यापी और वास्तविक हैं। यह राजा इस ग्रह के इतिहास को किसी भी दिन समाप्त कर सकता है। वह संसार को अपनी सत्ता और प्रभुता देखने और अनुभव करने दे सकता था। तानाशाह ऐसा ही करते हैं। उसका शासन भिन्न है। उसकी व्यवस्था स्वतंत्रता की व्यवस्था है। मनुष्य पूरे विश्वास के साथ यीशु के पीछे चलें और उसका आदर करें।

राजा का सपना है कि सब मनुष्य उसे जानें और उसके चेले बनें। ताकि वह उन्हें वह दे, जो उन्हें और कहीं नहीं मिल सकता: अनुग्रह, क्षमा, अनन्त जीवन, स्वतंत्रता, विश्राम।

मनुष्य इस राजा को, जो उनके लिए है, कैसे जान सकते हैं? सब चेलों को यह विशेषाधिकार है कि वे मनुष्यों को इस राजा तक ले आएँ। आइए, एक बार इसकी शाब्दिक कल्पना करें। एक ओर ब्रह्मांड के राजा की कृपा पाना, उसे व्यक्तिगत रूप से, हाँ, निजी रूप से भी जानना, 24/7, सदा और बिना रुकावट उसके दरबार में उपस्थित होना। और उन सबको साथ ला सकना, जो इसके बारे में पूछते हैं या हमारे द्वारा इसके बारे में जानते हैं। उन्हें राजा के पास ले जाना! और यह जानना कि उसके पास वे सब स्वागत से भी बढ़कर स्वागत पाते हैं। क्योंकि वह हर एक की प्रतीक्षा करता है।

और फिर भी यह भी: यह मसीहा-राजा यीशु अब संसार पर अपनी निज संपत्ति के रूप में दावा कैसे करता है? शुभ समाचार के साथ राजदूतों को संसार में भेजकर। वे सच्चे राजा का प्रचार करते हैं और इसके साथ विश्वास से उत्पन्न आज्ञाकारिता का। इस प्रकार सुसमाचार एक आदेश के समान भी है, जिसका पालन किया जाता है। संदेश स्पष्ट है: सांसारिक सम्राट और उसके आदेशों का पालन किया जाता है। प्रभु यीशु के, प्रभुओं के प्रभु और सब राजाओं के राजा के, हम आज्ञाकारी हैं। सम्राट से भी अधिक, चाहे हम यीशु को देखते न हों। इसलिए हमारी निष्ठा और विश्वासयोग्यता के लिए शब्द है "विश्वास की आज्ञाकारिता"।

यह आदेश पूरा किया गया और आज भी किया जा रहा है। वह अंतिम चरण में है: बहुत से मनुष्यों ने इस राजा के बारे में सुना है। उन बहुत से लोगों के कारण, जो अपनी परवाह किए बिना सबसे दूर के क्षेत्रों में गए, ताकि राजा को प्रसिद्ध करें। आरंभ छोटा था। चेलों के साहस ने संसार को बदल दिया। वे जानते थे कि उनके पीछे कौन खड़ा था। और आज यीशु के हर अनुयायी और यीशु को माननेवाले के पीछे खड़ा है। वह, जिसे सारा अधिकार दिया गया है।

उन्हें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। जीवन में और मृत्यु में, अंतिम शब्द राजा का होगा।

यह पुस्तक राजा के पास आने का एक निमंत्रण है! राजा को मानने का एक निमंत्रण या स्मरण! इस राजा के पास नया आरंभ बार-बार संभव है। क्षमा, अनुग्रह और स्वतंत्रता उसके राज्य के नियम हैं।

सब राजा उसको दण्डवत करेंगे, सब जातियाँ उसकी सेवा करेंगी।

क्योंकि वह दोहाई देनेवाले दरिद्रों का उद्धारकर्ता बनेगा, उन मनुष्यों का, जो दुःख उठाते हैं और जिनका कोई सहायक नहीं।

वह निर्बलों और दरिद्रों पर दया करेगा और संकट में पड़े मनुष्यों के प्राणों को बचानेवाला बनेगा।

वह उन्हें अत्याचार और हिंसा से छुड़ाएगा, क्योंकि उनका जीवन उसकी दृष्टि में बहुमूल्य है।

राजा युग-युग जीए!

भजन संहिता 72:11-15

मत्ती 28:16-20; 1 तीमुथियुस 2:4-5; रोमियों 1:15; 5:2; 16:26; इफिसियों 2:18; 3:12; प्रेरितों के काम 17:30-31।

28 राजा के लिए: विश्वास और विश्वासयोग्यता

इस राजा की सेवा करना बड़े सम्मान की बात है। उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने की शपथ लेना। वह इस योग्य है कि हम उसके हों। उसकी अपनी निजी संपत्ति के रूप में।

हम अपना जीवन किसे देते हैं? हम किसके या किस चीज़ के प्रति विश्वासयोग्य हैं, पूरी तरह जानते हुए या बिना ध्यान दिए? कौन-सी मूरतें हम पर प्रभुता करती हैं? हम किसके हैं? हमारे लिए पवित्र क्या है? हमने अपने आप को किसके हवाले कर दिया है? अपना समय? अपना पैसा? अपना ध्यान?

सोशल मीडिया? फ़ेसबुक और इंस्टाग्राम? धार्मिकता का दिखावा? प्रतिष्ठा? घमंड? खेल? स्वार्थ? खाना? शराब? निकोटीन? संपत्ति? पैसा? सत्ता? सेक्स? सफलता? करियर?

बात यह नहीं है कि ये चीज़ें या इनमें से कुछ अच्छी हैं या बुरी, पवित्र हैं या पापपूर्ण। निर्णायक यह है कि हमारे जीवन में वे क्या भूमिका निभाती हैं। सब मनुष्यों के लिए एक प्रश्न। उनके लिए, जो राजा की सेवा करते हैं या करने का प्रयत्न करते हैं। या जो केवल उसका नाम जानते हैं। और उनके लिए, जो राजा को नहीं जानते और नहीं जानते कि वह कौन है और कैसा है।

एक राजा अपने पद के बल पर ही विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता की माँग करता है। जो विश्वास केवल सहमति देता है या किसी बात को सच मानता है, वह मरा हुआ है। वह राजा से कोई संबंध नहीं बनाता। विश्वास की आज्ञाकारिता वह है, जिसके लिए राजा हमें बुलाता है। उसकी इच्छा हमारे लिए आदेश है। यदि हम इस राजा के पीछे चलते हैं, तो यह केवल पूरी तरह ही हो सकता है। आधे-अधूरे काम यहाँ भी बहुत बुरी तरह चलते हैं।

उसके पक्ष में खड़े होने का हमें जो भी मूल्य चुकाना पड़े, वह सही पक्ष है और रहेगा। उस विजेता का पक्ष, जिसने पहले हमारे लिए सब कुछ दाँव पर लगा दिया। हमारी विश्वासयोग्यता धन्यवाद है। हमारा समर्पण हमारा कर्तव्य है। स्वेच्छा से और बिना दबाव के। एक कोढ़ी कृतज्ञता के कारण लौटा, परन्तु दस चंगे किए गए थे। इस जीवन का भविष्य सबसे उत्तम है। आज इसका अर्थ है, इस पार्थिव जीवन में उनकी तुलना में कोई विशेष लाभ न होना, जो हमारे राजा की उपेक्षा करते हैं। इस राजा के बिना जीवन सरल और आरामदायक हो सकता है। इसलिए, यीशु कहता है, उसके पीछे चलने से पहले लागत का हिसाब लगा लेना चाहिए।

यीशु के पीछे चलना, जैसा यीशु कहता है, अपना क्रूस उठाना है। अर्थात, अपने आप को दूसरों के हवाले करना और उनके लिए उपस्थित रहना। दूसरों को, न कि अपने आप को, जीवन में पहले स्थान पर रखना। यीशु के जीवन को आदर्श के रूप में रखना। सचमुच प्रेम करना और सेवा करना।

वैसे, यीशु के पीछे चलना अक्सर उतार-चढ़ाव भरा होता है। कभी सिद्ध नहीं। केवल सफलता और उपलब्धि ही नहीं, उतनी ही हार और अपने आप से निराशा भी। संदेह और अनुत्तरित प्रश्न भी। अर्थात विश्वास का जीवन। देखने का नहीं। कुछ समयों में यह बहुत चुनौती भरा होता है।

विश्वास और विश्वासयोग्यता (यूनानी: pistis, लातीनी: fides) का रोमी समाज में अर्थ था परस्पर और स्थायी निष्ठा। फ़िदेस (fides) समाज को जोड़े रखता था – प्रतिबद्धता और निष्ठा, देना और लेना, भरोसेमंद होना और विश्वासयोग्यता इस शब्द में एक साथ हैं। सबसे ऊपर निष्ठा सम्राट के प्रति थी, जो बदले में अपनी प्रजा के प्रति निष्ठावान था। प्रभु यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता ही मसीही होने की पहचान है।

क्या विश्वासयोग्यता सार्थक है, और वे असुविधाएँ, परिश्रम, त्याग और सताव, जो इसके साथ आ सकते हैं? यीशु कहता है कि ऐसे जीवन में यहीं, अर्थात परमेश्वर के भविष्य के आरंभ होने से पहले ही, आनंद और आशीष है। परन्तु अंत में सारे परिश्रम का प्रतिफल अनन्त जीवन है। राजा के साथ एक अवर्णनीय रूप से सुंदर, गहरा, सुरक्षित, परिपूर्ण और समृद्ध जीवन। फिर शीघ्र ही उसके अनन्त राज्य में वास्तविक और दृश्य रूप में।

आगे उद्धृत गीतों के बोल कोई पुरानी यादों की भावुकता नहीं हैं। रोमानी कल्पना तो बिल्कुल नहीं। वे यीशु के अनुयायियों या राजा के प्रति निष्ठावान लोगों के जीवन की वास्तविकता का भी शत-प्रतिशत वर्णन नहीं करते। वे अधिकतर प्रार्थना, इच्छा या लक्ष्य हैं।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Ein Leben gegeben für den Herrn der Welt

Ein Leben gegeben für das, was wirklich zählt

Ein Leben für Gott, für ihn allein, das soll mein Leben sein

लुकास दी नुन्ज़ियो (Lukas Di Nunzio)



1 कुरिन्थियों 6:12; 1 यूहन्ना 5:21; लूका 16:13; लूका 14:25-33; 17:11-19; मरकुस 10:28-31; मत्ती 25:21-26; इफिसियों 1:1; कुलुस्सियों 1:7; 4:7; प्रकाशितवाक्य 2:10, 13; 17:14।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Für den König, für den Herrn

Für ihn geben wir uns hin

Seine Ehre unser Ziel

Nichts bedeutet uns jemals so viel

Für den König, für sein Reich

Alle Menschen sind hier gleich

Lamm und Löwe sind vereint

Und das Licht der Gerechtigkeit scheint

Alle Ehre König Jesus

Unsere Herzen, sie fliegen dir zu

Wir erheben deinen Namen

Der allein wahre König bist du

आल्बर्ट फ़्राय (Albert Frey)

29 राजा और उसकी प्रजा

प्राचीन काल में एक अच्छे राजा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह जातियों और गोत्रों में शान्ति स्थापित करे। कि वह अपने राज्य को एक साथ रखे और एक अच्छे चरवाहे की तरह उसकी अगुवाई करे। अपनी प्रजा के साथ कृपा से व्यवहार करे। अच्छा राजा उन सब गुणों का साकार रूप था, जिन्हें पाने योग्य माना जाता था। तब भी, जब यह जीवन की वास्तविकता से मेल नहीं खाता था।

यीशु, मसीहा-राजा, परमेश्वर के द्वारा ब्रह्मांड का प्रमुख ठहराया गया है। सब पर और हर एक पर राजसी सिर के रूप में वह टूटे हुए ब्रह्मांड के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित चंगाई और पुनःस्थापना लाता है। उसके सिर होने के अधीन सब चीज़ें अपने स्थान पर आ जाएँगी और स्वस्थ हो जाएँगी। जो एक साथ होना चाहिए, उसे वह फिर से जोड़ देता है। वह अव्यवस्था और विनाश की सब शक्तियों को दूर कर देता है। उसके राजसी “सिर होने” के अधीन सब कुछ एक साथ लाया जाएगा। परन्तु यह अभी भविष्य की बात है।

परन्तु: अभी से राजा शान्ति ला चुका है। वह, शान्ति का राजकुमार। उस समय, यीशु के समय में, इस्राएल वह जाति थी, जिसके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर एकमात्र अधिकार था। परन्तु जी उठा मसीहा अपने चेलों को सब जातियों के पास भेजता है। सब मनुष्य आमंत्रित हैं और उनका स्वागत है। हम यूरोप के लोगों के लिए यह शुभ समाचार है। आरंभ के समय में यहूदियों और जातियों को समान अधिकार के साथ एक करना आसान प्रक्रिया नहीं थी। परन्तु मसीह ठीक यही शान्ति लाया है और मसीहा पर विश्वास करनेवाले यहूदियों और पृथ्वी के सब देशों की जातियों को एक कर दिया है। अब वे उसकी प्रजा हैं, जिसमें पुरानी राष्ट्रीय सीमाएँ मिट जाती हैं। एक नए मनुष्य में जोड़ दिए गए। मसीह, जो सिर है, एक नई सृष्टि के रूप में एकता बनाता है।

यहूदियों या इस्राएलियों का जातियों में से आए ऐसे मनुष्यों के साथ मेल इतना घनिष्ठ है कि इसकी तुलना एक देह से, एक जीवित शरीर से की जा सकती है। मसीह सिर है, अर्थात मस्तक, और सब मनुष्यों में से बनी उसकी प्रजा उसकी देह है, उसका शरीर।

यहूदी और जातियाँ अब मिलकर उसके राज्य के नागरिक बनते हैं। इस प्रकार उनकी मानो दो पहचानें हैं। एक ओर वे वही रहते हैं, जो वे पहले थे। अपने देश के नागरिक। परन्तु इसके अतिरिक्त वे मसीह की देह में जोड़ दिए जाते हैं। वे एक दूसरे, एक स्वर्गीय राज्य के नागरिक बन जाते हैं। यह दूसरा सदा बना रहेगा।

कलीसिया के भवनों को बासिलिका (Basilika) कहा गया और इसके द्वारा स्पष्ट किया गया कि वे शासक का, basileus का, अर्थात राजा का घर हैं। इसी से बासिलिका शब्द निकला है। वह स्थान, जहाँ राजा की प्रजा राजा से मिलती है, यही नाम रखता है। निश्चय ही इस सभा के लिए किसी विशेष भवन की, या किसी भी भवन की, ज़रूरत नहीं है। परन्तु जहाँ वे हैं, वहाँ वे राजा के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति हैं।

मसीह की देह में बहुत सी जातियों के बीच शान्ति स्थापित होना ब्रह्मांडीय विस्तार की एक अत्यंत राजनीतिक घटना है। जब बहुत सी जातियों के मनुष्य अपनी सब विशेषताओं और अपने अतीत के साथ मसीह के क्रूस के नीचे अपनी शत्रुता को गाड़ देते हैं, तो इसके अनुभव किए जा सकनेवाले परिणाम होते हैं। उस समाज में भी, जिसका वे भाग हैं। जहाँ शान्ति का राजा शासन करता है, वहाँ हिंसा, भेदभाव और झगड़े समाप्त हो जाते हैं।

जब इतने सारे जातीय समूह एक साथ आते हैं, तो यह बहुत चुनौती भरा होता है। यह शान्ति, जो राजा लाया, आँख की पुतली की तरह सुरक्षित रखी जानी चाहिए। दूसरों को स्वीकार करना और उन्हें गंभीरता से लेना। क्षमा करना और पाप को ढाँपना। अपने आप को बहुत महत्वपूर्ण न समझना, दूसरे शब्दों में: पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना राजा के इस नए समुदाय का आचरण है।

राजा की प्रजा का होना एक अनमोल उपहार और सम्मान है। किसी भी राजा का नहीं। हमारा राजा, यदि आप इस प्रजा के हैं, सब राजाओं के ऊपर राजा है। उसकी प्रजा के रूप में हमारे पास अविश्वसनीय विशेषाधिकार हैं। महाराज के सिंहासन-कक्ष में निरंतर दरबार। राजा हमारे साथ। वह अपनी प्रजा के साथ है, हर एक व्यक्ति के साथ। उसका भविष्य हमारा भविष्य है। उसका धन हमारा धन है। उसने अपना सामर्थ्य हमें दिया है। परन्तु वह प्रभुत्व और अधिकार जताने में नहीं, बल्कि निर्बलता में सिद्ध होता है। उसका सामर्थ्य हमें वह अनुभव करने और करने देता है, जो केवल वही कर सकता है। जो सामर्थ्य नासरी यीशु में था, वह हम में भी काम करता है।

क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा अगुवा, यहोवा हमारा राजा है। वही हमारा उद्धार करेगा।

यशायाह 33:22

इफिसियों 1:9-11; 2:11-22; 4:1-6; यशायाह 9:6; गलातियों 3:28; कुलुस्सियों 3:10-11; 1 कुरिन्थियों 12; प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16; 1 तीमुथियुस 6:15; प्रेरितों के काम 1:4-8।

30 राजा की मेज़ पर

राजा दाऊद के जीवन की यह कहानी रोज़मर्रा की नहीं है। जब उसका राज्य स्थिर हो जाता है, तो वह मृत राजा शाऊल के, अपने पूर्ववर्ती के, वंशजों या संबंधियों को ढूँढ़ता है। उसने उसका पीछा किया था और उसे मार डालने का प्रयत्न किया था। क्या दाऊद अब बदला लेना चाहता था? शाऊल का एक पोता, योनातन का पुत्र, मपीबोशेत नाम का, मिल गया। वह विकलांग था, दोनों पैरों से लंगड़ा। उसे सहायता की ज़रूरत थी और वह अकेले अपनी जगह से हिल नहीं सकता था। कल्पना कीजिए, दाऊद इस मनुष्य को अपनी मेज़ पर आमंत्रित करता है। केवल एक बार नहीं, बल्कि प्रतिदिन, जीवन भर, वह राजा के साथ भोजन कर सकता है।

इसे मैं प्रेम कहता हूँ, हाँ, शत्रुओं से प्रेम भी। और लंगड़ा मपीबोशेत दिखाता है कि हम मनुष्य कितने असहाय हैं। परमेश्वर के पास आना केवल उसकी सहायता से ही संभव है। हम विकलांग हैं, शारीरिक रूप से नहीं, परन्तु आत्मिक रूप से। अपने आप हम नहीं आते, हमें बुलाया जाना ज़रूरी है। हम बहुत बँटे हुए ध्यानवाले हैं, बहुत चतुर, बहुत अविश्वासी।

यीशु, मसीह, हमें अपनी मेज़ पर आमंत्रित करता है। उसे संगति करना, बातें करना, आनंद लेना, एक-दूसरे के साथ आनंदित होना अच्छा लगता है।

आपने शायद कभी प्रभु-भोज के बारे में सुना हो। यूखरिस्त या रोटी तोड़ने के बारे में। राजा ने एक स्मरण-भोज ठहराया है। रोटी और दाखरस राजा की क्रूस पर मृत्यु और उसके लहू की याद दिलाते हैं, जो उसने हमारे लिए बहाया। जब हम यह स्मरण-भोज मनाते हैं, तो हम अपने राजा की मृत्यु की घोषणा करते हैं। तब तक, जब तक वह राजसी प्रताप के साथ फिर न आ जाए।

यद्यपि हम राजा को देखते नहीं, फिर भी वह अदृश्य रूप से उपस्थित है। हर उस स्थान पर, जहाँ उसके लोग एक साथ हैं और उसका आदर करते हैं, उसे स्मरण करते हैं, उसे धन्यवाद देते हैं और उसकी स्तुति करते हैं। राजा के प्रति निष्ठावान लोगों का एक घनिष्ठ समुदाय, जिन्होंने अपने हृदय यीशु को दे दिए हैं। जिन्हें कोई बात इस राजा से प्रेम करने और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने से रोक नहीं सकती।

राजा की यह मेज़ विश्वास की बात है। जब तक राजा प्रवास में है, यीशु के चेले उसी के चारों ओर इकट्ठे होते हैं। जब वे स्मरण-भोज मनाते हैं, तो वे एक-दूसरे को देखते हैं और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। जब यह बीच का समय बीत जाएगा, तब राजा अपने लोगों के साथ मिलकर उत्सव मनाएगा। अब विश्वास में नहीं, बल्कि दृश्य और छूने योग्य वास्तविकता में।

मेरे शत्रुओं की आँखों के सामने तू मेरे लिए मेज़ बिछाता है; उत्सव के साथ तू मुझे अपने पास ग्रहण करता है और मेरा कटोरा लबालब भर देता है।

भजन संहिता 23:5

2 शमूएल 4:4; 9; 2 शमूएल 19:24-30; 21:7; मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:14-20; 1 कुरिन्थियों 10:14-22; 11:20-34; भजन संहिता 23:5; इब्रानियों 13:10।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Königlich strahlt Dein Licht

Du bist ewiglich

Niemand kommt Dir gleich

Sanftmütig führst Du mich

Hin zu Deinem Licht

Ich darf bei Dir sein

Sei Du der Mittelpunkt in meinem Leben

Der Mittelpunkt in meinem Herzen

Ich gehöre Dir

Sei Du der Mittelpunkt in meiner Schwäche

Der Mittelpunkt in meiner Stärke

Ich gehöre Dir

Ich will Dir nah sein

Ich werd Dir folgen

Mein ganzes Leben in Dir verliern

पाठ और संगीत: यूरी फ़्रीज़ेन (Juri Friesen) और पाउला फ़्रीज़ेन (Paula Friesen) © 2012 Outbreakband

31 राजा की वाटिका

न्यूयॉर्क शहर के हवाई चित्र देखना प्रभावशाली है। सेंट्रल पार्क गगनचुंबी इमारतों के समुद्र के बीच एक बड़े, हरे नख़लिस्तान के समान है। वह चार किलोमीटर लंबा और लगभग एक किलोमीटर चौड़ा है। हर बड़े शहर के अपने उद्यान होते हैं। विश्राम, शान्ति, छाया के स्थान, फल, ताज़गी, रंग-बिरंगी सुंदरता और सुगंध और उत्सव मनाना, यह आज तक किसी वाटिका का सार है। किसी तरह यह हमें स्वर्ग-सी वाटिका की याद दिलाता है। रानियों और राजाओं की अपनी वाटिकाएँ और उद्यान होते थे, एक से बढ़कर एक सुंदर।

बाइबल एक वाटिका से आरंभ होती है। एक नगर पर वह समाप्त होती है। परन्तु वहाँ भी सेंट्रल पार्क जैसा कुछ है, स्वर्ग जैसी एक नगर-वाटिका।

आरंभ में लिखा है कि परमेश्वर, जो सारे विश्व का राजा है, दिन के ठंडे समय में वाटिका में फिरता था। स्पष्ट है कि उसे यह अच्छा लगता था। वह उससे आनंदित होता था, जिसे उसने स्वयं "ईश्वरीय माली" के रूप में रचा था और मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया था। वाटिका की देखभाल और सुरक्षा उन्हें सौंपी गई थी।

हज़ारों वर्ष बाद परमेश्वर मनुष्य बन गया। अपने जीवन के अंत की ओर यीशु, अपने चेलों के साथ, गतसमनी नाम की एक वाटिका में जाता है। जैतून का एक बाग़। वहाँ राजा प्रार्थना के संघर्ष के लिए अलग जाता है। वह जानता है कि क्रूस पर मृत्यु का उसका दंड निकट है। इस वाटिका में हम गवाह बनते हैं कि उस पर कुछ ऐसा आनेवाला है, जो क्रूस पर शारीरिक यातना से भी बुरा है। बात यह है कि सबके लिए एक नया और बेहतर अदन, एक नया स्वर्गलोक संभव बनाया जाए। इसका मूल्य अथाह है। इसके लिए हमारे पाप और मृत्यु को मार्ग से हटाना होगा। वह स्वयं पाप को अपने ऊपर लेगा और उसके लिए मरेगा। यह उसके लिए, जो पाप-रहित था, असीम रूप से कठिन है। वह कोई दूसरा मार्ग खोजता है। परन्तु वह है ही नहीं। फिर इसी वाटिका में वह पकड़ा जाता है। उसके दुःख का मार्ग आरंभ होता है। वह क्रूस पर समाप्त होता है। और एक कब्र में।

यह कब्र भी एक वाटिका में थी। मरियम मगदलीनी ने क्रूस पर चढ़ाया जाना देखा था और यह भी कि कैसे एक मनुष्य ने उसे क्रूस से उतारा और पास की चट्टानी कब्र में ले गया। रविवार की भोर को मरियम इसी वाटिका में गई। एक मनुष्य उससे मिलता है। वह समझती है कि यह माली है। यह अदन का "माली" है। राजा लौट आया है। मरे हुओं में से जी उठा है। एक नया और बेहतर अदन-स्वर्गलोक होगा। जिसमें राजा की अनगिनत बहनें और भाई रहेंगे। यही शुभ समाचार है, जो मरियम अब चेलों तक पहुँचा सकती है।

जैसे न्यूयॉर्क में सेंट्रल पार्क है, वैसे ही नए यरूशलेम में एक वाटिका-स्वर्गलोक होगा। मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा नए आयामों में एक नई सृष्टि संभव हो गई है। वह आरंभ हो चुकी है। वह एक नई पृथ्वी पर, नए यरूशलेम में, पूरी होगी। सुंदरता का, सिद्धता का सार। वहाँ परमेश्वर का सिंहासन है। उसमें से

जीवन का जल फूटकर निकलेगा और वाटिका को सींचेगा। जीवन का वृक्ष वहाँ होगा और बहुत फल लाएगा। इस बात का प्रतीक कि वहाँ जीवन और चंगाई है। और कि हर प्यास, विशेषकर आत्मा की प्यास, बुझ जाती है।

यह स्थान अवास्तविक-सा लगता है। फिर भी बाइबल बार-बार आमंत्रित करती है, वह मानो पाठक को पुकारकर कहती है, कि परमेश्वर के इस नए संसार में शामिल हो जाए। हर कोई इस जीवित जल को सेंत-मेंत पी सकता है। यह सुसमाचार का, शुभ संदेश का, एक और चित्र है। वह एक ऐसा जीवन देता है, जो अनन्तकाल तक बना रहता है और जिसे मृत्यु से डरने की ज़रूरत नहीं।

एक बात और। बाइबल आत्मा के फल की बात करती है। इससे उसका अर्थ ऐसी बातों से है: प्रेम, आनंद, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता, संयम। किसी तरह आज हम भी, मसीही, राजा की वाटिका हैं, जहाँ वह ऐसे फल ढूँढ़ता है और उन्हें इकट्ठा करता है। ये फल हमारे स्वाभाविक स्वभाव से शायद ही मेल खाते हैं। इसलिए वे आत्मा के फल भी कहलाते हैं। इस ईश्वरीय आत्मा की सहायता से वे बढ़ सकते हैं।

अदन, आरंभ, आदर्श, परन्तु पतन और टूटन का स्थान भी। गतसमनी, जहाँ मसीहा हार मान लेने की परीक्षा का सामना करता है। वाटिका की कब्र, जहाँ पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु पराजित होती है। और जहाँ जी उठा राजा सबसे पहले एक स्त्री से मिला और उसे अपने चेलों के लिए सबसे अच्छा संदेश सौंपा। नए यरूशलेम की नगर-वाटिका: परमेश्वर अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है, मेम्ने के द्वारा। वहाँ हम घर पर होंगे – एक अनन्त घर में।

निश्चित जानो: प्रभु सिय्योन नगर को शान्ति देता है, खंडहरों में से वह उसे फिर से खड़ा करता है। उजड़े देश को वह एक स्वर्ग-सी वाटिका बना देता है; वह अदन की वाटिका के समान खिलेगा और फलदायी होगा। वहाँ आनंद और जयजयकार गूँजेंगे और तुम अपने परमेश्वर के लिए धन्यवाद के गीत गाओगे।

मैं, प्रभु, सदा और हर स्थान पर तुम्हारी अगुवाई करूँगा, सूखे देश में भी मैं तुम्हें तृप्त करूँगा और तुम्हें अपना सामर्थ्य दूँगा। तुम एक ऐसी वाटिका के समान होगे, जिसमें सदा भरपूर पानी रहता है, और एक ऐसे सोते के समान, जो कभी नहीं सूखता।

क्योंकि जैसे भूमि में से बीज अंकुरित होकर बढ़ता है, वैसे ही प्रभु, सामर्थी परमेश्वर, हमारे सौभाग्य को बढ़ाता है और सब जातियों के बीच हमारी कीर्ति को बढ़ाता है।

यशायाह 51:3; 58:11; 61:11

उत्पत्ति 2:8 आदि; प्रकाशितवाक्य 22:1-5; 22:17; मत्ती 26:36; यूहन्ना 19:41; 20:1-18; गलातियों 5:16-26।

32 राजनीतिक यीशु

सच्चा राजा वह है, जो अपनी राजसी शासन-सत्ता को लागू करता है। जो अपने राज्य को आकार देता है, नियम बनाता है, कर वसूलता है।

यदि यीशु एक राजा है, और इसमें कोई संदेह नहीं, तो उसका एक राजनीतिक दावा है। तब उसे अधिकार है कि वह समाज, प्रशासन और विधि-निर्माण को अपनी सोच और इच्छा के अनुसार चलाए। यह तब भी लागू होता है, जब उसका राज्य इस संसार का नहीं है।

कहीं-कहीं मसीही मसीही सिद्धांतों को राजनीति में लाने का प्रयत्न करते हैं। एक मसीही प्रभाव डालने का। इसका एक फल दासता का उन्मूलन था – एक विशाल सफलता।

ऐसे राजा हैं, जो निर्वासन में चले गए। या जिन्हें जाना पड़ा। कभी-कभी वे अपने निष्ठावान अनुयायियों के द्वारा अब भी प्रभाव डालने का प्रयत्न करते हैं। यीशु, मसीहा-राजा, के साथ बात कुछ मिलती-जुलती है और फिर भी भिन्न। वह स्वयं हट गया है, व्यक्तिगत और शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं है। यद्यपि उसके पिता ने उसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया है, वह कोई राजनीतिक सत्ता नहीं चलाता। यद्यपि वह ऐसा कर सकता था, जब भी वह चाहता। परन्तु यह उसके स्वभाव के अनुरूप नहीं है, जैसा उसे सुसमाचार के वृत्तांतों में जाना जाता है। उसका राज्य इस संसार के किसी राज्य जैसा नहीं है। उसके शासन को मानो एक नए संसार की ज़रूरत है। सब कुछ बदलना होगा। नया दाखरस नई मशकों में ...

अपने अनुयायियों को वह पृथ्वी पर इकट्ठा करता है। वे उसकी राजसी आज्ञाओं को मानते हैं। कम से कम वे इसका प्रयत्न करते हैं। वे राजनीतिक सत्ता के लिए नहीं लड़ते। परन्तु जहाँ उनके लिए संभव है, वहाँ वे अपने प्रभाव का प्रयोग करते हैं। मानवाधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता और समान अधिकारों के लिए वे खड़े होते हैं और अपनी आवाज़ उठाते हैं। समाज और राजनीति के छोटे या बड़े दायरों में।

परन्तु शासन का राजनीतिक दावा यीशु के पास निश्चय ही है। वह राजाओं, सम्राटों, राष्ट्रपतियों और तानाशाहों का स्थान लेगा। वे चले जाएँगे, वह आएगा। और बना रहेगा।

ठीक यही अगले अध्याय का विषय है।

33 राजाओं के राजा की वापसी

शायद आप अरागॉर्न (Aragorn) को महाकाव्य “द लॉर्ड ऑफ़ द रिंग्स” (The Lord of the Rings) से जानते हों। एक वनचर। कोई कुलीन व्यक्ति नहीं। उसके नाम का अर्थ है “राजसी साहस”। वह, जिसकी किसी को आशा नहीं, सौरॉन (Sauron) पर विजय के बाद आर्नोर (Arnor) और गोंडोर (Gondor) का वैध महाराजा बन जाता है। इस महाकाव्य की तीसरी पुस्तक का नाम है “राजा की वापसी” (The Return of the King)।

शायद टॉल्किन (Tolkien) के, इस गाथा के रचयिता के, मन में वही था, जिसके बारे में मुझे सोचना पड़ता है। नासरत के उस निर्माण-कारीगर के बारे में। निर्माण-कार्य से जुड़े एक साधारण-से मनुष्य के बारे में, जिसने जीवन भर गलील के नगरों में पहलौठे के रूप में अपने पिता और भाइयों के साथ घरों की मरम्मत की या नए घर बनाए। कोई प्रतिष्ठित काम नहीं। बिना सम्मान के। उसके जीवन के अंतिम तीन वर्ष भिन्न थे। यह सब हम देख चुके हैं।

इस्राएल के लोग यीशु को आश्चर्यकर्म करनेवाले घुमक्कड़ प्रचारक या रब्बी के रूप में याद रखते हैं। उसके पुनरुत्थान के बाद केवल उसके चेलों ने उसे देखा, उन लोगों ने नहीं, जो उसके पीछे नहीं चलते थे। इस प्रकार एक क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति स्मृति में रहता है। यहाँ तक आज भी अधिकतर लोग सहमत होंगे।

परन्तु यह एक दिन अचानक बदल जाएगा। फिर से सब कुछ तीन शब्दों में कह दिया गया है: वह फिर आएगा! वह हमारे संसार में, हमारे ग्रह पर, लौट आएगा। एक ऐसी घटना, जो संसार को थाम देगी। बाइबल में इसका वर्णन बार-बार और प्रभावशाली ढंग से किया गया है। इसका पूरा वर्णन करने के लिए शब्द कम पड़ते हैं। मनुष्य अवाक रह जाएँगे। सिडनी से रोम तक, बीजिंग से वॉशिंगटन तक। वह परदा, जो अदृश्य संसार को, परलोक को, हमसे ढाँपे रखता है, खुल जाता है। मंच प्रभु यीशु मसीह के महान दिन के लिए खाली है।

जातियों की लालसा आती है। दूसरी बार। अब सबको दिखाई देता हुआ। अब कोई बहस नहीं। कोई संदेह नहीं। कोई ठट्ठा नहीं। समय आ गया है। कुछ लोग संदेह करते हैं कि कहीं वे सपना तो नहीं देख रहे। हाँ, कुछ के लिए एक सपना पूरा होता है। दूसरों के लिए, परमेश्वर का इनकार करनेवालों, मसीह से घृणा करनेवालों या उदासीन लोगों के लिए, यह बल्कि एक बुरा सपना होगा। मसीहियों ने इस दिन की लालसा की है। उनकी आशा पूरी होती है। अब से और सदा के लिए किसी मनुष्य की बात नहीं चलेगी। केवल यही एक मनुष्य, एकमात्र सिद्ध और धर्मी, तब से असीमित संप्रभु शासन करेगा।



राजा फिर क्यों आता है? वह अपनी ही प्रतिज्ञा पूरी करता है! अरबों बार माँगी गई प्रभु की प्रार्थना आखिरकार सुनी जाती है: तेरा राज्य आए और तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो!

वह यीशु के अनुयायियों के छुटकारे को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने आता है। इसी प्रकार शोषित, सताई गई सृष्टि भी इस दिन की लालसा करती है। उसे छुटकारा मिलेगा, राजा चंगाई लाएगा।

क्या राजा बदला लेने आता है? अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने का? इतने सारे लोगों के ठुकराने का? नहीं, यीशु "हर-मगिदोन का कसाई" नहीं होगा। प्रकाशितवाक्य के, बाइबल की अंतिम पुस्तक के, बहुत से चित्र सब सांसारिक राजाओं पर, विशेषकर उस समय के रोमी सम्राट पर, एक व्यंग्य, यदि पैरोडी नहीं, हैं। मनुष्य अपने ढंग से बदला लेते हैं। वह न क्षतिपूर्ति कर सकता है, न पुनःस्थापना। मानवीय बदला बढ़ता चला जाता है, लगभग सदा उससे अधिक नष्ट करना चाहता है, जितनी हानि स्वयं उठाई गई। यीशु के इस आगमन के बारे में कहा गया है कि यह पलटा लेने का दिन है। परमेश्वर का पवित्र और न्यायपूर्ण पलटा। यीशु का वर्णन चित्र-भाषा में मृत्यु के घाव के साथ वध किए गए मेम्ने के रूप में किया गया है। क्रूस की ओर, मानवजाति के लिए उसकी मृत्यु की ओर, एक पीछे की झलक। वह, जिसने यह आज्ञा तक दी कि अपने शत्रु से प्रेम करो और अपना बदला स्वयं न लो, रक्तपात करने नहीं आएगा। यह तो मनुष्य स्वयं अपने साथ करते हैं, यदि जातियाँ अपने विशाल शस्त्र-भंडारों का प्रयोग करें।

उसके प्रकट होने के सामने बलपूर्वक दबानेवाली हिंसा की अब ज़रूरत नहीं रहेगी। गतसमनी की बारी में उसके शब्द, "मैं हूँ", पर्याप्त थे, और सब सैनिक भूमि पर गिर पड़े। उसके महान दिन सब अपने हथियार

डाल देंगे। हथियार गिर जाएँगे, शब्द, कर्म और धारणाएँ भी। इसके लिए किसी युद्ध की ज़रूरत नहीं, उसकी दृश्य उपस्थिति हर घुटने को झुका देगी।

यीशु कैसे फिर आएगा? सबके सामने, दिखाई देता हुआ, ऐसा कि कोई सुने बिना न रह सके, ऐसा कि कोई देखे बिना न रह सके, अचानक, अप्रत्याशित, नाटकीय, भयभीत करनेवाला, बड़े सामर्थ्य के साथ, बड़े तेज के साथ महिमामय, स्वर्ग से, बादलों में, अनगिनत स्वर्गदूतों के साथ। परमेश्वर स्वयं अपने पुत्र यीशु, मसीह, के व्यक्तित्व में आता है।

हमारी कल्पना-शक्ति सीमा तक पहुँच जाती है। इस घटना की कल्पना मुश्किल से ही की जा सकती है। दिन और रात का बदलना अब कोई महत्व नहीं रखता। समय थम जाता है। हमारी सब मुलाकातें और ज़िम्मेदारियाँ समाप्त हो जाती हैं। अब कोई हमारी प्रतीक्षा नहीं करता। तब हर स्त्री और हर पुरुष का ध्यान केवल एक पर होगा, राजा पर और उस पर, जो वह कहेगा और करेगा।

यीशु मसीह किसलिए फिर आएगा? हर रविवार लाखों मसीही अति प्राचीन, फिर भी आज भी सामयिक प्रेरितों का विश्वास-वचन बोलते हैं:

> वह स्वर्ग पर चढ़ गया; वह सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा है; वहाँ से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने आएगा।

कल्पना कीजिए, सब मृतक, सब मनुष्य, जो कभी जीवित थे, जी उठेंगे। उसके लौटने में इतनी विस्फोटक सृजन-शक्ति प्रकट होती है।

अंत में यह प्रश्न: यह कब होगा? यीशु और प्रेरितों ने कहा है कि कोई मनुष्य उस समय को नहीं जानता। दृष्टांतों में यीशु ने संकेत दिया है कि इसमें बहुत लंबा समय लग सकता है। एक कारण यह है कि राजा का सुसमाचार हर स्थान पर मनुष्यों तक पहुँच जाए। यह पूरा होने लगा है।

उसके आने के समय का वर्णन क्लेश और बड़े संकट के समय के रूप में किया गया है। मनुष्य भय के मारे और पृथ्वी पर आनेवाली बातों की बाट जोहते-जोहते घबरा जाएँगे। अंत आने से पहले आकाश में असाधारण घटनाएँ इसके साथ होंगी।

क्या इस महान दिन भी राजा से क्षमा माँगने की संभावना होगी, यह आज कोई नहीं कह सकता। मैं उनके बारे में सोचता हूँ, जिन्होंने कभी उसमें रुचि नहीं ली या उसे जान-बूझकर ठुकरा भी दिया। आज जीवित सब लोगों के लिए यह गंभीर पुकार लागू होती है:

आज, यदि तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो। आज – कल नहीं – उद्धार का दिन है।

आज लाखों लोग इस महिमामय दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम में भी की गई थी। उनके जीवन का सच्चा लक्ष्य। इसमें शामिल हो जाइए। उन लोगों के पक्ष में आ जाइए, जो जानते

हैं कि वह फिर आएगा। चाहे कुछ भी ऐसा न दिखे, उसने प्रतिज्ञा की है!

क्योंकि परमेश्वर के न्याय का दिन आएगा, ठीक चोर के समान अप्रत्याशित। उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के साथ मिट जाएगा और तत्व जलकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और जो कुछ उस पर कभी हुआ, वह फिर नहीं मिलेगा।

परन्तु परमेश्वर ने हमसे एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी की प्रतिज्ञा की है। वहाँ फिर कोई अन्याय नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर की इच्छा शासन करती है। इसी नए संसार की हम प्रतीक्षा करते हैं।

2 पतरस 3:10, 13

मत्ती 24:27-30, 44; 26:64; मरकुस 13:26; 14:62; लूका 17:24; रोमियों 8:18; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 2:19; 3:13; 4:13-18; 5:1-11; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10; 2:8-12; 2 तीमुथियुस 4:1, 8; तीतुस 2:13; 1 पतरस 1:7, 13; 4:13; प्रकाशितवाक्य 1:7; 19:11-16।

34 कैसा महिमामय दिन

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

Einst, als im Himmel der strahlendste Tag war
Herrschte auf Erden die dunkelste Nacht
Da wurde Jesus als Mensch geboren
Er hat uns Gnade und Wahrheit gebracht
Das Wort wurde Fleisch und das Licht wohnte bei uns
Es scheint in der Nacht
Für uns geboren, für uns gestorben
Er nahm die Sünde der Welt mit ins Grab
Am dritten Tag ist er auferstanden
Einst wird er kommen, welch herrlicher Tag
Welch herrlicher Tag

Dann führten sie ihn hinauf um zu sterben
Ans Holz genagelt, das Kreuz aufgestellt
Der Mann der Schmerzen verachtet, verstoßen, er trug die Sünde
Der Heiland der Welt
Die heilenden Hände sind weit ausgebreitet für unsere Schuld
Am dritten Tag hielt das Grab ihn nicht länger
Weg war der Stein und die Grabkammer leer
Er ist auferstanden, den Tod überwunden
Er fuhr auf zum Himmel, der siegreiche Herr
Er gab neues Leben

Die Schuld ist vergeben, mein Retter ist er
Einst wird er kommen, welch herrlicher Tag
Welch herrlicher Tag, herrlicher Tag
Oh bald wird der Tag seiner Wiederkunft kommen
Bald werden wir ihn in Herrlichkeit sehen
Er wird die Seinen dann ganz zu sich nehmen
Staunend werd ich vor ihm stehen
Für uns geboren, für uns gestorben
Er nahm die Sünde der Welt mit ins Grab
Am dritten Tag ist er auferstanden
Einst wird er kommen, welch herrlicher Tag
Welch herrlicher Tag
Herrlicher Tag
Herrlicher Tag welch herrlicher Tag

आल्बर्ट फ़्राय (Albert Frey)

35 धर्मी न्यायी के रूप में राजा

मसीहा-राजा प्रकट होता है। अब वह यहाँ है। हर मनुष्य के मन में यह बात घूमती है कि आगे क्या होगा। सब कुछ अवास्तविक-सा लगता है। प्रकृति के नियम निष्प्रभावी हैं। एक नया युग आरंभ होता है, हर किसी को यह अंतिम रूप से स्पष्ट हो गया है।

मानो यही काफ़ी न हो कि अचानक दृश्य और अदृश्य स्वर्गीय संसार के बीच की सीमा-रेखा मिट गई है, कुछ और भी कम नाटकीय नहीं घटता। मृतक उठ खड़े होते हैं। सब मनुष्य, जो कभी इस ग्रह पर बसे थे, सब युगों से, अचानक यहाँ हैं। उतने ही जीवित, जितने वे, जो मरे नहीं। यद्यपि उनका सामाजिक दर्जा बहुत भिन्न था, अब वे सब बराबर हैं, सम्राट, राजा, धर्मों के संस्थापक और साधारण लोग, अनगिनत सैनिक, जहाज़ डूबने से मरे लोग, गरीब और सबसे गरीब। भूख से मरे और मारे गए लोग, दास और स्वतंत्र। बच्चे, अकल्पनीय रूप से बहुत से बच्चे। सब अजन्मे, माता के गर्भ में मार डाले गए, यहाँ हैं।

धीरे-धीरे ही सबको यह समझ आता है कि परमेश्वर ने, जो अभी-अभी स्वर्ग से आया, यीशु ने, मसीहा ने, मृतकों को उनकी कब्रों से और हर उस स्थान से बुलाया है, जहाँ वे बिखरे हुए थे। उसकी आवाज़, जिसने बहुत समय पहले पृथ्वी को अस्तित्व में बुलाया था, अब मृतकों को जीवन के लिए बुलाती है।

न्याय का समय आ गया है। परमेश्वर के पुत्र, यीशु, को इस न्याय को करने का अधिकार मिला है। एक मनुष्य, जो जीवन को जानता है, प्रलोभनों को, परीक्षाओं को, अन्यायपूर्ण दुःखों को। सब उसके सामने इकट्ठे किए जाते हैं। हर कोई अकेला उसके सामने खड़ा होगा। कोई सामूहिक निपटारा नहीं, कोई जल्दबाज़ी की कार्यवाही नहीं। हर क्षण, हर काम, हर विचार, हर उद्देश्य और हर शब्द देखा जाएगा। हर कोई अपने ही जीवन का सामना करेगा। और उसका, जो उसने दूसरों के साथ किया। और वह अनुभव करेगा, जो उन्होंने अनुभव किया, जो पीड़ित थे।

इतने सारे मनुष्यों और उनके जीवन के वर्षों के साथ यह कैसे संभव होगा, कोई नहीं कह सकता। स्वर्ग को ऐसी हार्ड-डिस्कों की ज़रूरत नहीं, जिन पर सब कुछ सहेजा हो। हमारे सामने सर्वज्ञ होगा। जो हमारे विचारों और भावनाओं को जानता है।

क्या इससे आपको शान्ति मिलती है? अपने बारे में सब कुछ जान लेना? उसे फिर से देखना या फिर से अनुभव भी करना?

यह न्याय होना ही चाहिए। न्याय स्थापित किया जाना चाहिए। अपराधियों और पीड़ितों दोनों को न्याय की ज़रूरत है। कोई मानवीय न्यायालय यह नहीं कर सकता। इसलिए अंतिम न्याय, जैसा इसे अक्सर कहा जाता है, मसीही आशा का भी एक अनिवार्य अंग है। सब कुछ प्रकाश में आता है। सब कुछ परमेश्वर के

मापदंड के अनुसार परखा जाता है और ठीक किया जाता है। वह, जो व्यक्तियों ने, जो समूहों ने, जो जातियों ने किया।

यीशु अडिग और निष्पक्ष होगा। वह किसी का पक्षपात नहीं करेगा। जो पाप था, वह पाप ही रहेगा। जो अच्छा था, उसकी वह प्रशंसा करेगा। इस न्यायी के सामने मनुष्यों को अपना पाप मानना होगा और वे उसे गहराई से पाप के रूप में अनुभव करेंगे। और न्यायी का निर्णय ग्रहण करेंगे।

न्यायी स्वयं मनुष्यों के पापों के लिए मरा है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। केवल हमारे ही नहीं, बल्कि सारे संसार के पापों का। इस न्याय में न्यायी हमारे विरुद्ध नहीं, वह हमारे पक्ष में है। उन सबके पक्ष में, जिन्होंने विश्वास किया। फिर भी, एक बात उस दिन उनके लिए गिनी नहीं जाएगी, जिन्होंने सुसमाचार सुना या पढ़ा है। अकेले हमारे अच्छे काम – यदि वे हैं – हमें नहीं बचाएँगे। यदि हम आशा करते हैं कि हम अच्छे मनुष्य थे, तो वहाँ एक समस्या है। जो इस पर, अपने अच्छे जीवन पर, भरोसा करता है, उसे तब परमेश्वर के मापदंड के अनुसार एक सिद्ध जीवन प्रस्तुत करना होगा। जो परमेश्वर की आज्ञाओं पर भरोसा करता है, उसे केवल एक का नहीं, बल्कि तब सबका पालन किया होना चाहिए। फिर भी, जो काम हमने किए, उनका बड़ा महत्व है, वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

परन्तु वहाँ क्या सहायता करेगा? किस बात पर सब निर्भर है?

प्रश्न यह होगा कि मसीह से, राजा से, हमारा क्या संबंध है। तटस्थता नहीं होती। यीशु स्वयं इसे इस प्रकार सटीक रूप से कहता है: जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है। दूसरे शब्दों में: अभी, न कि तब, यहीं और आज यह स्पष्ट करना है कि यीशु हमारे लिए कौन है। यह राजा हमारे पास नीचे उतर आता है और क्षमा देता है। यदि कोई राजा के अनुग्रह के प्रदर्शन के बारे में सुनता है और उसकी उपेक्षा कर देता है, तो वह उस दिन क्या कहेगा, जब सब कुछ सामने आ जाएगा? जब हमारे जीवन का सारा अन्यायपूर्ण, पापपूर्ण और स्वार्थी हमारे और राजा के बीच खड़ा होगा?

वहाँ ऐसे मनुष्य भी होंगे, जिन्होंने यीशु के बारे में कभी नहीं सुना और जो उसके समय से पहले जीवित थे। यीशु उनके साथ कैसा व्यवहार करेगा, यह मैं निश्चिंत होकर उसके ईश्वरीय अनुग्रह और न्याय पर छोड़ सकता हूँ। परन्तु वे, जिन्होंने उसके बारे में सुना, परन्तु सोचा कि यह सब महत्वहीन है या एक कथा है – उनका अंत अच्छा नहीं होगा।

यह राजा कितना ही अनुग्रहकारी क्यों न हो, वह किसी को अपनी सेवा करने के लिए विवश नहीं करेगा। जब बाइबल नरक की बात करती है, तो एक ऐसे स्थान के रूप में, जहाँ इस राजा की सेवा नहीं करनी पड़ती। परन्तु राजा तो कोई भी नहीं है। वह अल्फ़ा और ओमेगा है, आदि और अंत। वह सारे अस्तित्व का केंद्र है। सारे भले अस्तित्व का। उससे अलग होकर अस्तित्व कभी भला नहीं होगा। इसलिए, जो कर सकता है, वह आज अपना चुनाव करे।

क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा अगुवा, यहोवा हमारा राजा है। वही हमारा उद्धार करेगा।

यशायाह 33:22

उसकी प्रभुता बढ़ती ही जाएगी, और दाऊद की राजगद्दी पर और उसके राज्य में शान्ति का अंत न होगा; वह उसे न्याय और धार्मिकता के द्वारा स्थिर करेगा और सँभाले रहेगा, अब से सदा के लिए। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

यशायाह 9:7

भजन संहिता 36:6; 76:8; 89:14; सभोपदेशक 12:14; यशायाह 5:16; 9:7; दानिय्येल 7:10, 22; मलाकी 3:5; मत्ती 12:36; 25:31-46; लूका 20:47; यूहन्ना 5:22-30; रोमियों 2:5; 14:10-12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:12; इब्रानियों 9:27; 1 पतरस 4:17; प्रकाशितवाक्य 20:11-15।

36 अनन्त राजशासन

यीशु शासन करता है! यीशु के सब अनुयायी इसी पर भरोसा रखते हैं। परन्तु यह शासन कैसा दिखता है? संसार और उसका विकास, सरकारें क्या करती हैं, आपस में कैसा व्यवहार करती हैं, मसीही कैसे सताए जाते हैं, यह सब चलता रहता है। क्या वह अभी से शासन करता है या तभी, जब वह आ चुका होगा?

हमारे संसार में परमेश्वर के हस्तक्षेप को इन शब्दों से समझा जा सकता है: अभी से – पर अभी नहीं। दूसरे शब्दों में: पासा फेंका जा चुका है। गुलगुता की विजय डी-डे (D-Day) है, निर्णय का दिन। उस दिन को यही कहा जाता है, जब 6.6.1944 को मित्र-राष्ट्रों की सेनाएँ नॉर्मंडी में उतरीं। वह तीसरे राइख़ के अंत का आरंभ था। मनुष्यों और सृष्टि के लिए परमेश्वर का उद्धार यीशु ने यरूशलेम में उस गुड फ्राइडे को पूरा किया। वह इस नश्वर, घायल और मरनहार संसार के अंत का आरंभ है। जीवन की शत्रु अंधकार की शक्तियों के अंत का भी। अभी भी अंधकार की शक्तियाँ, पतित स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ, मनुष्यों को बहकाती और दास बनाती हैं और जहाँ भी हो सके, उनके उद्धार को रोकती हैं।

मनुष्यों और सृष्टि में छुटकारा पूरी तरह तब होगा, जब मसीह फिर आएगा। अभी हम एक बीच के समय में जी रहे हैं। डी-डे और वी-डे (V-Day) के बीच। विक्टरी डे (Victory Day), विजय का दिन, तब आएगा, जब सारी शत्रुता पर जय पा ली जाएगी। जब परमेश्वर की विजय का अंतिम शब्द होगा।

यीशु, मसीहा-राजा, अभी अपनी प्रजा में शासन करता है। सत्ता तो उसके पास सब मनुष्यों पर भी होती। विश्व-राजनीति पर। परन्तु उसका लक्ष्य संसार पर, जैसा वह अभी है, विश्व-शासन ग्रहण करना नहीं है। वह मनुष्यों को जीतना चाहता है, जो उसे पहचानें और स्वीकार करें।

उसके सब मनुष्यों को दिखाई देनेवाले आगमन के साथ नया विश्व-शासन आरंभ होता है। उसमें वे सब शामिल हैं, जो उसका आदर करते हैं और उसके शासन के लिए तैयार हैं। सब विश्व-साम्राज्य मिट जाते हैं, उसका सदा बना रहता है। जब वह आएगा, तब एक नया संसार, एक नया युग आरंभ होगा। क्या पुनःस्थापना की कोई प्रक्रिया होगी, या पुराने से नए में एक बहुत छोटा, आमूल परिवर्तन, यह हम अभी नहीं जानते।

वे आशा से भरी प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी, जिन्होंने अंधकार के दिनों में मनुष्यों को साहस दिया है:

“क्योंकि एक बालक उत्पन्न हुआ है, भावी राजा हमें दिया गया है! और ये वे सम्मान के नाम हैं, जो उसे दिए जाते हैं: विवेकी शासक, पराक्रमी वीर, अनन्त पिता, शान्ति का राजकुमार।

उसका सामर्थ्य दूर तक फैलेगा और स्थायी शान्ति आएगी। वह दाऊद के सिंहासन पर शासन करेगा और उसका राज्य सदा बना रहेगा, क्योंकि वह परमेश्वर की न्याय-व्यवस्था का पालन करता है। प्रभु

ने, संसार के शासक ने, ऐसा ठान लिया है और वह ऐसा करेगा।"

दाऊद का सिंहासन फिर से भर गया है! बाबेल की बंधुवाई के साथ राजसी उत्तराधिकार समाप्त हो गया था। इस्राएल में न सिंहासन था, न राजा। परन्तु राजा दाऊद से यह प्रतिज्ञा थी:

> "तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करूँगा, जो तेरे शरीर से उत्पन्न होगा, और उसके राज्य को स्थिर करूँगा। मेरे नाम का घर वही बनाएगा; और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा। मैं उसका पिता ठहरूँगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा!"

बारहों के लिए, प्रेरितों के लिए, मसीहा के स्वर्गारोहण के साथ यह स्पष्ट हो गया कि अब दाऊद का सिंहासन अनन्त प्रधान यीशु ने ग्रहण कर लिया है। परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह ठहराया है। दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा पूरी हो गई है। इस्राएल के लिए। अभी सब कुछ यरूशलेम और इस्राएल में होता है। दाऊद पर की अटल कृपा इस प्रजा की उचित अपेक्षाएँ हैं। परन्तु कुछ आश्चर्यजनक होता है। दाऊद का सिंहासन अब पार्थिव यरूशलेम में नहीं है। सिंहासन सारे अस्तित्व के हृदय में है, परमेश्वर के पास। यह अब किसी महा-इस्राएल की सीमाओं में कोई पार्थिव राज्य नहीं है। प्रेरित, पौलुस भी, समझ जाते हैं कि बात एक स्वर्गीय राज्य की है। एक ऐसा राज्य, जो केवल इस्राएल के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए है।

पहले पार्थिव आता है, फिर स्वर्गीय। दूसरा बड़ा और अधिक महिमामय है। एक नई पृथ्वी पर एक स्वर्गीय यरूशलेम सब विश्वासियों का घर बनेगा। यही दाऊद के पुत्र यीशु के अनन्त राजशासन का सार है। यहाँ दाऊद की प्रतिज्ञा की अप्रत्याशित और भिन्न प्रकार की पूर्ति में वृत्त पूरा होता है।

यीशु के इस सार्वभौमिक राजशासन को उसके अकल्पनीय विस्तार में हम अभी देख या अनुभव नहीं कर सकते। परन्तु एक दिन वह समय आएगा। जब उसका समय आ जाएगा। इसलिए जो हम अभी से विश्वास में, हृदय की आँखों से पहचानते हैं, वह यह है: यीशु, जो पार्थिव जीवन में मनुष्य के रूप में दीनता में जिया। जिसने सबके लिए मृत्यु सही और हमारे पाप के लिए बलिदान के रूप में हिंसक मृत्यु की सारी कड़वाहट चखी। हम सबके लिए। ताकि इस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह सारी सृष्टि को मिले। और इसलिए, क्योंकि उसने असंभव को किया, अपने आप को क्रूस पर चढ़ाए जाने दिया और मरा, वह अब परमेश्वर की महिमा और आदर से विभूषित है, हाँ, महिमा के विजय-मुकुट से मुकुटधारी है।

दाऊद के इस पुत्र के साथ पुरानी कालगणना समाप्त हो गई है। हम अपने राजा के पीछे उसके अनन्त राज्य में चलते हैं, जहाँ नए साहसिक अनुभव हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

> उसने उसे सामर्थ्य, आदर और प्रभुता दी, और सब जातियों, देशों और भाषाओं के लोग उसके अधीन हो गए। उसका सामर्थ्य अनन्त और अविनाशी है, उसका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा।
>
> दानिय्येल 7:14

तब प्रभु पृथ्वी की सब जातियों पर राजा होगा। उस दिन केवल वही परमेश्वर होगा, केवल उसी से जातियाँ प्रार्थना करेंगी।

जकर्याह 14:9

और स्वर्ग में बड़े-बड़े शब्द होने लगे, जो पुकार रहे थे: संसार का राजशासन अब पूरी तरह हमारे प्रभु और उसके मसीहा का हो गया है, और वह युगानुयुग राज्य करेगा!

प्रकाशितवाक्य 11:15

भजन संहिता 22:28; 45:6; 145:12-13; यशायाह 9:7; दानिय्येल 2:44; 4:3; 7:27; मत्ती 6:10; 25:34; लूका 1:33; प्रेरितों के काम 2:30; रोमियों 14:9; 1 कुरिन्थियों 15:24; इफिसियों 5:5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 2 तीमुथियुस 4:1, 18; प्रकाशितवाक्य 11:15; 12:10; 22:5।

37 राजा का अनुग्रह और उपहार

अनुग्रह शब्द हमारी बोलचाल में शायद ही आता है। हम और हमारी न्याय-व्यवस्था अधिकार पर ज़ोर देते हैं। अनुग्रह का अर्थ होगा, अपने अधिकार पर अड़े न रहना। हम समझना चाहते हैं कि प्राचीन काल में, यीशु और प्रेरितों के समय में, अनुग्रह और उपहार का क्या अर्थ था।

अनुग्रह और उपहार के लिए अलग-अलग शब्द हैं। परन्तु नए नियम में केंद्रीय शब्द यूनानी शब्द cháris है। इसके अर्थों का दायरा विस्तृत है: कृपा, अनुकंपा, सद्भाव और अनुग्रहपूर्ण देखभाल, और साथ ही इस कृपा और देखभाल का प्रदर्शन, जैसे अनुग्रह का कार्य, या दोनों शब्दों को जोड़कर, अनुग्रह का वरदान। उपकारियों के उपहार cháris के कार्य हैं।

प्राचीन काल में अनुग्रह या उपहार का एक ऐसा कार्य था, जो पूरे समाज में उसकी सब सामाजिक परतों तक व्याप्त था। उपहारों या उपकारों का आदान-प्रदान कभी बिना किसी छिपे उद्देश्य के नहीं होता था। यदि किसी को अपना व्यापार बढ़ाने के लिए पैसे की ज़रूरत होती, तो उसे केवल ब्याज ही नहीं चुकाना पड़ता था। किसी संरक्षक की कृपा एक परस्पर, परन्तु अनकहा दायित्व उत्पन्न करती थी। वह हर उस व्यक्ति को, जिसे कोई ऐसा अनुग्रह या उपहार मिला, जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं था, दाता और पानेवाले के संबंध में बाँध देती थी। शायद पानेवाला कभी बराबर मूल्य का उपहार लौटा नहीं सकता था, परन्तु कम से कम वह अवसर मिलने पर उसके पक्ष में अपना मत दे सकता था। हाँ, अनुग्रह और उपहार की यह पारस्परिक "व्यवस्था" अत्यंत भ्रष्ट थी। उपहारों से लोग अपने हितों के लिए दूसरों को खरीद लेते थे। और सब यह जानते थे।

एक बार फिर, आज हमारे लिए: अनुग्रह एक उपहार था, जिसे कोई अपनी इच्छा से दे सकता था। परन्तु पानेवाला इसके साथ एक दायित्व में बँध जाता था। दाता यह जानता था और फिर सोच सकता था कि बदले में कुछ माँगने का सही समय कब है। अनुग्रह या उपहार से एक प्रकार की निर्भरता का संबंध बनता था। थोड़ा-सा आज भी ऐसा ही है। यदि हमें कोई उपहार मिलता है, ऊपर से कोई विशेष उपहार, तो अगले अवसर पर हम भी कुछ उपहार में देंगे। हम इसके लिए एक प्रकार का दायित्व अनुभव करते हैं।

अब यीशु की बात करें। उसके बारे में पौलुस यह अकल्पनीय वचन कहता है:

> तुम तो जानते हो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह किस बात में प्रकट हुआ: वह धनी होकर भी कंगाल बना, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।

यीशु, ब्रह्मांड का राजा, जिसने सब कुछ को अस्तित्व में बुलाया, जिसका सब कुछ है, दो विवादास्पद काम करता है: वह सबको देता है। बिना भेदभाव के। और वह असाधारण उदारता से देता है। यह उस समय की

संस्कृति के अनुरूप नहीं था। आज की भी नहीं। स्वयं गरीब हो जाना और सब कुछ दे देना, ताकि दूसरे धनी हो जाएँ। यह हमें देना, यही अनुग्रह है। बिना योग्यता के। हमारी गरीबी ने उसके हृदय को द्रवित कर दिया।

प्राचीन काल में अनुग्रह का जो अर्थ था, उसका राजा यीशु के यहाँ भी एक अर्थ है। अपने उपहार के द्वारा वह एक संबंध बनाना चाहता है। ठीक यही वह अपने अनुग्रह से प्रकट करता है। बिना दबाव की संगति। एक ऐसी संगति, जिसमें हम कुछ लौटाते हैं। यह उससे बहुत कम है, जो हमें मिला है। परन्तु हमारा हृदय, हमारा जीवन उसका हो। हमारा मत उसे मिले। एक ऐसे संसार में, जो अधिकांश में अभी भी उसे ठुकराता है।

उसका अनुग्रह का वरदान हमें बहुत कुछ देता है। वह हमें धनी बनाना चाहता था और ऐसा ही हुआ। यहाँ उसका केवल एक छोटा-सा अंश है, जो हमें उपहार में मिला और हर उस व्यक्ति को मिलता है, जो इस राजा को ग्रहण करता है: क्षमा, निर्दोष ठहराया जाना, छुटकारा, अनन्त जीवन, बंधन से मुक्ति, पवित्रीकरण और स्वतंत्रता।

हमारा उत्तर यह है कि हम इसके सिवा कुछ नहीं कर सकते कि अपना जीवन उसे सौंप दें। उसे उसके लिए समर्पित कर दें। हर दिन नए सिरे से।

अनुग्रह का वरदान शब्द नए नियम में, यह केवल पूरक बात के रूप में, कलीसिया के भीतर उन योग्यताओं का वर्णन करने के लिए प्रयोग होता है, जो पवित्र आत्मा देता है। अलौकिक वरदान जैसे शिक्षा देना, चंगाई, भविष्यद्वाणी और अन्य भाषाएँ बोलना, आश्चर्यकर्म करना और आत्माओं की परख। वे इसलिए दिए गए हैं कि परमेश्वर के राज्य के लिए उनका प्रयोग किया जाए।

क्योंकि परमेश्वर का उद्धार देनेवाला अनुग्रह प्रकट हुआ है, और वह सब मनुष्यों के लिए है।

तीतुस 2:11

यूहन्ना 1:14, 16-17; रोमियों 3:24; 5:15-16; 6:23; 12:1-3; 11:29; 1 कुरिन्थियों 12:4-11; 2 कुरिन्थियों 6:1; 8:9; इफिसियों 2:5; 2 तीमुथियुस 1:9; तीतुस 2:11; 3:7; इब्रानियों 2:9।

38 राजा की दुल्हन

ऐसा राजा, जिसके पास सब कुछ है और जो सब पर शासन करता है, किसमें रुचि रखता है? उसके हृदय को क्या आकर्षित कर सकता है? कौन उसे कुछ दे सकता है? उसके लिए क्या इतना आकर्षक और प्रेम करने योग्य हो सकता है कि वह उसे पाने के लिए निकल पड़े?

बाइबल परमेश्वर का वर्णन दूल्हे के रूप में करती है। यह असाधारण है, क्योंकि इसका अर्थ है कि उसने एक दुल्हन की कामना की। दूल्हे के रूप में परमेश्वर यह दर्शाता है कि वह अकेला नहीं रहना चाहता, बल्कि संगति खोजता है।

उसने स्वयं पुरुष और स्त्री को अपने स्वरूप में रचा। दोनों को एक तन होना था और एक अटूट एकता और प्रेम की संगति बनानी थी। और हम मनुष्य इसे ऐसे ही अनुभव करते हैं, सब नहीं, परन्तु बहुत से। और इस प्रकार हम परमेश्वर और उसकी पत्नी के संबंध के बारे में एक-आध निष्कर्ष निकालने का साहस कर सकते हैं। पुरानी वाचा में परमेश्वर यहोवा ने इस्राएल के साथ विवाह का संबंध बाँधा। दुल्हन एक व्यक्ति नहीं, बल्कि बहुत से व्यक्तियों की समग्रता है।

नई वाचा में दुल्हन कोई एक जाति नहीं है। दुल्हन अब सब जातियों और राष्ट्रों में से इकट्ठी एक सभा है। प्रियतमा दूल्हे की तरह एक व्यक्ति नहीं है। दुल्हन यीशु के सब अनुयायियों का एक रूपक है। उसी प्रकार उन सब विश्वासियों का भी, जो यीशु के आने से पहले जीवित थे। अर्थात उन सब मनुष्यों का पूरा और इकट्ठा समूह, जो यीशु से, राजा और दूल्हे से, प्रेम करते हैं। दुल्हन और दूल्हे की इस तुलना से बढ़कर कौन-सी तुलना प्रेम का वर्णन कर सकती है?

इस दुल्हन को पाने के लिए, उसका हृदय जीतने के लिए, उसने अपना प्रेम प्रमाणित किया है। उसने उसके लिए अपने आप को दे दिया, गुलगुता के क्रूस की मृत्यु तक। उसने कोई संदेह नहीं उठने दिया कि वह इसके प्रति गंभीर है या नहीं। वह उसे हर हाल में पाना चाहता था, अपने जीवन के मूल्य पर।

राजा को हममें इतना आकर्षक क्या लगता है? प्राचीन काल में राजा अपने दर्जे के अनुसार विवाह करते थे। आज भी ऐसा ही है। परन्तु अपवाद ही सनसनीखेज़ होते हैं। जब कोई राजा किसी साधारण स्त्री को, या किसी दासी को भी, पत्नी बना लेता है। हम प्रेम करने योग्य नहीं थे। हमने परमेश्वर और उसके पुत्र में रुचि नहीं ली। हमने परमेश्वर के शत्रुओं जैसा व्यवहार किया। हमारी कहानी समझ से परे है। उसने हममें कुछ ऐसा देखा, जिसके लिए मरना सार्थक था। इस जोखिम के साथ मरना कि हम उसके प्रेम का उत्तर न दें और उसे ठुकरा दें।

बहुत से लोग आज ही इस दुल्हन का भाग हैं। परन्तु बहुतों की वह अभी भी प्रतीक्षा कर रहा है।

वह सचमुच एक आदर्श दूल्हा और पति है। वह अपनी दुल्हन की देखभाल करता है। वह एक दास की तरह व्यवहार करता है और उसे धोता है, ताकि वह शुद्ध और सिद्ध हो। यह चित्र-भाषा स्पष्ट करती है कि यह प्रेम-संबंध सच्चा है और बना रहेगा। यह संबंध इतना घनिष्ठ है कि जैसे आरंभ में आदम और हव्वा, वैसे ही मसीह और कलीसिया भी एक तन हैं। वह सिर है, जो प्रेम करता है और देखभाल करता है, और वह देह है, उसकी देह (शरीर)। मिलकर वे एक मनुष्य बनाते हैं। यह देह वह है, जिसकी मसीह में कमी थी और जो अब उसे सदा के लिए पूर्ण बनाती है। यह सब चित्र-भाषा है, परन्तु सटीक रूप से कहती है कि मसीह का प्रेम कितना महान, कितना गहरा और सच्चा और दृढ़-संकल्प है। ऐसे दूल्हे से प्रेम करना, उसके पास अपने आप को सुरक्षित जानना, कठिन नहीं हो सकता।

दुल्हन एक दिन, जब उत्सव आरंभ होगा, अपना विवाह का वस्त्र पहनेगी। रोचक बात यह है कि वह उन भले कामों से बना होगा, जो मसीही लोगों ने अपने जीवन में किए हैं। इस प्रकार यह वस्त्र बन रहा है, और सब इस पर मिलकर काम कर रहे हैं।

भजन संहिता 45 में राजा के विवाह-गीत से:

मेरा हृदय भले वचनों से उमड़ रहा है! हाँ, अपनी रचनाएँ मैं राजा को समर्पित करता हूँ।

और राजा तेरे सौंदर्य की चाह करेगा, क्योंकि वह तेरा प्रभु है: इसलिए उसे दण्डवत कर!

भजन संहिता 45:1, 11

भजन संहिता 45; यशायाह 61:10; 62:5; मत्ती 22:2-12; मरकुस 2:19-20; यूहन्ना 3:29; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 3:18-19; 5:25-30; प्रकाशितवाक्य 19:7-9; 21:2, 9, 17।

39 राजा का विवाह-उत्सव

मुझे विवाह बहुत अच्छे लगते हैं। विशेषकर वसंत और गर्मियों में, जब मौसम गर्म होता है। जब वातावरण मस्ती से भरा होता है और आनंद साँझ की हवा में भर जाता है। विशेषकर तब, जब मैं बस एक अतिथि हूँ, जिसे केवल उत्सव मनाना, खाना, पीना, बातें करना और हँसना है। दूल्हा-दुल्हन ने इस दिन की लंबे समय से लालसा की है। जब वह आ जाता है, तो अपनी सारी सुंदरता के कारण जल्दी बीत जाता है। मन करता है कि उसे थामे रहें, उत्सव मनाते रहें और केवल उसकी याद का आनंद न लें।

राजा, जिसके बारे में हम बहुत कुछ सुन चुके हैं, वह भी एक विवाह-उत्सव की प्रतीक्षा कर रहा है। और जितना महान और महिमामय राजा है, उतना ही महान और महिमामय विवाह होगा। मानो एक ब्रह्मांडीय उत्सव। जब राजा अपनी दुल्हन को ग्रहण करता है, तो स्वर्ग साँस थाम लेता है। उन सब (राजसी) विवाहों को भूल जाइए, जिन्हें आपने अब तक देखा है या टेलीविज़न पर देखा है। मिनास तिरिथ (Minas Tirith) के पहाड़ी किले पर अरागॉर्न (Aragorn) और आर्वेन (Arwen) के विवाह को भी। उसे एक फ़िल्मी दृश्य में दिखाया गया है, जो मेरे लिए अविस्मरणीय है। जब मैं भविष्य के बारे में सोचता हूँ, तो वह मुझे थोड़ा-सा प्रेरित करता है।

हाँ, यहाँ सबसे गहरी भावना की आशा की जा सकती है। यहाँ प्रेम की आग जलती है। यहाँ दोनों अपने चारों ओर के संसार को भूल जाते हैं। क्योंकि अब आखिरकार वह आ गया है, उत्सव। प्रतीक्षा समाप्त हुई।

इस विवाह की शर्त यह होगी कि सर्वशक्तिमान ने विश्वव्यापी शासन ग्रहण कर लिया हो। सारी शत्रुता समाप्त हो चुकी है। कोई भी बात इस विवाह को कभी बाधित या संकट में नहीं डाल सकेगी। विवाह-भोज का समय और स्थान स्वतंत्र रूप से चुना जा सकता है। कोई स्थान बहुत महँगा नहीं। नहीं, कुछ भी पर्याप्त अच्छा नहीं होगा।

कल्पना कीजिए, एक आनंद भरा उत्सव, अरबों लोगों के साथ एक पार्टी, जो जी भरकर उत्सव मनाते हैं। बिना थके। मुझसे मत पूछिए कि यह कैसे संभव होगा। इसकी मैं चिंता नहीं करता। जो आमंत्रित करता है, वह सर्वशक्तिमान है, सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता। इस उत्सव में हम देखेंगे कि वही आनंद, उत्सव और जयजयकार का आविष्कारक है।



नई बनाई गई पृथ्वी स्थान होगी। अपनी सारी सुंदरता में, जैसी हम उसे अभी से जानते हैं। परन्तु अब पूरी तरह नवीनीकृत और सुधारी हुई। नई बनाई हुई। फिर और भी सुंदर बनाई हुई, क्योंकि हम उसके लिए इतने मूल्यवान हैं। वह इस उत्सव के लिए स्थान तैयार करता है। वह सब कुछ शुद्ध करता है और सब कुछ सजाता है, अपने ढंग से, जिसमें उसका प्रेम दिखाई देता है।

बाइबल इस भावी उत्सव का वर्णन एक से अधिक बार करती है। मैंने ध्यान दिया कि मैं इस उत्सव का कोई अंत नहीं खोज पाया। इतना निश्चित है कि यह उत्सव एक दिन के बाद, या जैसे मध्य-पूर्व में होता है, एक सप्ताह के बाद समाप्त नहीं होता। तब समय महत्वपूर्ण नहीं रहता।

एक और दृष्टांत में यीशु इस विवाह-उत्सव की बात करता है। बहुत से लोग आमंत्रित हैं। परन्तु विवाह के वस्त्र की ज़रूरत है। उसके बिना कोई जल्दी पहचान में आ जाता है और बाहर निकाल दिया जाता है। विवाह का वस्त्र कैसे मिलता है? चित्र-भाषा में बाइबल का एक वचन कहता है: "उन्होंने – उत्सव के अतिथियों ने – अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं।"

हमारा वस्त्र, जिससे चित्र-भाषा में हमारा पूरा जीवन अभिप्रेत है, कई स्थानों पर काफ़ी मैला है, राजा के विवाह-उत्सव के प्रकाश और महिमा के लिए अनुपयुक्त। परन्तु वह हमारे लिए मरा, ताकि हम अपने पापों से छूट जाएँ। ताकि हमें शुद्ध करे, जैसे वह स्वयं शुद्ध है। दुल्हन और दूल्हा चमकते हुए श्वेत में दमकते हैं। इस उत्सव में कुछ भी हमारे अंधकारमय और संदिग्ध अतीत की याद नहीं दिलाता। केवल दूल्हे के घावों के निशान, हाथों और पैरों में और उसकी पसली में। उसके प्रेम के ये प्रमाण एक अनन्त स्मृति बने रहते हैं।

सच यह है कि राजा आज और अभी वास्तव में भावी विवाह-उत्सव के लिए आमंत्रित कर रहा है। उसने अपने लोगों को आमंत्रित करने के लिए भेजा है। और वह भी सबको, बिना किसी पक्षपात या लाभ के। सबको, गरीबों और धनियों को, बलवानों और निर्बलों को, अकेले लोगों और मिलनसार लोगों को, रोगियों को, पापियों को, निराश लोगों को, भुलाए हुए लोगों को, जो अपने जीवन पर पीछे दृष्टि डालते हैं और उसमें कुछ भी या बहुत कम भलाई पा सकते हैं।

जैसे कोई युवक अपनी प्रेमिका से विवाह करता है, वैसे ही तेरा सृष्टिकर्ता सदा के लिए तुझसे जुड़ जाएगा। जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन से आनंदित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तुझसे आनंदित होगा।

यशायाह 62:5

यशायाह 61:10; 62:5; मत्ती 22:2-12; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:25-30; प्रकाशितवाक्य 19:7-9; 21:2, 9, 17।

(गीत अपने मूल जर्मन पाठ में)

You’re my friend

And You are my brother

Even though You are a King

I love You more than any other

So much more than anything

Du bist mein Freund

Und Du bist mein Bruder

Obwohl Du ein König bist

Ich liebe Dich mehr als jeden anderen

So viel mehr als alles andere

Du, o Herr, bist mein Freund und Bruder, du mein König und mein Gott!

Dich begehre ich mehr als alles, so viel mehr als höchstes Gut.

40 वे पृथ्वी पर शासन करेंगे

इस पुस्तक में बात राजाओं के राजा की थी। पहले हम मनुष्यों की नहीं। परन्तु इन्हें एक-दूसरे से अलग करना कठिन है। क्या आपको पुस्तक का आरंभ याद है? हाँ, परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप में रचा, ताकि वे पृथ्वी पर शासन करें। परन्तु यह सब पूरी तरह विफल हो गया। आज भी। सच्चा राजा हमें खंडहरों, टुकड़ों और धूल से उठाने आया। और हमें फिर से राजाओं के रूप में ठहराने। यह अविश्वसनीय है, परन्तु सच है। परमेश्वर हमारे साथ अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। उन सबके साथ, जो उसके पास आते हैं। जो मान लेते हैं कि उन्हें क्षमा, उद्धार और चंगाई की ज़रूरत है।

परमेश्वर हमें अपने राजाओं के रूप में राजाओं के राजा, अपने पुत्र, के साथ एक करना चाहता है। इसके लिए उसने बड़ा मूल्य चुकाना उचित समझा:

> ... और यीशु मसीह की ओर से, जो सच्चाई का विश्वसनीय गवाह है, जो मरे हुओं में से सबसे पहले जी उठा और अब पृथ्वी के सब राजाओं पर शासन करता है।
>
> उसको, जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें हमारे पापों से छुड़ाया है, उसको, जिसने हमें सह-शासक, अपने राज्य में राजा और याजक अपने परमेश्वर और पिता के लिए बनाया है,
>
> उसी की महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग रहे।

इस प्रकार यीशु को माननेवाले अपने राजा की अगुवाई में अनन्तता में जाएँगे। वे चकित होंगे। यह उससे कहीं अच्छा, अधिक समृद्ध और अधिक आनंदमय है, जितना उन्होंने सपना देखा था। यीशु के पीछे चलना इसके योग्य था। उनकी विश्वासयोग्यता और निष्ठा का प्रतिफल मिलता है। फिर भी: उनका अनन्त सुख बिना योग्यता के मिला है और ऐसा ही रहेगा। यह सुख सबके लिए खुला है।

परन्तु अंत तक पहुँचने से पहले, यह भी: यीशु के लोग अभी से राजा और याजक हैं! परन्तु वे कैसे शासन करते हैं? क्या संसार की घटनाओं पर उनका प्रभाव है? या क्या उन्हें इसका प्रयत्न करना चाहिए?

उनके व्यक्तिगत जीवन के लिए यह विचित्र वचन लागू होता है कि वे अपने स्वयं के, व्यक्तिगत जीवन में राजाओं के रूप में शासन करते हैं। पाप शत्रु है। पाप एक विनाशकारी शक्ति के रूप में, जो हर जीवन को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता है, ताकि उस पर अधिकार करे, उसे परमेश्वर से अलग करे, उस पर बोझ डाले। परन्तु यह शक्ति उस राजा की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा टूट चुकी है, जिसके हम हैं। पाप को हम पर शासन करने की ज़रूरत नहीं, हम उस पर प्रभुता कर सकते हैं और हमें करनी चाहिए, उससे स्थान और अवसर छीन लें, उसे फैलने न दें। परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर जीवित सामर्थ्य है।

जब यह सफल होता है, तो इसका हमारे परिवेश पर एक प्रभाव, एक असर पड़ता है। राजाओं के रूप में हम राजनीतिक सत्ता नहीं पकड़ते। परन्तु जहाँ अन्याय होता है, वहाँ हम उसे वैसा ही कहते हैं, जैसा वह है। और जहाँ संभव हो, उसे रोकते हैं। हम भुलाए हुए और दबाए हुए लोगों के, भूखे और निराश लोगों के पक्ष में खड़े होते हैं, ठीक वैसे, जैसे मसीहा ने अपने जीवन में किया।

राजसी याजकों के रूप में संसार और संसार की घटनाओं पर हमारा प्रभाव एक ऐसे रूप में है, जिसे षड्यंत्र कहा जा सकता है। एक गुप्त षड्यंत्र! एक अहिंसक साज़िश। तख्ता पलटने के लिए नहीं, बल्कि सफलता के लिए और संसार में अन्याय, भूख और सूखे को पीछे धकेलने के लिए। इसके लिए और इसके विरुद्ध मसीही अपने राजा के पास विनती कर सकते हैं। प्रार्थना, मध्यस्थता की प्रार्थना, एक प्रकार का शासन है, जो अदृश्य है, परन्तु वहाँ दिखाई देता है, जहाँ राजा प्रार्थना सुनता है। जो इसका अभ्यास करता है, वह भविष्य के प्रशिक्षण-कार्यक्रम में है, जब यीशु और हम उसके साथ शासन करेंगे।

यीशु के अनुयायी अभिषिक्त याजक भी हैं। आशीष देने के लिए बुलाए गए। राजसी याजकों के रूप में। वे परमेश्वर की आशीष संसार में लाते हैं। सब मनुष्यों के लिए। वे राजा के नाम से आशीष देते हैं और प्रार्थना में उसका नाम मनुष्यों पर रखते हैं। वे दूसरों से और दूसरों के बारे में केवल अच्छी बातें ही नहीं कहते, बल्कि उन पर परमेश्वर का अनुग्रह लाते हैं। पशुओं पर भी, घरों पर, परिवारों पर, सरकारों पर। बस हर उस चीज़ पर, जिसे अनुग्रह और आशीष की ज़रूरत है। आशीष देने के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति वास्तविक, अनुभव करने योग्य और दृश्य बन सकती है। प्रेम, पवित्रता, चंगाई, सफलता, उद्धार और छुटकारे में।

परन्तु प्रार्थना और मध्यस्थता और आशीष देना कोई बहाना नहीं है कि जहाँ संभव और आवश्यक हो, वहाँ सक्रिय होकर और मौके पर परिश्रम के साथ अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध खड़े न हों।

और किसी भी परिस्थिति में अंधकार से उत्पन्न किसी भी ऐसे काम में भाग न लो, जो इसलिए कोई अच्छा फल नहीं लाता। बल्कि ऐसे कामों का भंडाफोड़ करो!

इफिसियों 5:11

रोमियों 5:17; 1 तीमुथियुस 2:1-7; 2 तीमुथियुस 2:12; 1 पतरस 2:5-9; प्रकाशितवाक्य 1:5-7; 5:9-10; 22:5।

अंत में एक बार फिर यीशु के बारे में, जो राजा है: वह मनुष्यों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि शासक है।

यीशु यहूदियों के राजा के रूप में जन्मा; मत्ती 2:2।

यीशु ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया; मत्ती 4:17, 23; 12:28।

यीशु ने दृश्य और अदृश्य संसार पर अपने शासन के दावे का प्रदर्शन किया, यद्यपि उसने उसे अभी अंतिम रूप से साकार नहीं किया; मत्ती 12:28; लूका 19:38; यूहन्ना 1:49; परन्तु यह भी: 6:15।

यीशु अपनी कलीसिया पर शासन करता है और उसे सेवा के लिए अधिकार देता है; मत्ती 28:18; इफिसियों 1:19-22।

यीशु दाऊद के राज्य को फिर से खड़ा करता है; प्रेरितों के काम 15:15-17; आमोस 9:11-12।

यीशु विजयी, सार्वभौमिक राजा के रूप में फिर आता है; 1 कुरिन्थियों 15:25।

उसके पास सारा अधिकार है (मत्ती 28:18); वह एक अदृश्य, आत्मिक राज्य पर शासन करता है (यूहन्ना 18:36-37) और बाद में दृश्य रूप में सारी पृथ्वी पर शासन करेगा: भजन संहिता 66:4; 72:16-19; यशायाह 2:2; दानिय्येल 7:13-14, 18, 22, 27; इब्रानियों 10:13; प्रकाशितवाक्य 15:4।

Oh, if there's only one song I can sing, When in His beauty I see the great King, This shall my song in eternity be, "Oh, what a wonder that Jesus loves me!"

ओह, यदि केवल एक ही गीत होता, जिसे मैं गा सकूँ, जब मैं महान राजा को उसकी सुंदरता में देखूँ, तो सारी अनन्तता के लिए मेरा गीत यही हो, "ओह, कैसा आश्चर्य है कि यीशु मुझसे प्रेम करता है!"

लेखक की अन्य पुस्तकें

Und die Toten leben doch (फिर भी मृतक जीवित हैं), बीलेफ़ेल्ड, 1992

Seitenwechsel – Von Adam zu Christus (पक्ष परिवर्तन – आदम से मसीह तक), बीलेफ़ेल्ड, 2011

Entrückung, Himmel, Ewigkeit – Ein neuer Blick auf alte Themen (उठा लिया जाना, स्वर्ग, अनन्तता – पुराने विषयों पर एक नई दृष्टि), न्यूरेमबर्ग, 2015

Gottes Lamm, Golgota und die Ewigkeit (परमेश्वर का मेम्ना, गुलगुता और अनन्तता), वुप्पर्टाल, 2015

Fantastische Himmelwelt, Lehre und Leben der Himmelwelt im Epheserbrief (अद्भुत स्वर्गीय संसार, इफिसियों की पत्री में स्वर्गीय संसार की शिक्षा और जीवन), न्यूरेमबर्ग, 2016

Gott spricht, Eine erklärende Übertragung der allgemeinen Briefe und der Offenbarung (परमेश्वर बोलता है, सामान्य पत्रियों और प्रकाशितवाक्य का एक व्याख्यात्मक अनुवाद), ज़ुल्त्सबर्ग, 2017

Epheser, nacherzählt, erklärt für heute (इफिसियों – पुनर्कथित, आज के लिए व्याख्यायित), ज़ुल्त्सबर्ग, 2018

God’s good Gospel, Gottes gutes Evangelium (परमेश्वर का शुभ सुसमाचार), ज़ुल्त्सबर्ग, 2019

Markus, nacherzählt, erklärt für heute (मरकुस – पुनर्कथित, आज के लिए व्याख्यायित), ज़ुल्त्सबर्ग, 2019

Galater, nacherzählt, erklärt für heute (गलातियों – पुनर्कथित, आज के लिए व्याख्यायित), ज़ुल्त्सबर्ग, 2020

Die Briefe des Johannes, nacherzählt, erklärt für heute (यूहन्ना की पत्रियाँ – पुनर्कथित, आज के लिए व्याख्यायित), ज़ुल्त्सबर्ग, 2020

Frauen, vergebt uns! – Die Rolle von Frau und Mann (स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए! – स्त्री और पुरुष की भूमिका), ज़ुल्त्सबर्ग, 2020

Frauen, vergebt uns! – Mann und Frau in Ehe und Gemeinde, Kurzversion (स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए! – विवाह और कलीसिया में पुरुष और स्त्री, संक्षिप्त संस्करण), आउग्सबर्ग, 2022

और पाठ: www.hans-joerg-ronsdorf.de

पुस्तकें लेखक से या पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्त की जा सकती हैं, बहुत सी Amazon पर ई-बुक के रूप में भी।

hj-ronsdorf@t-online.de या 08376 929643